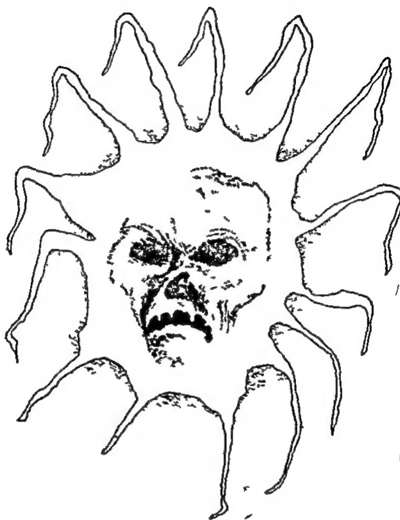
आधुनिक
विज्ञान कथाए



आधुनिक विज्ञान कथाएं

राजीव रंजन उपाध्याय

ग्रंथ अकादमी नई दिल्ली

प्रकाशक ग्रंथ अकादमी 1686 पुराना दरियागंज, नई दिल्ली 110002
संस्करण प्रथम, 1991

मूल्य पचास रुपए

AADHUNIK VIGYAN KATHAYEN (Science Fiction)
Dr Rajiv Ranjan Upadhyaya Rs 50.00



स्कृत-विद्यानुरागी, देवभाषा के प्रकाण्ड विद्वान, ब्राह्मण संस्कृत वैदिक विद्यालय
सरयूबाग, अयोध्या, सनातन धर्म पाठशाला—लाल डिग्गी, मीरजापुर, ब्राह्मण
वैदिक विद्यालय—महदावन—बस्ती, एवं ब्राह्मण वैदिक पाठशाला—
झूसी—प्रयाग के संस्थापक, आजीवन इन संस्थाओं को धन दान
करने वाले, स्वामी दयानन्द सरस्वती के मित्र, मीरजापुर
के प्रतिष्ठित जमींदार एवं रईस वृद्ध—प्रपितामह
राजर्षि उपाध्याय चौधरी गुरु चरण लाल जी
(1839 1917) के श्रीचरणों में
सादर समर्पित

पुरोवाक्

वैज्ञानिक कथाओं का सकलन 'आधुनिक विज्ञान कथाएं' आपके सम्मुख है। इन कथाओं की पृष्ठभूमि भारत नहीं है। इस कारण इन्हें भारतीय परिवेश में तौलने का प्रयास कुछ अटपटा-सा लगेगा। इसके पूर्व कि आप इन कथाओं का आनंद लें, मैं इनकी उत्पत्ति एवं प्रेरणाओं के विषय में कुछ बताना चाहूंगा।

जमींदारी उन्मूलन के समय मेरी आयु करीब आठ वर्ष की रही होगी। उस समय पढ़ने के अतिरिक्त समवयस्कों के साथ धनुष-तीर चलाना, निशानेबाजी करना, घुड़सवारी करना और खूब खेलना अति प्रिय था। जब मैं हाईस्कूल की परीक्षा में उत्तीर्ण हुआ तो पितामह उपाध्याय चौधरी प्रभाकरेश्वर प्रसाद जी ने मुझे संस्कृत और अंग्रेजी की गहन शिक्षा के साथ साथ बंदूक चलाना भी सिखाया। बस, यहीं से मेरे जीवन में मूलभूत परिवर्तन हुआ।

बंदूक और अनुचरों को साथ लेकर मैं अपने पैतृक ग्राम शीतलगंज ग्रांट (जो जनपद गोंडा में स्थित है) के पास बहती सरिता मनोरमा के तटवर्ती घने जंगलों में शिकार हेतु घंटों घूमा हूं।

जाड़ों में 'मुक्तागंज' पर बैठकर अनेक वर्षों तक 'बड़उर' झील में बत्तखों का शिकार किया है और रात्रि में अलाव तापते सिपाहियों द्वारा सुनाई गई कहानियों ने मेरे मन को अनेकानेक उत्सुकताओं से भर दिया था।

संभवत यहीं से मुझमें मानव की प्रवृत्तियों को एवं प्रकृति के रहस्यों

को जानने की जिज्ञासा का उदय हुआ। परिणाम था विज्ञान के अध्ययन की ओर झुकाव।

शिक्षापूर्ति पर जब काशी हिंदू विश्वविद्यालय में विद्यादान हेतु नियुक्ति हुई तो मेरा भ्रमणशील-अन्वेषणप्रिय शिकारी मन वहां रमने को तैयार न हुआ। परिणामत मैं ट्रोंधाइम नॉरवे के शोध संस्थान में जा पहुंचा। सप्ताहांत में वहीं ट्रोंधाइम के जंगलों, समुद्र और उसके विश्व प्रसिद्ध फ्योरडों' में घूमने और शिकार करने का अवसर अपने नारवेजियन मित्रों के साथ मिलता रहा। इन्हीं शिकार-यात्राओं के दौरान ट्रोंधाइम में पोस्टऑफिस वाली लड़की ने 'यूक्का' की कथा सुनाई थी। इसे मैंने कुछ काट छांटकर आपके सम्मुख प्रस्तुत कर दिया है।

ट्रोंधाइम के समुद्र-तट से करीब दो किलोमीटर की दूरी पर, ऊंची चट्टानों पर स्थित—चारों ओर समुद्र से घिरा एक किला है जिसे मुक-होल्मेन' कहते हैं। कभी यह किला समुद्री डाकुओं—'वाईकिंग' लोगों का विश्रामस्थल था पर आज यह विख्यात टूरिस्टस्थल है।

नारवे में जून से सितंबर मास तक सूर्य दिन रात चमकता रहता है। अर्ध-रात्रि के सूर्य की किरणें चांद की शीतलता का भास कराती हैं। यह नॉरवेवासियों के लिए ग्रीष्म ऋतु होती है। इसी मौसम से जुड़ी कथा है 'आधी रात का सूर्य', तथा अपराध विशेषज्ञ वैज्ञानिक सूक्ष्मातिसूक्ष्म तथ्यों का सहारा लेकर विज्ञान की नवीन विधियों द्वारा क्रूर कर्मियों को पकड़ लेता है। यही इस कथा का तत्व है।

द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान जर्मनी का हाइडिलबर्ग' मात्र एक ऐसा नगर था जो बमबारी में ध्वस्त नहीं किया गया था। इसी कारण आज भी यह नगर अपनी प्राचीन गरिमा को समेटे शिक्षा का, विशेष कर कैंसर शोध का, विश्वविख्यात केंद्र है। 'अतिमानव' 'आक्सीजन-मास्क एवं विमान' नामक कथाएं इस देश से संबंधित हैं।

ज्ञान की पिपासा को शांत करने तथा ज्ञान और विज्ञान को और परिष्कृत करने हेतु इजरायल के विश्वविख्यात केंद्र 'वाइजमान—इंस्टीटयूट आफ साइंस', जोकि तेलअबीब से थोड़ी दूर स्थित 'रिहोवाथ' नामक स्थान पर है, में भी मैं रहा हूं।

छोटे से देश इजरायल की प्राचीन सस्कृति के चिह्नो, स्मारको, चर्चो और मसजिदो को अच्छी तरह से देखा है। तेलअबीब और जेरुशलोम की गलिया उसी भाति आज भी परिचित हैं जस अपने शहर की गलिया। यही पर रहते हुए मुझे इजरायल मे बस रहे अनेक भाषाभाषी यहूदी लोगो से मिलने का अवसर मिला है। 'विष कन्या', 'नशालु', 'नारगी' तथा 'एपार्थिड' नामक कथाए इजरायल और उसके वासियो से जुडी हैं।

अग्निगर्भा अजरबेजान प्रात जोकि ईरान के उत्तर मे स्थित है, पुराकाल से ही अग्नि पूजको का क्षेत्र रहा है। इस प्रात की राजधानी तबरीज है, जो अपनी सुदर स्त्रियो और उत्तम भोजन के लिए विख्यात है। यह मेरा प्रिय शहर है। इसी शहर के जीवन के कटु सत्यो स परोक्ष मे जुडी हैं 'सूप' 'दोल्मे' तथा 'एडस की छाया मे' नामक कथाए।

पेरिस हर सौदय प्रेमी की भाति ही मुझे भी प्रिय है। यह फ्राम का सब सुदर शहर है। इस सौंदय-केंद्र स यूरोप की सभ्यता जुडी है। यही पर 1984 मे मैं बीमार हुआ था और चिकित्सालय मे करीब दो सप्ताह रहा। वहा पर बीमारी की हालत मे, भाषा स अनभिज्ञ, जर्मन भाषा के सहारे कुछ काम की बातें कर लेता था। यह इस कारण था कि फ्रेंच लोग अग्रेजी जानते हुए भी उसका प्रयोग नही करते। अत एकाकी पडे पडे सजनशील मन व्याकुल रहता था। इस व्याकुलता को दूर करने के लिए वही चिकित्सालय के पलग पर लेटे लेटे इन वैज्ञानिक कथाओ का सृजन प्रारभ किया था। परिस की आनदमयी, सुखद तथा कुछ दुखद स्मतियो से गुम्फित हैं 'अफ्रीका का वाइरस', 'एक्स रे' एव 'फोबोस'।

कसर की अतरराष्ट्रीय काग्रेस ब्यूनेस एयरस अर्जेंटीना म हुई थी। इसके समापन पर ब्राजील, चिली आदि देशो की यात्राए की। मित्रो के सहयोग से दक्षिण अमेरिका के 'रेड इडियनो' के विषय मे जानने को मिला। इनकी गाथाए सुनी और पढी भी। इन्ही सब तथ्यो को 'परा-मानव' मे पिरो दिया है मैंने।

विज्ञान के विकास की गति अति तीव्र है। परिणामस्वरूप प्रतिदिन कोई नया आविष्कार चाहे वह मानव-कल्याण अथवा विनाश के लिए ही क्यो न हो, आ जाता है। विज्ञान को जन-कल्याणकारी बनाने मे भारत

का भी योगदान रहा है। पर यह योगदान प्रभावी नहीं है। कारण है—भूतकाल की मान्यताओं और अंधविश्वासों से जकड़ा, देवी-देवताओं, बाबाओं, ज्योतिषियों तान्त्रिकों, फकीरों, पीरों और पादरियों से मिन्नतें मांगता, लड़खड़ाता 21वीं शताब्दी की ओर अग्रसर होता हमारा समाज। भारतीय वैज्ञानिक भी इन मान्यताओं से, जड़ताओं से मुक्त नहीं हैं।

यही कारण है कि भारत जैसे विकासशील देश में वैज्ञानिक साहित्य का सृजन न के बराबर है। आज व्यक्ति का दृष्टिकोण, उसका वैज्ञानिक ज्ञान सिर्फ कुछ दैनिक उपयोगी वस्तुओं तक ही सीमित है। उसकी तर्क शक्ति विज्ञान मय नहीं हुई है। इस कारण आवश्यक है वैज्ञानिक साहित्य का सृजन, जो व्यक्ति के, समाज के दृष्टिकोण को बदलने में सहायक हो।

हो सकता है, प्रपितामह उपाध्याय चौधरी बदरी नारायण 'प्रेमघन' जी के साहित्य की 'जीन्स' जो सूक्ष्म सुप्तावस्था में रही हो, स्थान, वातावरण और परिवेश को देखते हुए अब जागृत हो गई हो। परिणामतः इस कैसर-वैज्ञानिक की अक्षर-जननी हिंदी भाषा में 'वैज्ञानिक साहित्य' के अभाव पूर्ति हेतु चली हो। इसी प्रयास का फल आपके सम्मुख है।

यदि इन कथाओं द्वारा आपका स्वस्थ मनोरंजन हो सके और दृष्टिकोण भी प्रभावित हो सके, तो मुझे अपने इस लघु प्रयास को आप तक पहुंचाने का जो संतोष होगा, वह मेरे लिए भविष्य में नव वैज्ञानिक साहित्य सृजन हेतु उत्प्रेरकतुल्य रहेगा।

परिसर कोठी काकेबाबू,
देवकाली मार्ग,
फैजाबाद—224001

—डॉ० राजीव रंजन उपाध्याय

कथा-क्रम

अतिमानव

"हैलो डॉक्टर, क्या समाचार है, बहुत समय से फोन नहीं किया, ठीक हो कि नहीं, या होम सिक हो रहे हो ?" इतने ढेर सारे प्रश्न विरोनिका ने एक साथ पूछ लिए।

मैंने उसे बताया, "ऐसी कोई बात नहीं है। सिर्फ कुछ प्रयोगों के लिए जैविक मॉडलों को विकसित करने में लगे रहने के कारण कुशल क्षेम पूछने में विलंब हुआ। अगले सप्ताह मिलने के लिए समय निकालूंगा।"

उसके इस आग्रह को कि मैं डिनर पर उसके यहां रविवार को रात्रि 8 बजे जाऊं, टाल नहीं सका और सहर्ष सहमति दे दी। उसका डिनर पर बुलाने का आग्रह कुछ विचित्र एवं उसके स्वभाव के विपरीत लगा, पर मन को यह समझाया कि मात्र पांच दिन बाद तथ्यों का पता लग ही जाएगा इसलिए अभी माथापच्ची करना बेकार है।

चलें विरोनिका के विषय में आपको भी कुछ बता दूं। वह लंबी छरहरी और तीखे नाक नक्शवाली 25 वर्षीया जर्मन युवती भी कैंसर शोध संस्थान में रंगों द्वारा चूहों पर कैंसर उत्पन्न कर उन अनुभवों को शोध प्रबंध का स्वरूप देने के प्रयास में लगी थी। वह बड़ी ही परिश्रमी और अच्छी वैज्ञानिक थी।

समय की गति बड़ी तीव्र होती है। रविवार आ ही गया। जर्मन समयबद्धता को ध्यान में रखते हुए मैंने ठीक 8 बजे उसके घर की कॉलबेल बजाई। बड़ी ही आकर्षक मुस्कान के साथ विरोनिका ने द्वार पर मेरा स्वागत किया और सहर्ष फूलों का गुच्छा स्वीकार कर बोली, "तुम तो

चकरा रहे होगे कि क्या बात है ! आओ, तुम्हें एक आश्चर्यजनक भेंट दूं। यह रहे हेर[1] ऐडोल्फ ! इनसे मिलो।"

ऐडोल्फ बड़ा ही सुसंस्कृत युवक था। मुसकराकर बोला, "मेरी भारत में विशेषकर उसकी संस्कृति में बड़ी रुचि रही है और यही कारण है कि मैं भारतीय विद्याओं के अध्ययन में रत हूं।"

सुस्वाद जर्मन वाइन और मोजार्ट के अमृतमय संगीत में डूबे बातें करते और भोजन का आनंद उठाते मैंने ऐडोल्फ से पूछा, "विवाह कब कर रहे हो ?"

"अगले वर्ष" संक्षिप्त सा उत्तर था उसका।

प्राचीन भारत की गरिमा और दर्शन पर बातें करते-करते आधी रात हो गई। मैंने भी समय की गति का ध्यान रखते हुए विरोनिका और ऐडोल्फ से विदा ली। कार स्टार्ट कर एपार्टमेंट आया और पता नहीं कब सोया। स्वप्न में विरोनिका और उसके पूर्व मित्र हेंस से संबंध, बिछोह और अब ऐडोल्फ का विरोनिका के जीवन में आना, रात भर मेरे सुप्त मस्तिष्क में घूमते रहे।

हेंस विरोनिका से अत्यधिक प्यार करता था। वह नाजियों के प्रणेता दार्शनिक शापनहावर तथा नीत्शे का अंध भक्त था और विरोनिका थी उदात्त भावों की युवती, जो जर्मनी के भूतकाल को विशेषकर 1939-45 तक के समय को देश का दुर्भाग्य मानती थी। विचारसाम्य न हो सकने के कारण दोनों अलग हो गए थे। विरोनिका अपने शोध में डूब गई थी और हेंस अपना तबादला कराकर मक्समिलन इंस्टीट्यूट म्यूनिख चला गया। इस बात को 2 वर्ष हो चुके थे। चूंकि हम सभी कैंसर शोध में लगे थे इस कारण यह भी पता था कि हेंस म्यूनिख में यकृत कैंसरकारी ऐफ्लाटॉक्सिनस पर शोध कर रहा था।

विरोनिका मेरा और मैं उसका कुशल क्षेम सप्ताह में एक बार अवश्य पूछ लेते थे। एक दिन विरोनिका और ऐडोल्फ से हाईडेलबर्ग के प्राचीन पर सुंदर रेस्तरां हिर्श गासे में मुलाकात हुई। बातों ही-बातों में अगले सप्ताह म्यूनिख में हो रहे 'बायरिश फेस्ट'[2] देखने का कार्यक्रम बन गया। आपको बता दूं कि बायरिश फेस्ट एक कार्निवाल (मेला) जैसा है,

जिसमे हजारो नर-नारी, युवक युवतिया, बच्चे बूढे अपनी रग बिरगी विचित्र पोशाकें और मुखौटे लगाए नृत्य करते, बियर पीते, गीत गाते, सामूहिक रूप से रात व्यतीत करते है। इसमें पूर्ण स्वच्छदता रहती है। भाग लेनेवालो का उत्साह देखने लायक होता है। पुराने परिचित होते हैं। प्रणय और विछोह भी होता है। मानव की आदिम प्रवृत्तिया स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है वायरिश फेस्ट मे।

योजना के अनुसार हाईडेलबर्ग से ही होटल का रिजर्वेशन करा लिया गया। हम सभी एक साथ म्यूनिख पहुचे। पूरी रात फेस्ट देखा, बीयर पी। नृत्य टोलियो के साथ नृत्य और गान भी किया। सारी रात इस उत्सव मे भाग लेने के बाद प्रात 4 बजे जब वापस होटल आया तो आखें नींद से भारी थी। बिस्तर पर पडने के बाद शाम को करीब 5 बजे फोन की लगातार घनघनाहट के कारण जब आखें खोली और फोन उठाया तो विरोनिका पूछ रही थी "क्या सोते ही रहोगे? पता है कल रात्रि हेंस से भी भेंट हो गई थी। कुछ परिवर्तन हुआ है उसकी मानसिकता मे। चलो, आज शाम 7 बजे उसके यहा निमत्रण है, काल्ड स्पाइस (ठण्डा भोजन) का।"

मैं कुछ कहना चाहता था, पर विरोनिका बोली, "ऐडाल्फ भी साथ रहेगा। हम लोग 6 30 पर तैयार रहेंगे कमरे मे।" खैर, [illegible], स्नान किया। कपडे बदलकर ऐडाल्फ एवं विरोनिका के कमरे पर पहुंचा। वे दोनो तयार थे और हम लोग नियत समय मे हेंस के अपार्टमेंट पर पहुंच गए।

हेंस प्रतीक्षारत था। उसके चेहरे पर प्रसन्नता थी, पर [illegible] आखो मे एक अजीब सा सूनापन था।

मेज के चारो ओर बैठकर चीज (पनीर), [illegible], [illegible] और [illegible] खाते पीते बातें शुरू हुई। ऐडाल्फ ने [illegible] तो हेंस बडी उत्सुकता से सुनता रहा और [illegible], [illegible] मुस्कान [illegible] है और रहेगा। कारण है [illegible]। [illegible] नहीं है [illegible] तुष्टिवादी है। विकास के लिए [illegible] मुख्य उद्घोष जिसके [illegible]

था) की आवश्यक्ता है, विम्तार की जरूरत है न कि आत्मसतोष की।"

ऐडोल्फ तो चुप हो गया पर विरोनिका (सभवत सुरा का प्रभाव भी था) बडे व्यग्यामक ढग स बोली, 'हेम, तुम पर नीत्शे के अतिमानव की मृत आत्मा चढकर बोल रही है। भारत भारत है और रहगा, पर जमनी के लिए तुम लोग फिर विनाशकारी सिद्ध होओग।'

बात कुछ इस ढग से कही गई थी कि सुनकर हेस सहित सभी हम पडे। पर मैंने एक क्षण के लिए ऐसा महसूस किया कि हेम की आखो की शू यता घणा मे बदल गई थी। बातो बातो म मदिरा समाप्त हो गई थी। हेस उठा और तीन मग झागदार बियर लकर करीब दस मिनट बाद वापस आया। बडे स्नेह से उसने बियर का एक मग एडाल्फ को, दूसरा मुझे और तीसरा विरोनिका को देते हुए कहा विरानिका अतिमानव चाहे वह नीत्शे का हो या महर्षि अरविंद का, रहेगा सदा इसी जगत म। हो सकता है उसका स्वरूप, उसका हृदय और उसकी कामप्रणाली बदल जाए, प्रिये! उसी अतिमानव के लिए प्रास्ट (चियस)," कहकर वह बियर पी गया।

पर विरोनिका यह कहकर कि बियर अधिक कडवी है सारी बियर न पी सकी और मग रख दिया।

बियर का रग तो सामाय था, पर उसम सफेदी अधिक थी—यह मैंने स्पष्ट दखा लेकिन माजरा समझ नही सका। शालीनता के नात अपनी बियर पी गया। फिर कसर शोध की बातें होन लगी।

घडी की सूई न रात्रि का एक बजा दिया। हम मकान हेस का धयवाद द, विदा ली। उसन बडे प्रेम से विरानिका का हाथ चूमा। *आउफ वीडर जेन*[3] कहते हुए, द्वार तक आकर उसने विदा दी।

दूसर दिन यात्रा शुरू की म्यूनिख म हाईडेलबग की। दोपहर को हम सभी हाईडेलबग पहुचे। विरोनिका और ऐडोल्फ का धयवाद द मैं अपने एपाटमट आया। स्नान और भोजन कर सो गया।

दूसर दिन प्रात 6 बजे नीद खुली। प्रयोगशाला 8 बज पहुचा। काम प्रारभ किया। दिन बीतन लगे। फोन स ऐडोल्फ और विरोनिका स बात भी होती रहती थी।

कोई 4 माह बाद एक दिन ऐडोल्फ ने फोन किया, 'विरोनिका आपसे मिलना चाहती है। शाम को 7 बजे घर आ जाना।" मैंने शाम को कार्य समेटकर सीधे विरोनिका के यहा पहुचने का कार्यक्रम बनाया और कार को तेजी से भगाता हुआ उसके घर पहुचा। विरोनिका बीमार थी, पहुचने पर ऐडोल्फ ने बताया।

"क्यो बीमार हो, क्या बात है ?" मैं विरोनिका से बरबस पूछ बठा।

वह बोली, "मुझे लगता है कि यकृत का कसर हो गया है, मेडिकल रिपोर्ट यही बताती है। शीघ्र ही 20 30 दिन बाद आपरेशन होगा।"

उसकी बात सुनकर बडा दु ख हुआ, पर कुछ कह नही सका।

फिर थोडी देर बाद साहस कर बोला, 'विरोनिका, घबराना नही। ठीक हो जाओगी।"

उसी वातावरण म हम लोग बातें करते रहे और ऑपरेशन के बाद मैंने विरोनिका एव ऐडोल्फ से मिलने का वादा कर विदा ली। चित्त मे चिंता और भय दोनो थे। चिंता थी विरोनिका के रोग के स्वरूप के विषय मे और भय था कि म्यूनिख की बियर, जो हमने विरोनिका के साथ हेम के यहा पी थी, का ही तो यह प्रभाव नही है। पर अब हो ही क्या सकता था। विरोनिका का स्वास्थ्य बहुत खराब हो गया था। एक दिन जब ऐडोल्फ ने रात्रि म फोन किया तो मुझे भी घबराहट सी हो गई।

"हैलो डाक्टर, विरोनिका ऑपरेशन के बाद बच न सकी, उसे यकृत का कसर हो गया था। जानते हो यह कसर ऐफ्लाटाक्सिनस[4] के द्वारा हुआ है—इसके हाईड्राक्सीलेटड मेटा बोलाइटस[5] खून म पाए गए हैं। मुझे भय है कहीं हेम न तो बियर मे इसे " वह बात पूरी न कर सका और टलीफोन रख दिया।

ओह, तो यह बात थी। अब समझा कि क्यो विरोनिका की बियर सफेद और चमत्कार थी ? पुराना दृश्य मेरे मस्तिष्क मे घूम गया। पर विडबना देखिए, एक बार फिर अतिमानव न मानव की हत्या वैज्ञानिक ढग से की थी।

बेचारी विरोनिका !!

1 जमन भाषा म आदरसूचक सबोधन ।
2 म्यूनिख जो पश्चिमी जमनी के बवेरिया प्रात की राजधानी है, यहा यह मेला हर वष अक्तूबर मास म लगता है ।
3 जमन भाषा मे पुन मिलेंगे कहकर विदा देन का सबोधन ।
4 एस्परजिलस फ्लवेस नामक फफूदी द्वारा उत्पन्न किया जानेवाला कसरकारी रासायनिक पदार्थ ।
5 शरीर म जब रासायनिक प्रक्रिया द्वारा परिवर्तित रासायनिक पदाथ ।

अफ्रीका का वाइरस

पेरिस फ्रांस का एक रमणीक नगर है और बुलवार्ड डू मोंपरनास वह प्रसिद्ध राजपथ है जो अनकानेक सुंदर रेस्त्राओं और कैफ़ों से सुशोभित है। यहीं पर बैठते थे पेरिस के प्रसिद्ध विचारक और लेखक, और यहीं पर है वह अतिथि गृह जहां अनेक वैज्ञानिक आमंत्रित किए जाते थे। यह अतिथि गृह मात्र वैज्ञानिकों के लिए ही नहीं था। इसमें कुछ पत्रकार भी यदा कदा आकर टिक जाते थे। इन्हीं लोगों में एक एशिया भी थी। बड़ी अजीब लड़की थी। लगता नहीं था कि इसमें जीवन है, इसकी कुछ इच्छा भी है। सदा गुमसुम और चुप या काम से काम। जब भी भेंट होती थी, हंसकर 'बानजूर' (शुभ दिवस) कहकर चल देती थी।

समय के पंख होते है, दिन उड़ते चले गए। धीरे धीरे आत्मीयता बढ़ी। वह पत्रकार थी और पेरिस की प्रयोगशालाओं की, विशेषकर जहां वाइरस पर शोध होता था रिपोर्टिंग करती थी। यह उसने एक दिन शाम को 'दि डोम' में बियर पीते हुए बताया। वह भी बड़ा अजीब दिन था। शाम को थका सा आया। लॉज में बैठा था। उसी समय वह भी आई और तमाम समाचार-पत्र लेकर कहने लगी, "देखो, एड्स वाइरस पर यहां पास्तोर शोध संस्थान पेरिस में भी कार्य हो रहा है। पता है तुम्हें ?'

मैंने उत्तर दिया, "नहीं, मैं नहीं जानता, पर बताओगी भी।'

वह बोली, 'जब बियर पिलाओगे।'

महीने का अंतिम सप्ताह, पैसों की तंगी, पर उसकी परवाह न कर बोला, "चलो, मोंपरनास पर ही बैठेंगे और बियर पिएंगे, बातें

और तुम बताओगी एडस के विषय मे।'

दस मिनट का समय निकालकर कपडे वदलकर अपने कमरे म नीचे आया, लॉज म बैठकर उसकी प्रतीक्षा करता रहा। थोडी देर वाद जिम एशिया को देखा वह अलग थी। ऐसा लगता था जस उसमे नव-जीवन का सचार हो गया है। सुगधियो से सने वडे सुदर कपडे पहनकर आइ। मेरे मत्र मुग्ध से देखते रहने पर बोली, 'अरे मैं वही हू, पर बाहरी परिधान वदल गया है, चलो।"

मैं उसके साथ, हाथो मे हाथ डाले चल दिया।

पेरिस कभी सोता नही है। उसे नीद आती ही नही। सदा जवान रहता है। बुलवाड डू मोपरनास तो सदावहार सा है रेस्टोरा काफी हाउसो, पबो (मदिरालयो) और लोगो के ठहाको स भरपूर। मौसम भी पेरिस पर मेहरवान रहता है। सर्दी तो ऐस घबराती है आने से जैस कोई युवती प्रथम-पुरुष के ससग स घबराती हो। सुदर मौसम पेरिस की विशेषता है।

दो बियर और कुछ खान के लिए आडर देकर मैं एशिया स एडस के विषय म सुनने को तैयार हो गया। बियर अच्छी थी। कालसबग और स्नक्स भी मजेदार। एशिया बोली 'अमरिका म तुम तो जानते ही हो, कि रिकबीनेंट डी० एन० ए० पर बहुत काम हो रहा है।"

मेरा उत्तर था 'हा, पता है। रिकबीनेंट डी० एन० ए० के द्वारा एक कपनी ने इसूनीन भी बनाया है। पर अपनी बात तो बताओ।"

'हा तो डी० एन० ए० को रिकबाइन करके बहुत-स जीव वैज्ञानिक परिवतन वाइरस सीमेट पौधो के क्रोमोसोम्स और मानव क्रोमोसाम्स मे किए जा सकते हैं। दूसरे शब्दों म पट्टे का मोटा बनाया जा सकता है और घास को खाना—समझ रहे हो ?"

'हा अभी तुम्हें देखकर अपनी बेसिक बायोकेमिस्ट्री तो नहा भूला हू। पर यदि तुम थाडा और पास होता तो मालूम क्या सारे जहान का भूल जाता।'

वह माथे पर तेवर डालकर बोली, 'बात बनान म माहिर हो, यू आर ए सविश कुक।"

"हा, तो सोचा कि एड्स म सबसे अधिक मरनेवाले लोग कहा है ?"

मैंने धीरे से कहा, 'अमरिका म।"

"और सबसे पहले इसका शोर कहा हुआ ?"

"उसी देश म।"

"अन्य देश बाद म इसके बार मे जान पाए, क्या माजरा है ?"

'पता नही, तुम बताओ।'

एशिया सिगरेट का कश खींचती हुई बोली, "मेरे पास सबूत है कि उस देश की एक वाइरस शोध प्रयोगशाला साल्ट वाइरस पर शोध काय (रिकबीनेंट डी० एन० ए० का) कर रही थी। एक लैब-टेक्नीशियन की गलती से यह वाइरस प्रयोगशाला से बाहर आ गया। परिणाम था 18 मास के अदर उस लब-टेक्नीशियन की मृत्यु। लबोरेटरी के डाइरेक्टर ने बात दबा दी। लेकिन वाइरस तो वातावरण मे था। लोगो पर, विशेषकर अश्वेतो पर प्रभावकारी सिद्ध हुआ और जब श्वेत भी मरने लग तो शोर मच गया। पर बात को बदल दिया गया। कहा कि अरे, यह तो सेंट्रल अफ्रीका का वाइरस है। वही स अश्वेतो के साथ आया। सारा श्वेत समाज इस बात को मान गया। अश्वेत तो सब कुछ कर सकते है। सारी समस्याओ की जड अश्वेत अफ्रीकी है। बहुत सही तुक्का बैठा दिया, और तुम्हे भी पता होगा कि यदि एड्स वास्तव म सेंट्रल अफ्रीका का वासी है तो सेंट्रल अफ्रीका के आसपास के देशो को अब तक तो समाप्त हो जाना चाहिए था। पर लोग वहा एड्स स नही, भूख और गरीबी स मर रहे हैं। पर सोचे कौन।"

"आओ चलें" सिर झुकाए एशिया की बात सुनता कमरे मे वापस आकर एड्स कॉनफ्रेंस की रिपोट पढकर उसके असत्य को देखकर, मन ही मन एशिया की प्रशसा करता एव विज्ञान के दुरुपयोग की भयावह स्थिति की कल्पना और तीसर विश्व के दुर्भाग्य का सोचता कितनी बार पाइप को भरा होगा, याद नही। पर वैज्ञानिक प्रगति की सीढी पर जो देश ऊपर हैं, वे ऊपर ही रहना पसद करते है—राजनीतिक खीचातानी तो ऊपर उठनेवाले देशो को और उनके निवासियो को झेलनी पडती है। तृतीय विश्व के दशो की यही त्रासदी है।

नारंगी

"कुछ समझ म नही आता, डॉ० लुटज ! कई दिनो से जानने का प्रयास कर रहा हू कि इजराइल मे आए हुए नारंगियो के पौधे क्यो सूख जाते हैं ? यह भी स्पष्ट नही हो पाता है कि पानी, खाद एव अन्य जीवन दायी पदार्थों के रहते हुए यह परिवतन क्यो हो जाता है ? पता है—इसके द्वारा तेल अबीब के किसानो को प्रतिवर्ष करोडो रुपए का नुकसान होता है । इसे देखते हुए इजराइल के खाद्य मत्रालय ने यहा पास्तार सस्थान से मुझसे सपक किया । वे चाहते ह कि हम लोग इसके कारणो का पता लगाए । इसके एवज म वे हमसे खाद्य सबधी शोध कार्यों के लिए लबी अवधि का अनुबध करना चाहते हैं । इतना कहकर डा० गिजबग चुप हो गए ।

"मैं भी कुछ स्पष्ट नही समझ पा रहा डॉ० गिजबग पर हो सकता है कि इन पौधो के साइटोप्लाज्म[1] अथवा प्लाज्माटिड या डी० एन० ए०[2] म कुछ परिवतन हो गया हो । इस कारण ये सूख जाते हो ।' डा० लुटज ने सभावना व्यक्त की ।

'किसी प्रकार की सभावनाओ स इनकार नही किया जा सकता," डॉ० गिजबग का उत्तर था ।

क्यो न प्लाज्माटिड डी०एन०ए० को अलग कर देखा जाए कि कही उनके अमीनो एसिडो[3] क प्राकृतिक सीक्वेंस म परिवतन तो नहीं हुआ है । तभी हम कुछ आगे बता पाएगे कि पौधे फल देने के पूव क्यो मर जाते हैं ।"

'क्या यह कार्य करना चाहोगे ? तुमने तो इस प्रकार क कई काम

किए हैं, डॉ० लुटज ।"

"हा, मुझे आपके प्राजेक्ट पर, विशेषकर इस प्रोजेक्ट पर कार्य कर प्रसन्नता होगी और यदि हम लाग सफल रहे तो इजराइल की नारगिया (जाफा की मशहूर नारगिया) खाने का ही नहीं मिलेगी [illegible] की गाथा भी हो जाएगी ।"

दूसरे दिन मैंने काय प्रारभ कर दिया। पहला दिन तो बस प्रयासो का दिन था। पर धीरे धीरे काय अपनी गति से आगे बढने लगा। कई बार प्रयास करने पर विविध वैज्ञानिक तकनीको का प्रयोग कर थोडी सफलता मिली। सप्ताह बीत गया। मैं भी फुरसत मे बुलवार्ड डू मोंपरनास[1] के कैफे म बैठकर आने जानेवालो को देखता कॉफी पीता रहा कि वहीं विरोनिका भी दीख पडी। वह भी उसी प्रयोगशाला मे, जहा मैं कायरत था काय करती थी। देखते ही आ गई। कॉफी का आडर दिया और कोट को पास ही कुर्सी पर रखकर पहले मौसम की बातें की, फिर इधर उधर की और अत मे नारगियो की समस्या पर चर्चा होने लगी। उसका भी अनुमान था कि वास्तव म डी आक्सी राइबो न्यूक्लीक एसिड के अमीनो एसिड सीक्वेंस म परिवतन कर दिया जाए तो बहुत से परिवतन आ सकते हैं और पौधो की तो विशेषकर मृत्यु भी हो सकती है। थोडी देर बैठकर वह पहले रेंडवू (पूव निश्चित प्रोग्राम) पर चली गई और मैं भी टहलता हुआ वापस आकर सप्ताह के परिणामो का निरीक्षण करने लगा।

सप्ताह मास मे परिवर्तित हो गए। कई बार परीक्षण दोहराए गए। सेंटीफ्यूगेशन प्रेसीपिटेशन, सदन ब्लाक इलेक्ट्रोफोरेसिस[5] और अत मे जाकर मिला शुद्ध प्लाज्माटिड डी० एन० ए०, फिर उसके अमीनो एसिडस की एनालिसिस आटोमोटिव एनालाइजर से प्रारभ हुई।

दो सप्ताह बाद जब अमीनो एसिड मे तुलना की गई तो पता चला कि वास्तव म इजराइली नारगिया के अमीनो एसिड म परिवतन था। पर क्या ? क्या यह प्रभाव वाइरस[6] द्वारा हुआ है ?

डा० गिजवग से विचार विमश होता रहा और यह तय हुआ कि इसकी सूचना खाद्य मत्रालय को दे दी जाए और उससे यह भी कहा जाए

कि वह पता लगाए कि वाइरस पर क्या कहीं अरब देशों में काम हो रहा है। क्योंकि हर प्रकार की संभावनाओं पर विचार करना ठीक था।

डॉ० गिजबर्ग ने तत्काल अपनी सेक्रेट्री से इजराइली खाद्य मंत्रालय से संपर्क करने को कहा। कोई 4 मिनट के प्रयास के बाद लाइन मिली। खाद्य मंत्री स्वयं बोल रहे थे कि बड़ी प्रसन्नता है कि डॉ० एन० ए० के सीक्वेंस के विषय में जानकारी मिली। परिवर्तन है पता चला, वह अन्य सूचनाएं शीघ्र देंगे।

मैं शैंपेन की बोतल लेता आया था। कुछ बिस्कुट और पेरिस की मशहूर वफरस[8] के साथ शैंपेन पी गई और फिर हम लोग सप्ताहांत के लिए चल दिए।

सोमवार को करीब 2 बजे डॉ० गिजबर्ग मुसकराते हुए आए और बोले, "सुनो सुमन, इजराइल के खाद्य मंत्री का कहना है कि मोसाद (इजराइली सतर्कता संगठन) ने सूचना दी है कि सारे अरब में कोई प्रयोगशाला नहीं है जो इस प्रकार के वाइरसों पर काम करती हो और पौधों को विशेषकर नारंगी के पौधों को, नष्ट कर सके। पर उनका यह विचार है कि बहुत संभव है यह काम एक ऐसे एशियाई देश में हो रहा है जिसे हाल में ही गलत ढंग से आणविक क्षमता प्राप्त हुई हो। उनका तात्पर्य क्या है स्पष्ट है। उनका यह भी विचार है कि वह इस देश में अपने एजेंटों द्वारा वाइरस के कुछ सैंपल पा भी सकते हैं। मैंने उनसे (खाद्य मंत्री) कहा है कि वह इस कार्य को यथाशीघ्र संपादित करा दें जिससे यह पता चल सके कि यह काम कौन कर रहा है और वे लोग किस प्रकार के वाइरस का प्रयोग कर रहे हैं। आशा है अगले सप्ताह तक वाइरस सैंपल प्राप्त हो जाएगा। बड़ी सतर्कता से मोसाद[9] कार्य करता है।'

मैं चुप सुनता रहा।

मेरी तरफ देखने के बाद पुनः डॉ० गिजबर्ग बोले, 'कुछ कहा नहीं सुमन?"

मैंने उत्तर दिया 'डॉक्टर, कहीं वह वाइरस हम लोगों के लिए ही समस्या न बन जाए।"

नहीं नहीं, ऐसा नहीं होगा।' कहकर डॉ० गिजबर्ग चल दिए।

करीब 14 दिन बाद सफल मिल गया। उसके अध्ययन मे दो सप्ताह लगे पर जा परिणाम मिले उनसे यह स्पष्ट हो गया था कि इन वाइरसा मे इन नारगी के पोधा के डी० एन० ए० म प्रवश करने की, उसे परिवर्तित करने की अपूर्व क्षमता है। इस प्रकार जो नया डी० एन० ए० का सीक्वेंस बनता है, वह स्वय इन पौधा को नष्ट कर देता है। अब उसका उपचार सभव है और नारगिया नाश से बचा ली जाएगी। प्रयोग चल रहा है। पर मर मस्तिष्क म मदा यह खटकता रहा—क्या ? इससे फायदा क्या है ? य देश विज्ञान का प्रयोग मानव और वनस्पति नाश के लिए क्यो कर रहे हैं ? खुशी थी समस्या का निदान हुआ। पर एक राष्ट्र की वानस्पतिक सपदा को अथवा उसकी नारगियो का नष्ट कर देने से क्या देश नष्ट हो जाएगा ? एक राष्ट्र और एक जाति को नष्ट करने का यह प्रयास एक बार और हुआ है। परिणाम सवविदित ही है।

शाम का मोपरनास के डोम के रस्ट्रा मे विरोनिका स भेट हुई। उसे परिणाम बताया तो बोली, तुम क्या सोच रहे हो, तुम्हारे इस काय ने एक दश का कल्याण किया है, विज्ञान मे विश्वास व्यक्त किया है तो दूसरी ओर तुम्हे बुलाया भी तो है इजराइल के विज्ञान सस्थान ने। जाओ वहा, कॉफी पीना और इजराइली लडकियो म बातें करना। आखिर जीवन मे विज्ञान की साधना ही ता सब कुछ नही है।"

'हा, तुम ठीक कहती हो, पर यदि इजराइली लडकिया तुम्हारी तरह हुइ तो जाना बकार है।"

"अर, एमी बात है ता तुम मरा चुबन ले सकते हो," कहकर विरोनिका हसी चुबन दिया और आबुआ (विदा) कहकर चल दी।

1 कोशिका के अदर का एक प्रकार का द्रव्य।
2 जा मानव और पौधा आदि मे पैतक गुण प्रदान करता है, इसे डी-आक्सी राइवा न्यूक्लिक एसिड कहते है।
3 जैव रासायनिक पदाथ जा प्रोटीन आदि का बनाना है।
4 पेरिस का प्रसिद्ध राजपथ।

5 विशेष जैव-रासायनिक विधियां।

6 विषाणु।

7 फ्रांस के शपेन क्षेत्र म बननेवाली अंगूर की विख्यात मदिरा।

8 एक विशेष प्रकार की नमकीन जो खटमिट्ठी होती है तथा बिस्कुट की भांति रहती है।

9 इजराइल का प्रमुख जासूसी संगठन।

यूक्का[1]

"स्नाके दू नास्क ?"-

"नो ।" उत्तर था ।

"बट यू नो ।"

बात अंग्रेजी मे चल रही थी ।

"नही, मैं नारवेजियन अधिक नही जानता पर आवश्यकतानुसार समझ लेता हू ।"

"आश्चर्य है" कहकर वह युवती रुक सी गई ।

"क्या आप पोस्ट ऑफिस मे काय करती हैं ?"

"जी हा, और आप ?"

"मैं तो ट्रोनघाइम म अभी चार माह पहले आया हू और नारवेजियन इस्टीटयूट आफ टेक्नॉलोजी मे शोध काय करने का विचार है ।"

"ओह, तो आप वैज्ञानिक है ?"

"जी हा, आप कह सकती हैं। मुझे टिकट चाहिए बीस क्रोनर[3] के ।"

"हा लीजिए ।"

"तूसन ताक (हजारो धन्यवाद) ।" कहकर मैं विदा लेनेवाला ही था कि वह युवती बोल उठी, "आपका क्या नाम है ? कृपया बताइए ।"

"मैं डॉ० कहा जाता हू । और आप ?"

"मैं सिसल नोडगाड ।"

"तो फिर मैं चलू," कहकर मैं अपनी प्रयोगशाला मे आ गया ।

मुझे ट्रोनघाइम मे आए चार माह हुए थे । नारवेजियन लोगो के लिए

वहा गरमी थी, लेकिन मेरे लिए तो जाडा था क्योकि जुलाई म तापक्रम मात्र दस डिग्री सैंल्सियस था। नारवे म सूय दिन-रात चमकता रहता था। 6 मास की रात्रि और 6 मास का दिन होता था। कमरे बिजली के माध्यम से गरम रहते थे और जाडो म घडी की सुई देखकर काम करना पडता था और गरमियो म खिडकिया पर रात्रि म काले पर्दे डालकर सोना पडता था। इस प्रकार के जीवन का मैं अभ्यस्त हो चुका था।

प्रयोगशाला मे प्रात 8 बजे जाकर शाम को 8 बजे तक लौट आने का नियम था। सप्ताह के दो दिना—शनिवार और रविवार को छोडकर यह नियम चला करता था। आनेवाले शनिवार को हलग विर्योन के यहा जमकर शराब पीने की पार्टी थी। वहा जाना निश्चित था।

हलग के विषय मे मैंने बताया ही नहा। यह मेरा सहयोगी था और इसकी पत्नी जो उसी संस्थान म काय करती थी बडी ही हसमुख, उन्मुक्त स्वभाव की महिला थी। वह सौंदय की तो साक्षात प्रतिमा थी। नाम था बियेट्रिस आकलुड। पर अब श्रीमती हेलग थी। श्रीमती हलग की सौंदय-चर्चा सारे ट्रानधाइम मे थी और अपने स्वभाव के कारण वह सदा पार्टियो मे बुलाई जाती थी। भौंरे उसके चारो ओर मडराते रहते थे। इस कारण हेलग थोडा दु खी रहता था। श्रीमती हेलगे बच्चा म विश्वास नहीं करती थी और सदा व्यस्त रहती थी। जाज गुल्टज, जो माइक्रोबायालोजिस्ट और आरकनसास विश्वविद्यालय अमरिका मे प्रोफेसर था, ट्रोनधाइम म कुछ शोध काय के लिए आया था। श्रीमती हेलगे का समय अधिकतर उसके साथ ही व्यतीत होता था। अमेरिकन डालर, नारवजियन क्रोनर का मात दे रहा था। यह मैं इसलिए बता रहा हू कि आप शनिवार का जब लोगा से मिलें तो परिचय मात्र की औपचारिकता ही रहे, अन्य कुछ नहीं।

शनिवार का आठ बजे शाम जब मैं हेलग के घर पहुचा तो जार्ज गुल्टज आ चुका था और श्रीमती हेलगे किचन म भोजन और पेय तयार कर रही थी। हेलग ने बताया कि उसकी बहन भी अपनी एक मित्र के साथ आनेवाली है। इस कारण थोडी प्रतीक्षा और करनी होगी।

15 मिनट बाद अतिथि आ गए। हेलग की बहन स परिचय हुआ। पर उसकी मित्र का जब परिचय कराया जान लगा तो हम दोना हस पडे।

यह तो वही पोस्ट आफिसवाली लड़की थी, सिसेल नोडगाड। हम सभी ड्राइंग रूम के सोफों पर अलग अलग बैठ गए। श्रीमती हेलगे और जाज शुल्टज एक साथ, मैं और हेलगे की बहन और सिसेल तथा हेलग एक साथ।

शुरुआत एकुआविट[4] से हुई। 'स्कोल' (चियर्स) कितनी बार कहा गया, याद नहीं। सभी पी रहे थे और सुस्वाद रैनडियर[5] का भुना गोश्त, ब्रेड, बटर, चीज और झरांटेवाली सरसों की चटनी खा रहे थे। नारवेजियन परंपरानुसार पीते समय गाना गाया गया—"सीदयर सित्तेरफिल्ले स्वाइन भीन हे हुरेर लावा[6] और फिर पीने के दौर का अंत गरम कॉफी में हुआ। जाज शुल्टज अपने स्थान से उठकर मेरे पास आ गया था और दूसरी ओर सिसेल नोडगाड भी उठकर अपनी मित्र से बातों में लगी थी।

जाज ने पूछा, "कब चलोगे, एक बज चुका है।"

मैंने कहा, "दस पंद्रह मिनट बाद चलेंगे।"

कपड़ों को अपने गरम कोटों से ढककर हेलगे और श्रीमती हेलगे को धन्यवाद देते हुए सबसे पहले हम लोग ही चले।

रविवार को शुल्टज ने मेरे साथ स्कानसन रेस्ट्रां में खाने का कार्यक्रम बनाया था, वह भी शाम को। रविवार सोते बीता। 8 बजे मैं पुनः स्कानसन रेस्ट्रां में था। शुल्टज भी दस सेकंड बाद आ गया। हम लोग एक किनारे की मेज पर बैठे। भोजन में रैनडियर स्टीक, पोटटो पूरी, सलाद और फ्रेंच वाइन बूजुआले थी।

शुल्टज मूड में था। पहले तो श्रीमती हेलगे ही चर्चा का विषय रही। फिर बोला, "डॉक्टर, मुझे कीव (रूस)[7] भी जाना है। पर अमरिकन काउंसलेट समस्या पैदा किए हैं।"

"कैसी समस्या," मैंने पूछा।

"तुम्हें पता है कि सी० आई० ए० का एक अधिकारी रूस के अन्य सम्थानों में जाकर कुछ और डेटा लाने के लिए कह रहा है। और वह भी इस संबंध में कि माइक्रोबायोलोजिकल विधि द्वारा पौधों से किस प्रकार पेट्रोलियम बनाया जाए। यह तो सच है कि रूसी वैज्ञानिक इस विषय

पर कापी सोच कर रहे हैं। पर यह चोरी मुझसे नहीं होगी। यह सी० आई० ए० जाल में। बताओ, क्या करूं ? क्या मैं स्टेट डिपार्टमेंट को लिखूं या आरकनसास में अपने सिनेटर को, समझ में नहीं आ रहा है ?"

शुल्ट्ज सारी बातें बिना रुके कह गया। कुछ देर सोचने के बाद मैंने कहा, 'तुम यहां अमरिकन काउंसलेट को बता दो कि तुम यह काम नहीं कर सकते और समाप्त करो इस समस्या को।'

'हां, यह ठीक रहेगा," शुल्ट्ज ने कहा, 'कल मैं फोन पर दूंगा और तुम्हें भी बता दूंगा कि क्या हुआ।"

कॉफी पीकर मैंने विदा ली। बेचारा शुल्ट्ज फंस रहा है, सोचते सोचते सो गया। दूसरे दिन करीब 5 बजे शाम को शुल्ट्ज मेरी प्रयोगशाला में आया। उसके चेहरे पर वह चमक नहीं थी, वह बुझा-बुझा-सा था। मैंने तत्काल बनी कॉफी उस दी और फिर पूछा क्या हुआ ?'

वह बोला, मैंने सारी बात काउंसलेट को बता दी तो उसने हंसकर कहा घबराने की बात नहीं है। फिर सोच लेना। पर बात की चर्चा अन्यत्र न हो। श्रीमती हेलगे भी मेरे ऊपर दबाव डाल रही है, जाने के लिए, पर उसे यह कैसे पता चला, मैं समझ नहीं पा रहा हूं। क्या श्रीमती हेलगे का संबंध सी० आई० ए० से भी है ? तब तो बड़ा अनर्थ हुआ। यह मेरे लिए बहुत हानिकर होगा। यह सी० आई० ए० मेरा फाइल खुलवा सकती है और श्रीमती हेलगे ! हे ईश्वर !' शुल्ट्ज घबराया था

मैंने उसे सांत्वना दी 'शांत रहो और कुछ दिनों के लिए श्रीमती हेलगे से दूर रहो। समय घाव भर देता है। यदि कोई समस्या हो तो पुन संपर्क करना, कहकर मैंने उसे विदा दी।

रात्रि को करीब 9 बजे मेरे फोन की घंटी बजी। दूसरी तरफ शुल्ट्ज की आवाज थी 'डॉक्टर मैं आ रहा हूं।"

स्वागत है, आओ ' कहकर मैं सोचने लगा कि लगता है समस्या कुछ जटिल हो गई है।

करीब आधा घंटे बाद शुल्ट्ज आया और बोला, "डाक्टर श्रीमती हेलगे ने मुझसे पुन कहा है कि मैं रूस जाऊं। वह भी मेरे साथ जाना चाहती है। अब तो स्पष्ट ही है कि उसकी जड़ें दूर तक हैं। अमेरिकन

पत्र काउसलेट में भी है ही। क्या करू ?"

मैंने उसे एक पैग एकुआविट दी और स्वत एक पैग लेकर सोचने लगा कि मामले को कैसे सुलझाया जाए ताकि मैं सामने न आऊ और गाडी चल निकले।

थोडी देर तक हम दोनो मौन रहे। मात्र एकुआविट सिप करते रहे। फिर मैंने कहा, "यदि चाहो तो आरकनसास मे अपने सेनेटर को सारा डिटेल लिख दो और यह भी सकेत कर दो कि तुम शीघ्र वापस आने का विचार रखते हो और यदि इस बीच कोई घटना घटती है तो उसकी सूचना और जिम्मेदारी अमेरिकन काउसलेट के सी० आई० ए० के इचाज की होगी।"

"बात तो ठीक है, पर पत्र भी सेंसर होते हैं, डॉक्टर, यदि यह सब मैंने लिखा तो सी० आई० ए० का विरोधी होकर रहूगा कहा ?"

'तो फिर सकेत तो कर ही दो कि तुम्हारे सम्मुख जटिल समस्या है। और पत्र अन्य मित्रो को भी लिखो। अब तो यही करना होगा। दूसरा विकल्प नही है।"

"मैं यहा से शीघ्र ही चला जाना चाहता हू, अब तो घुटन हो रही है ट्रोनधाइम मे।"

"नही भाई, ऐसी बात नही है। अभी तो हम लोगो को यूक्का मे पीना है नृत्य करना है, बडा आनद रहता है। तुम चिंता मत करो।"

मैं तो बेकरारी से यूक्का (कार्निवाल) की प्रतीक्षा कर रहा हू। कुल तीस दिनो का मामला है। कौन जाने सब समस्या हल हो जाए।"

'देखा जाएगा, एक पैग और, चियर्स टू द बाटम," कहकर हम लोगो ने एकुआविट समाप्त की। शुल्टज आश्वस्त होकर बोला, "ठीक है, आई एम नॉट गोइग टू डाई फॉर इट (मैं इस सबके लिए मरने नही जा रहा हू)। अब चलूगा।" उसे विदा देकर मैं अपने कन के प्रयागो की रूपरेखा मे डूब गया।

दिन बीतते गए। हेलगे, श्रीमती हेलगा और उस पोस्ट ऑफिस की सिसेल नोर्डगार्ड से भी भेंट होती रहती थी। एक दिन जब मैं कुछ डाक टिकटें लेने गया था तो सिसेल कहने लगी, "डॉक्टर प्रोफेसर शुल्टज के

पग अमरिकन माउमलेट जाते हैं। क्यो, जानते हो ?"

"पता नही, एसा होना नही चाहिए, यह गलत है।" पर दिमाग में उलझन तो थी ही और मैंने निश्चय किया कि इस मामल को शुल्टज को नही बताऊगा।

यूक्का, नवयुवका एव नवयुवतिया का त्योहार है जिस सभी लोग, जो अपन-आपको युवा महसूस करते हैं मनात हैं। रग बिरगी पोशाक पहन, मुखौटे लगाए बियर-वाइन पीते हुए, बड की ध्वनि पर नृत्य करते हुए युवक युवतियो का जुलूस विश्वविद्यालय स चलता और ट्रानधाइम क सिटी सेंटर पर किंग आलाव[9] की स्टैच्यू के पास जमा हा, रुकता हुआ विश्वविद्यालय के हाल मे जाकर समाप्त होता है। हेलग श्रीमती हेलगे, मैं और प्रोफेसर शुल्टज भी इसमे सम्मिलित होन की तयारी म थे। श्रीमती हेलगे प्रस न डॉ० शुल्टज शात और मैं तथा हेलगे तटस्थ मे थे।

दम बजे कार्निवाल प्रारभ हुआ। हम सभी थोडे मदिरा के नशे म थे। हेलगे किसी अन्य मुखौटेवाली युवती (अज्ञात) के साथ, मैं उस पोस्ट आफिसवाली सिसल (जिसने अपना परिचय मुखौटा उतारकर दिया था) के साथ और शुल्टज श्रीमती हेलग का हाथ पकडकर डास कर रहे थे। बियर की बहुतायत थी। पीत, नाचत हम लाग थक गए थे, पर अभी सिटी सेंटर पहुचने म विलब था। मैं सिसल के साथ आग बढ गया था। हेलग भी कही गुम था और शुल्टज को दख पाना कठिन था। मेरे मस्तिष्क मे शुल्टज के लिए चिता तो थी, पर चारा क्या था।

शाम को हम लाग सिटी सटर पहुचे। वहा भी मित्रो का पता नही। करीब एक घट बाद कुछ भगदड मची, पर कारण जान पाना कठिन था। पूछने पर पता चला कि एक पेयर (जाडा) नाचते-नाचत मूर्छित हो गया है। उसे अस्पताल ले जान के लिए एबुलेंस आई है। अधिक पी लेने पर लाग बहोश हो जाते हैं, यह काई नही बात नही है। यही सोचकर हम दोनो नाचते रहे और सिसल क हसी मजाक वातावरण को रसमय बनाते रहे। यूक्का तो रात भर चलता पर दूसरा दिन काम का था। सिसल से विदा ले माहाल्त[10] आया (उस स्थान का नाम जहा मैं रहता था)। स्नान कर सोने से पूव जब घडी पर निगाह डाली तो रात्रि के एक स अधिक का समय

था। सोते ही नींद आ गई।

दूसरे दिन प्रात प्रयोगशाला की व्यस्तता थी। इस कारण दस बजे, जब कॉफी का समय होता था, हेलगे के पास गया। वह प्रयोगशाला म नही था। मैंने शुल्टज का फोन किया। वहा भी कोई नही था। फोन बजता रहा। मैं अकेला कॉफी पी रहा था कि इटरकॉम पर प्रोफेसर जानसन ने मुझे बुलाया, "डाक्टर, तुरत आ जाओ।"

दस मिनट बाद जब प्रोफेसर से भेंट हुई तो उनके चेहरे पर गहरी रेखाए दिखी। वह बोली, "डॉ० शुल्टज और श्रीमती हेलगे की अस्पताल मे मत्यु हो गई। वे दोनो कल यूक्का म थे। वहा से हालत खराब हो जान पर बेहोशी की हालत मे विश्वविद्यालय चिकित्सालय मे लाए गए थे। वैसे बीमार तो काफी लोग हुए थे पर इन दोनो की हालत अधिक खराब थी। अभी फोन मे सूचना मिली है कि साइनाइड से दोना की मत्यु हुई है।"

दोना ने साथ साथ साइनाइड क्यो खाया, समझ मे नहीं आता। फिर शुल्टज तो समझदार था।

मैं थोडी देर चुप रहा, फिर बोला, "प्रोफेसर जानसन कोई साइनाइड पिन भी चुभो सकता है दोनो को। चुभोनेवाले को आप कार्निवाल के बीच पहचान भी पाएगे।"

'हा सभव तो है ही, पर क्यो, यह कह पाना कठिन है। कुछ और बात भी हो सकती है।"

"ठीक कहते हो, डॉक्टर, अब तो मुझे शुल्टज के मत शरीर को उसके पिता के पास भेजना होगा। मैंने अमेरिका के लिए कॉल बुक कर दी है। हा, हेलगे का भी सात्वना दे देना।'

"हा।' कहकर मैं चला आया और यह सोचता रहा कि अब तो सब कुछ सभव है। तथ्य का अनुमान मुझे तो है पर कहने की आवश्यकता ही क्या। अवश्य घटना के पात्रों को एक सस्था विशेष ने अपने रास्ते से हटा दिया।

1 नारवे मे युवक-युवतियो का कार्निवाल मेला।
2 क्या आप नारवेजियन जानते हैं ?

3 नारवे की मुद्रा।
4 नारवे की वोदका जैसी शराब।
5 दक्षिणी ध्रुव मे पाया जानवाला हिरन प्रजाति का जीव।
6 नारवेजियन गीत जिसका भाव है—"यह देखो सुअर समान नशे मे घुत लबूजो बठे हैं।'
7 रूस का एक नगर।
8 अमेरिकी जासूसी सस्था।
9 नारवे का एक राजा।
10 ट्रोनधाइम म एक आवासीय क्षेत्र।

सूप

"सूप शुद्ध संस्कृत शब्द है, अंग्रेजी का नहीं, डॉ० जरीनताज।" डॉ० अदबीली बता रहे थे। डॉ० अदबीली फारसी, पुरानी ईरानी, जरमन, अंग्रेजी, संस्कृत तथा पाली भाषाओं के विद्वान् थे। वह तबरीज विश्वविद्यालय में भाषाशास्त्र के प्रोफेसर थे।

वार्त्ता मेरे डाइनिंग रूम में हो रही थी और भोजन में परोस गए सूप पर डॉ० अदबीली उसकी उत्पत्ति समझा रहे थे। उस भोज में डॉ० जरीनताज, डॉ० समीयी, उनकी पत्नियां, मैं तथा मेरी पत्नी सम्मिलित थे। डॉ० जरीनताज का तर्क था कि यदि 'सूप' शब्द संस्कृत का है तो यह फारसी के 'आश' या 'शोरबे' से कैसे संबद्ध हो सकता है।

वार्त्ता चल रही थी और स्मेरनाफ वोदका की तरंग में सूप पुलाव और सलाद प्लेटों में कम पड़ते जा रहे थे। मेरी चिंता इस पर नहीं थी। पर मैं समझ नहीं पा रहा था कि खानम सोरैया और डॉ० मक्सूद क्यों नहीं आए। और न ही न आ पाने के लिए ही फोन पर सूचना दी।

जाम पर 'सेहतक', 'सलामत'[1] का जोर था। उसी समय कॉलबेल बजी। दरवाजे को खोला ही था कि मेरे प्रतीक्षित मित्र और उनकी प्रेयसी क्षमा मांगते हुए कमरे में प्रविष्ट हुए। डॉ० मक्सूद, न्यूट्रीशन-बायोकेमिस्ट्री के प्रोफेसर थे और खानम सोरैया मेडिसन फैकल्टी की लाइब्रेरियन थीं। (ईरान में महिलाओं को 'खानम' कहा जाता है जो फ्रेंच के मादम के तुल्य है। श्रीमती और खानम में न ही भेद रहता है और न उस पर कोई ध्यान देता है। इस संदर्भ में भी फारसी फ्रेंच भाषा से साम्य रखती है।)

खानम सोरया बहुत ही सुसंस्कृत और रूपवती महिला थी। उनका चंपई रंग, बड़ी बड़ी काली आंखें, बिहारी की नायिका की सी थीं। उनमें कामसूत्र में वर्णित पद्मिनी नारी के सभी गुण थे। उन्हीं के अनुरूप डा० मक्सूद, सुदर्शन फ्रेंच-कट दाढ़ी-युक्त, कद में छोटे और हर समय पाइप पीते हुए वैज्ञानिक कम और दार्शनिक अधिक लगते थे। वैसे ईरानी, और विशेषकर तबरीजी, जिनमें काकेशश, तुर्क और ईरानी रक्तों का सम्मिश्रण है, यदि कहा जाए कि परम सुदर्शन होते हैं तो अतिशयोक्ति न होगी। इन दोनों की जोड़ी सारे तबरीज में विख्यात थी।

डा० अदबीली, डा० मक्सूद के विपरीत शीराज, जो गोलों[2] और बुलबुलों का शहर है और अपनी शीरी (मधुर) जुबान और बेहतरीन तहजीब के लिए विश्व प्रसिद्ध है, के निवासी थे। वह सदैव प्रसन्नचित्त और जीवन पूर्णरूपेण जीने की कला के लिए प्रसिद्ध थे।

तो बात सूप से चली थी और डॉ० मक्सूद के आ जाने पर कुछ रुक-सी गई थी। पर पुनः बातों की चर्चा में विश्व राजनीति, धर्म, ईश्वर और अंत में विज्ञान भी आ गया। डा० अदबीली का कहना था, "विज्ञान यद्यपि भवविधि उपयोगी है पर यह भस्मासुर की भांति है जो सर्वनाशकारी भी हो सकता है। यह इस बात पर निर्भर है कि कौन विज्ञान का किस प्रकार उपयोग करता है।"

'हां बात तो सही है" डा० मक्सूद बोले "आज मैं चाहूंगा कि डॉ० अदबीली अपना अमेरिका के विस्कानसिन विश्वविद्यालयवाला अनुभव आप लोगों को बताएं।"

भोजन करीब करीब समाप्त हो चला था। सभी लोग डाइनिंग टेबल से उठकर ड्राइंग रूम में बैठकर डॉ० अदबीली के अनुभव सुनने को उत्सुक थे। डॉ० अदबीली ने अपने पाइप को सुलगाकर कश खींचा और आंखें बंद कर अतीत गहराई में डूब से गए।

थोड़ी देर बाद आंखें खोलकर बोले, 'मैं विस्कानसिन विश्वविद्यालय में दर्शनशास्त्र में पी एच० डी० करने गया था। वहां अन्य ईरानी लोगों से भी भेंट हुई थी। हुस्नी भी उन्हीं में से एक थी। हम लोग सप्ताहांत में पार्टी देते थे। उसमें ईरानी, अमेरिकन और अन्य लोग भी (शिक्षक और

छात्र) जो वहा पर अध्ययनरत थे, आ जाते थे। सभी विषयों पर बातें होती थीं। ड्रिंक्स और डांस का भी आयोजन रहता था।

"कुछ ऐसा इत्तेफाक रहा कि पिछली दो पार्टियों में ईनिड मार्टोली, जो रेडिएशन बायोलॉजी[3] में शोध करती थी, मेरी नृत्य-संगिनी (डांसिंग पाटनर) थी। उसी से धीरे धीरे मित्रता बढी। हम लोग अकसर मिल लेते थे—कभी कॉफी पीते हुए या कभी पुस्तकालय मे। ईनिड सदैव मुसकराती रहती थी। पर व्यवहार में परम सयमित थी। मित्रता मित्रता की भांति थी, कुछ अन्यथा नही। पर एक आकर्षण था उससे बात करने में इसी कारण मैं थक जाने के बाद उससे गपशप करके पुन तरोताजा हो जाता था।

"तुम तो जानते हो, डॉ० मक्सूद, कि दर्शन परम आदरणीय विषय है। इस कारण मुझे थका देता था।"

'हा, हम कारेमन![4] मैं सहमत हू तुम्हारे कथन से, पर बात तो तुमने पूरी की ही नही।"

"हा, तो ईनिड से मेरी घनिष्ठता (जो घनिष्ठता किसी भांति नही थी) उसके अभिन्न मित्र जॉन रसेल को, जो उसका प्रयोगो म सहयोगी था अच्छी नहीं लगती थी। पर उसने कभी भी इस भावना को प्रकट नही किया।

"एक दिन तो हम लोग बातें करते बेंच पर बठे थे। उसी समय जान पास से गुजरा और ईनिड के हाथ हिलाने का जवाब भी नही दिया। ईनिड उदास सी थी। थोडी देर बाद हम लोग उठे। वह अपनी प्रयोगशाला और मैं पुस्तकालय की ओर चल दिया।

'यह ईनिड स मेरी अविस्मरणीय भेंट थी, क्योकि उसने मुझे अपना चुबन दिया था।

"प्रकृति के नियम भी बडे अजीब होते हैं। एक दिन मेरी भेंट एक परिचित के यहा हुस्नी स हुई, पर शायद विदेश मे एकाकीपन का प्रभाव था कि शीघ्र ही हम लोगो की भेंट अधिक होने लगी। ईनिड तो थी ही, हुस्नी और पास आ गई। कभी-कभी ईनिड बढे उखडे मूड मे मिलती उसका सबध जॉन के साथ पहले जैसा नही रह गया था। पर गाडी

रही थी। मैं तो ईनिड को मात्र सांत्वना दे सकता था। यह जानते हुए कि यह समस्या का निदान नहीं है मैं भी अधिक समय हुस्नी को देने लगा था और सम्भवतः इससे ईनिड का मानसिक तनाव बढ़ गया था।

"समय बीतता गया। एक बार कोई 4 मास बाद जब ईनिड से भेंट हुई तो वह बहुत नर्वस, कमजोर और पीली लगी। कई कारण हो सकते हैं इस समस्या के यह सोचकर मैं चुप रहा। मैंने जब ईरान वापस आने के पूर्व अंतिम बार उसे चिकित्सालय में देखा था तब उसने आंसू पोंछते हुए बताया था कि उसके शरीर में रेडियोधर्मिता बढ़ गई है।

"डॉक्टर का कहना था कि यह अत्यधिक रेडियोधर्मी तत्त्वों के सम्पर्क से हुआ है। और सम्भवतः यह रेडियोधर्मिता, जो उसके पेट में थी, भूल से रेडियोधर्मी घोल के पेट में चले जाने के कारण हुई होगी। यह बताकर ईनिड चुप हो गई थी।

'थोड़ा दम लेकर वह पुनः बोली थी, तुम तो जानते ही हो कि मैं प्रयोगों के प्रति कितनी सावधान रहती हूं। यह उसी अवस्था में सम्भव है जब कोई मेरे ड्रिंक में रेडियोधर्मी तत्त्व डाल दे। वह भी एक बार नहीं, लगातार। क्या कहूं तुम समझ सकते हो कि जॉन कितना गंदा व्यक्ति है। मैं ठीक हो जाऊंगी पर ईरान जाने के बाद मुझसे सम्बन्ध बनाए रखना। यद्यपि मैं स्त्री-पक्ष को पूर्णरूप न दे पाऊंगी फिर भी मैं तुम्हें चाहती हूं।'

तो दोस्तो" डॉ० अदबीली के चेहरे पर पुरानी चमक पुनः आ गई, "ईनिड से आज भी हम लोगों के समाचार बराबर बने हैं। वह आज जीवित है स्वस्थ है पर उसके बच्चे नहीं हो सकते।'

'यह तो बहुत बुरा हुआ!' सभी के मुख से निकल पड़ा।

'बस मैं ईनिड से विवाह करूंगा और जो कुछ उसमें जॉन ने छीन लिया है उसको दूसरी तरह से पूरा करने का प्रयास करूंगा।'

सबसे पहले खानम मोरैया ने डा० अदबीली को उनके साहस और प्रेम पर बधाई दी और अन्य लोगों ने उनकी सराहना की। बाद में डॉ० मकसूद बोले, "डॉ० अदबीली ने मानव द्वारा विज्ञान के दुरुपयोग का शुद्धीकरण कर एक बड़ा ही साहसपूर्ण प्रयास किया है। इस कारण

इन्हें लाख लाख बधाइया और मुबारकबाद।"

सबका गरम काफी का प्याला देते देख, मुसकराते हुए डॉ० जरीनतान ने कहा, "डॉ० अदवीली, सूप का उद्भव तो रह ही गया।"

डॉ० अदवीली ने अपने विशिष्ट अदाज मे हाथ उठाकर कहा, "मेरे दोस्त, अगली पार्टी तुम्हारे यहा हो, जो सूप से प्रारभ हो, मैं निश्चय ही इस शब्द का उद्भव तुम्हे सुनाऊगा, तब तक सबको शब ब खर[5]।" यह कहकर वह उठ खडे हुए।

1 जाम पीने के पूर्व स्वास्थ्य की कामना।
2 फारसी मे गुलाब को गोल कहते हैं।
3 रेडियोधर्मी विकिरण और जीवधारियो पर पडनेवाले उस के प्रभावो का अध्ययन करनेवाली जीव-विज्ञान की शाखा।
4 मेरे सहयोगी स्नेह सूचक—फारसी सबोधन।
5 शुभरात्रि फारसी सबोधन।

विष-कन्या

"यदि मुझे पेरिस मे कोई रेस्त्रा पसद है तो वह है मोपरनास का डोम और उसके बाद यदि किसी कैफे म बैठकर लोगो से बातें करने की पुन इच्छा होती है तो वह है डीजेन गोफ, तेलअवीव इजराइल के रोड साइड रेस्त्रा म जहा पर क्लारिस्टा पाईक से भेंट हुई थी ।'

'क्लारिस्टा पाईक की बात तो आप कई बार कर चुके हैं लेकिन आपने कभी यह नही बताया कि वह थी कौन ?" कोरिन ने मेरी बात काटते हुए कहा।

"उसकी याद करके जहा एक तरफ मैं बीते दिनो की यादो म डूब जाता हू, वही दूसरी तरफ मस्तिष्क की नसें यह सोचकर तन जाती हैं कि सौभाग्यवश मैं बच गया था, अन्यथा मैं यह सुनाने का वह भी पेरिस मे, मौका ही नही पाता।"

'काफी सस्पेंस हो गया है कुछ सुनाइए नही तो मैं चली ' कहकर कोरिन मेरी आखो मे झाककर मुसकराई और अगडाई लेकर चलने को तैयार हो गई।

'बठो तो ! सुनाता हू, पर काफी का बिल तो तुम अदा करोगी।"

'ठीक है।' कहकर कोरिन सुनने को उन्मुख हो गई।

'उन दिनो मैं इजराइल के एक बहुत ही महत्त्वपूण वैज्ञानिक सस्थान मे काय करने के लिए आमत्रित किया गया था। वहा मुझे कुल तीन मास रहना था। इस कारण पहुचने के तीसरे दिन से मैंने अपना शोध काय शुरू करने का निश्चय कर लिया था।

"मेरे गेस्ट हाउस मे विभिन्न देशो से आए वैज्ञानिक रहते थे। वह काफी ऊंचाई पर बना, मोरपंखिया, साइप्रेस और अन्य सदाबहार वृक्षो से घिरा, गुलाब की क्यारियो और अन्य सुदर पुष्पो से युक्त बडा ही रमणीक स्थान था। तुम जानकर आश्चर्य करोगी कि वहा पर मोरपंखिया तीस फुट से कम ऊंची नही होती और मदार के वृक्ष तो मेरी समझ मे पद्रह फुट ऊंचाई तक जाते हैं।

"मैं प्रात साढे सात बजे नाश्ता करने मेस हॉल मे चला जाता था। मुझे इजराइल की मछलिया और जैतून अति पसद है और ये दोनो मुझे प्रात नाश्ते म मिलते थे। बढिया कॉफी और जाफा की नारगियो का रस तो परम स्वादिष्ट होता था।

"हर दिन आठ बजे प्रयोगशाला मे पहुचना और कुछ विचार विमर्श कर काय की रूपरेखा तयार करना, फिर लच वहीं सेंटर पर लेना और शाम को तेलअबीब की डीजेन गोफ के रेस्ट्रा मे बातें करना नियम सा बन गया था। शनिवार को सभी रेस्ट्रा म देर तक बैठते थे, नाचते भी थे। और बिना ड्रिक्स के नत्य तो होता ही नहीं। उस रेस्ट्रा मे सामान्यत सभी आनेवाल परिचित से हो गए थे। जब कोई अच्छा साथी मिल जाता था तो मैं भी नृत्य कर लेता था।

"कौन सा शनिवार था याद नही, पर उस दिन रोज की अपेक्षा जल्दी आ गया था। बैठकर कुछ बोर होता हुआ मैं बियर पी रहा था। मेरे सामने की मेज खाली थी और मैं सोच-विचार मे इस प्रकार लीन था कि पता ही नही चला कि मेरे सामने कौन बैठा था। जब ध्यान आया तो मुझे अपने आप पर ही क्रोध आया। पर यह सोचकर कि सामने बैठी लडकी तो बडे तीखे नाक नक्शवाली है क्यो न इससे बात की जाए, मैंने उसकी ओर मुसकराकर देखा। उसकी बडी बडी आखो मे एक अजीब सी चमक थी। मैंने उसके पास जाकर पूछा, 'क्या मैं आपकी मेज पर बैठ सकता हू या आप मुझे अनुगृहीत कर मेरा आतिथ्य स्वीकार करेंगी ? यह मैंने शालीनता से पूछा था, उत्तर था, 'अवश्य, मैं आपके साथ बैठकर ही बियर पिऊ तो बोरियत कम होगी। एकाकी होने पर समय भी नही कटता।'

"मैंने उसे अपनी मेज पर आने का निमत्रण दिया और फिर हम लोग दूसरी बियर का ऑर्डर देकर बातें करने लगे।"

कोरिन अभी तक शांत थी। फिर बोली, "आपने यह तो बताया ही नहीं कि वह थी कौन और कैसी थी ?"

"हां, मैं भूल रहा था कि वह अतीव सुदर थी। हलके गुलाबी वर्ण में पीलापन लिए उसका रंग जहां चित्ताकर्षक था वहीं उसके होंठ पूर्ण रूप से विकसित थे। और वह छत्तीस, चौंतीस और अड़तीस के आकड़े पर खरी लग रही थी। बड़ी सुडौल और करीब पांच फुट चार इंच लबी रही होगी वह।"

"अरे वाह ! क्या याददाश्त है आपकी ! वायटल स्टैटिस्टिक तक याद है ! क्या मेजर किया था ?" कहकर बड़े शरारती ढंग से कोरिन हंसी और बियर का एक लबा घूंट लेकर बोली, "हां, तो फिर आगे सुनाइए।"

"तुम्हें ईर्ष्या नहीं होनी चाहिए। सुदर तो तुम भी हो पर लगता है कि पेरिस में महिलाएं कुछ ईर्ष्यालु होती हैं।" कहकर मैं भी हंस दिया।

"पर तुम तो औरतों के विषय में ईर्ष्यालु नहीं हो, मैं जानती हूं, इसी कारण हर सुदरी तुम्हें बरबस खींच लेती है।" कोरिन ने चुटकी ली।

"बियर और चलेगी, तभी मैं सुना पाऊगा। जानती हो तुम्हारी दूरी खलती है मुझे।"

"ओ ! स्वाइन, शटअप ! तुम क्या हो मैं जानती हूं पर जब तुम पूरी बात सुनाओगे तो तुम्हें कुछ मिलेगा। आई विल किस यू इन द एंड (चलते समय मैं तुम्हारा चुबन लूंगी)।"

ठीक है फूल नहीं तो पखुड़ी ही सही।"

इतने में बियर आ गई दो पिल्सनर[1] तीखी झागदार।

"चियर्स। हां तो मैं तुम्हें बता रहा था कि ब्लास्टा कितनी सुदर थी। अब उसके बारे में थोड़ा और।" कहकर मैंने दूसरा सिप लिया, पाइप का दम खींचा और धुए के बादल कोरिन के ऊपर छोड़ते हुए उसकी बगल में बैठकर बाकी बातें शुरू कीं।

"ब्लास्टा उसी दिन तेलअवीव में बर्लिन (पूर्वी) से आई थी और इसी संस्थान के दूसरे विभाग में उसे कुछ जटिल जैव रासायनिक

प्रक्रियाओं पर काम करना था। वह दो मास के लिए आई थी। मैंने उसे पिलाकर, नृत्य प्रारंभ होते ही नाचने का आग्रह किया। 'मैं थकी हूं पर कपनी दूंगी,' कहकर उसने बाहों में बाहें डालकर नृत्य करना प्रारंभ कर दिया। हम लोग 'टिवस्ट', 'पोल्का' और कुछ इजराइली डांस कर 'वाल्ज' के शुरू होने पर पूर्णरूपेण नृत्य में डूब गए थे। पर बीच बीच में बात कर लेते थे। क्लास्टा बर्लिन विश्वविद्यालय में अध्ययनरत थी। अच्छी वैज्ञानिक थी। यह उसकी बातों से लगता था। रात्रि के दो बजे तक हम लोग नाचते रहे। फिर तो, कोरिन, तुम्हें पता होगा ही क्या हुआ होगा?"

"ओ! यस, आई नो यू टुक हर टू योर एपार्टमेंट एंड स्लेप्ट। (तुम उसे अपने एपार्टमेंट में ले गए होओगे और उसके साथ सोए होओगे।) और क्या!" कहकर कोरिन मुसकराई।

"नहीं, इतना ही नहीं, वह भी वहीं उसी गेस्ट हाउस में रहती थी और मेरे संकेत करते ही वह तैयार हो गई थी।"

"हां, मुझे पता है यू नो हाऊ टू एक्साइट ए वोमेन, माई डियर! (किसी भी औरत को पटाना तुम अच्छी तरह जानते हो) रास्केल!" कहते कहते कोरिन मुझसे और सट गई।

बियर सिप करते हुए मैंने उसे स्नेह से देखकर कहानी पुनः प्रारंभ की, "करीब दो सप्ताह बाद एक दिन क्लास्टा ने फोन पर प्रो० गिसबग से मिलने की इच्छा प्रकट की। प्रो० गिसबग को तो तुम जानती ही हो। वह थानकोजीस[3] पर काम कर रहे थे और यह सारा कार्य अमेरिका की एम० आई० टी० के प्रो० रोमसस के सहयोग से हो रहा था। पहले तो मैं थोड़ा चुप रहा, पर बाद में क्लास्टा को आश्वासन दिया कि मैं प्रोफेसर से एपाइंटमेंट ले लूं तब उसे सूचना दूंगा।

'यह खास की बात है कि प्रो० गिसबग प्रयोगशाला में आए और हैलो' कर जब जाने लगे तो मैंने पूछा, 'क्या कल शाम को आपके पास समय होगा?'

'हां। हां। 4 बजे ठीक रहेगा?'

'ठीक रहेगा। प्रोफेसर, मेरी एक परिचित आपसे मिलना चाहती है। उसी के लिए समय चाहिए।'

"'यू आर वेलकम।' कहकर प्रो० गिसबग अपने कमरे में चले गए। मैंने ब्लास्टा को सूचना दे दी कि अगले दिन 4 बजे वह मेरे पास आ जाए। फिर उसे प्रोफेसर से मिला दूंगा।

'दूसरे दिन ब्लास्टा समय से आ गई। हम लोग प्रोफेसर के कमरे में चले गए। बातों के दौरान मैंने देखा कि प्रोफेसर ब्लास्टा की बातों और सौंदर्य—दोनों से प्रभावित होते जा रहे थे। और आधे घंटे बात करने के बाद मैंने उनकी आंखों में ब्लास्टा के लिए चाह देखी। ब्लास्टा ने धन्यवाद दिया और हम लोग बाहर आ गए। मैं अपने काम में लग गया और ब्लास्टा 'फिर मिलेंगे' कहकर चल दी।

"समय बीतता गया। ब्लास्टा से कई दिनों तक भेंट नहीं हो सकी। मैं भी व्यस्त था। फोन भी नहीं कर सका। एक दिन उसी रेस्ट्रां में ब्लास्टा से भेंट हुई। औपचारिकता के बाद उसने बहुत ही सहज ढंग से बताया कि आजकल प्रो० गिसबग उसमें काफी रुचि ले रहे थे। मुझे कुछ आश्चर्य नहीं हुआ। ब्लास्टा का आकर्षण किसी को भी खींच सकता था। यह जानने के बाद भी मैंने उससे पूछा कि उसका कार्य कैसा चल रहा है।

'ठीक ही है' संक्षिप्त सा उत्तर था, 'पर तुम्हारी आनकोजीस का क्या हो रहा है? प्रो० गिसबग बता रहे थे कि तुम एक विशेष आनकोजीस की रिकोर्डिंग[4] कर चुके हो।'

'सुनकर मैं चकराया कि प्रो० गिसबग तो दूसरे की बात करते नहीं, पर यह क्या संभव है? कुछ कहा नहीं जा सकता। मैंने कहा, 'बस चल रहा है।'

'इस पर ब्लास्टा हंसकर बोली, चकरा गए! मैंने तो यूं ही कुतूहल-वश पूछ लिया था। यह तो तुम जानते ही हो कि आनकोजीस का मात्र कैंसर से संबंध नहीं है वरन् उनके और भी उपयोग हैं।'

'हां, सो तो हैं ही।' मैंने अनमने मन से कहा। फिर इधर उधर की बातें होती रहीं और हम दोनों साथ साथ गेस्ट हाउस तक आए।

"सामान्य औपचारिकतावश मैंने ब्लास्टा को कुछ रुककर, कमरे में ... पीकर जाने का आग्रह किया तो उसने भी बड़ी अदा से स्वीकार

किया।

"मेरा कमरा, तुम तो जानती ही हो, कोरिन, बड़ा अस्त व्यस्त-सा रहता है। नोटस एवं किताबें बिस्तर से लेकर मेज तक फैली रहती है। कमरे में जाकर सबसे पहले ब्लास्टा से माफी मांगकर सारे नोटस एवं पुस्तकों को मेज पर लगाया और कुरसी खींचकर ब्लास्टा को बैठने के लिए कहा। मैं दूसरी कुरसी पर बैठा। कॉफी पाट में पानी और कॉफी डालकर मैं टायलेट गया और ब्लास्टा मेरी पुस्तकें एवं नोटस उलटने लगी। वापस आकर कॉफी पीकर हम लोग इजराइल के इतिहास पर बातें करते रहे और करीब एक घंटे बाद ब्लास्टा ने विदा ली।

"मैं प्रात लैब में जानेवाले नोटस को जब पलट रहा था, तो एक रिपोर्ट, जो मैंने प्रो० गिसबर्ग को देने के लिए तैयार की थी, मिल नहीं रही थी। प्रयोगशाला पहुंचने की जल्दी में, 'शाम को देखूंगा', सोचकर चला गया। सारे दिन प्रयोगों के परिणाम प्राप्त करने उनकी विवेचना तथा भविष्य में क्या करना है यही सोचता रहा। जब एक निश्चित पथ तय कर पाया तो शाम के नौ बजे थे। अपने कमरे में वापस आकर स्वल्पाहार कर घूमने निकल गया।

"दूसरे दिन प्रो० गिसबर्ग से कैंटीन में लंच के समय भेंट हुई। हम लोग एक ही मेज पर लंच कर रहे थे। मौसम तथा राजनीति की बातें हो रही थी। उसी दौरान प्रो० गिसबर्ग ने कहा क्या तुमने कोई रिपोर्ट मेरी मेज पर निरीक्षण के लिए भेजा था?

"सुनकर मैं कुछ देर तक चुप रहा फिर 'नहीं तो,' का संक्षिप्त उत्तर देकर मिठाइयां खाता रहा। बात रुक गई थी। हम लोग अपनी प्लेट आदि स्वचालित ट्राली पर रख प्रयोगशाला की ओर जा रहे थे। मेरे मस्तिष्क में लगातार यह प्रश्न गूंज रहा था कि मेरी रिपोर्ट गिसबर्ग के पास कैसे गई? अभी तो उनसे परिणामों के विषय में विचार विमर्श करना बाकी था।

"एकाएक मेरे मस्तिष्क में बिजली सी कौंध गई। हो सकता है, मुझसे रात्रि में विदा लेते समय ब्लास्टा मेरी रिपोर्ट भी लेती गई हो। दूसरे दिन उसने प्रोफेसर से मेरी रिपोर्ट एवं कार्य की चर्चा की हो और

वे लोग प्रयोगशाला " शीघ्रता के साथ कही चले गए हा। रिपोट पडी रह गई हो, प्रोफेसर गिसवग की मेज पर। क्लास्टा के आकषण म प्राफेसर पूरी तरह फस तो चुके ही थे।

प्रयोगशाला म प्रवश करन के पहले मैंने प्रोफेसर गिसवग स कहा, "मरी रिपाट आप अपनी सक्रेटरी को दे दें, वह मरे पास भेज देगी।'

' हा ठीक ह पर तुम्हार परिणाम बडे विशिष्ट हैं, जब चाहो तो एक व्याख्यान दे दो। फिर उसके बाद इस शोध काय का प्रकाशन के लिए भेज दू।'

' ओ 'यस '' कहकर मैंन धन्यवाद दिया और प्रयागशाला म चला गया। प्रयोग चल रहे थे, पर मन अशात था। कुछ स्पष्ट नही था कि यह क्या हुआ ? पुन कुछ विचार कर मैंन क्लास्टा को फोन किया, पर वह भूगत कक्ष मे प्रयोगरत थी। इस कारण जब भी वह आए तो मुझे फोन कर की सूचना उसकी सीट पर रखवा दी। तबीयत ऊब रही थी इसलिए पुस्तकालय मे जाकर कुछ नए जनल्स को देखता रहा। यह सारी प्रक्रिया पन्ना के उलटन तक सीमित थी। पढने पर ध्यान केंद्रित नही होता था। यो ही प न उलट पुलट रहा था कि पुस्तकालयाध्यक्ष ने आकर सूचना दी कि मरा फोन है। मैं तत्काल उठकर फोन पर गया। उधर म क्लास्टा फोन पर थी। औपचारिकता के बाद मैंन उस शाम को बियर पीने का निमत्रण दिया और उसने स्वीकार कर 8 बजे शाम को डीजेन गाफ के उसी पुराने रेस्ट्रा मे मिलने का वादा दिया।

'ठीक 8 बजे मैं वहा पहुचा और करीब दो मिनट बाद क्लास्टा भी आ गई। उसका सौन्य बिन गुलाब के फूला की भाति आकषक था और उसके स्कट-ब्लाउज भी बडे सुदर रगा के थे। वह वसी ही चित्ताकषक थी जसी पहली बार दिखी थी। मुझे तो ऐसा लगा कि इजराइल की हवा उसे रास आ रही थी। फलस्वरूप वह सौन्य की प्रतिमा सी हो गई थी।

उठकर, हाथ मिलाकर मेज पर हम दोना आमने-सामन बठे। दो बियर और कुछ स्नैक्स का आडर देकर मैं क्लास्टा की गहरी सागर-सी अथाह आंखों में झांकने लगा। एक क्षण तो ऐसा लगा जैसे जो उसके

हृदय में गुजर रहा है मैंने पढ लिया, पर दूसरे पल जब वह हँसकर मेरे हाथों को अपने हाथों में लेकर बोली, 'अरे! बहुत हो चुका, कुछ बोलो भी कि बस चुप बैठे रहोगे।'

'मेरे विचारों की शृंखला टूटी और बरबस कह उठा, 'ब्लास्टा! तुम्हें देखते रहने की इच्छा इतनी तीव्र है कि उसने मेरी वाक-शक्ति को क्षीण कर दिया है। तुम्हें देखकर तो बहुत सी चीजें भूल जाता हू।'

"इतने में बियर आ गई, 'प्रोस्ट' कहकर हमने गिलास टकराए और सुस्वादु बियर का सिप लेकर मैंने ब्लास्टा से पूछा कि उसका शोध कार्य कैसा चल रहा है? पहले तो ब्लास्टा कुछ रुकी, फिर बोली, 'ठीक ही है—दो सप्ताह और रहना है तेलअबीब में, फिर तो वापस बर्लिन जाना है। परिणाम बुरे नहीं हैं पर बहुत अच्छे भी नहीं हैं।'

"क्या बुरा है? इतने कम समय में कुछ परिणाम तो मिल ही जाते हैं। काफी है' मैंने कहा।

"'हां, ठीक है, क्या तुम और बियर नहीं लोगे?'

"'क्यों नहीं,' कहकर मैंने गारसा (वेटर) को बुलाया और एक कैलिफोर्निया वाइन की बोतल लाने को कहा।

'तुम तो जानती हो, ब्लास्टा, यह वाइन मुझे बहुत पसंद है। यह तो बड़ी सुस्वादु होती है।'

'वाइन का स्वाद लेकर हम लोग पहले म्यूजिक, फिर फिलॉसफी और फिर आनकोजीन (कैंसर पैदा करनेवाली पैतृक गुणयुक्त जीन) के विषय पर आ गए। इन बातों के बीच ब्लास्टा बोली, 'पता है तुम्हें, प्रो० गिंसबर्ग तुम्हारे काम से प्रभावित हैं। कह रहे थे कि यदि इस कार्य को आगे बढ़ाया जाए तो कैंसर की समस्या पर बड़ा प्रकाश पड़ सकता है। हो सकता है कि नोबेल पुरस्कार भी मिल जाए।'

"अच्छा पर यह बताओ कि तुम प्रो० गिंसबर्ग से कितनी नजदीक हो जो वह तुम्हें सब बता देते हैं?'

'कुछ अधिक नहीं, उतना ही जितना दो पॉजिटिव और निगेटिव तत्त्व हो सकते हैं।' बड़ी अदा से ब्लास्टा ने कहा। वाइन समाप्त हो चुकी थी।

"मन में क्लास्टा के विषय में संदेह तो था ही, पर क्या प्रो० गिसवर्ग भी ? यह प्रश्न बार-बार दिमाग में चक्कर काट रहा था। दोनों साथ साथ पैदल टहलते समुद्र का गर्जन सुनते अपने संस्थान वापस आए।

'रात में प्रो० गिसवर्ग की निगरानी करने का इरादा बनाया। दूसरे दिन मैं काम शीघ्र समाप्त कर प्रो० गिसवर्ग की कार के पास अपनी कार में बाइनाकुलर लेकर उनकी कार को स्टार्ट करने की प्रतीक्षा करने लगा। प्रो० गिसवर्ग करीब 8 बजे रात्रि में अपने चेंबर से निकल, कार स्टार्ट की और धीरे-धीरे तलअवीव के सेंटर से होकर ठीक उसी रेस्ट्रां के पास कार पार्क कर बियर पीने गए जहां पर मैं और क्लास्टा जाते थे। उन्होंने उसी गारसों (वेटर) जिसने हम लोगों को पिछले दिन बियर पिलाई थी से बातें कीं, कुछ पैकेट दिए और बियर पीकर फिर कार स्टार्ट कर अपने घर को चले गए। उनके घर जाने के आधे घंटे बाद मैं अपने एपार्टमेंट पहुंचा। रास्ते में खाने के लिए सामान ले लिया था, उसी से क्षुधा शांत की।

'दूसरे दिन कोई विशेष बात नहीं हुई। मेरी रिपोर्ट जो प्रो० गिसवर्ग के पास पहुंच गई थी वापस मिली। कुछ देर तक उसे देखता रहा, फिर उसे वापस लाकर कमरे में रख दिया।

तीसरे दिन फिर प्रो० गिसवर्ग को चेक किया, उस दिन तो बड़ा सस्पेंस रहा, कोरिन !"

हां हां ! मैं सुन रही हूं। तुम वह म्यूजिक सुन रहे हो जान बाएज गा रही है बड़ा सुंदर गाती है। तो फिर क्या हुआ बताते चलो।'

'आयम माईट्नी बड प्यार !" कहकर मैंने अपने पाइप को साफ कर कश खींचा और बयान के पहले कोरिन से पूछा क्या शैंपेन चलेगी ?

चल तो सकती है पर छोटी बोतल।'

तुरंत शैंपेन बर्फ में रखकर आ गई कुछ सी फूड' (समुद्री भोजन) और सलाद भी। कोरिन को धीरे से चुंबन कर मैंने कहानी प्रारंभ की—

"प्रो० गिसवर्ग फिर ठीक आठ बजे उसी रेस्ट्रां में गए। वहां क्लास्टा भी थी। प्रोफेसर कुछ जल्दी में थे। उन्होंने बाइन पी क्लास्टा को एक

पैकेट दिया और ब्लास्टा के साथ चल दिए। गाड़ी मे वे दोनो बैठे और गाडी तेजी से प्रा० गिसबग के घर जाकर उनके पोच मे रुकी। ब्लास्टा और प्रोफेसर कमरे मे गए।

"मैं भी अपनी कार मे बैठा प्रतीक्षा करता रहा कि देखें ब्लास्टा कब वापस आती है। करीब दो घट बाद ब्लास्टा और प्रो० गिसबग बाहर पोच मे आ गए। दो मिनट भी नही हुए होगे कि एक दूसरी कार प्रोफेसर के घर की ओर आती दिखी। उसने तीन बार डिपर जलाया बुझाया।

"ब्लास्टा प्रोफेसर के घर से निकलकर सडक पर आ गई। उस कार का दरवाजा खुला था। ब्लास्टा पीछे की सीट पर बैठ गई और गाडी चल दी। वह नई पीजो कार थी। मैं भी उसके पीछे धीरे धीरे चला, इस तरह कि अगली कार के चालक को शक न हो कि उसका पीछा किया जा रहा है।

"उसी रेस्ट्रा क पास गाडी रुकी। ब्लास्टा उतरी और साथ साथ कार का चालक भी। देखकर मुझे बडा आश्चय हुआ कि यह तो वही बेयरा था। उससे ब्लास्टा ने कुछ बात की और एक बहुत छोटा पैकेट दिया। फिर जरमन मे बात कर, उससे 'गुटेन नाखत' (शुभरात्रि) कहकर विदा ली। ब्लास्टा धीरे धीरे चलती सिटी सेंटर तक आई। एक टैक्सी रोकी। एपाटमेट मे आई। जब वह अपने कमरे मे चली गई, उसके दस मिनट बाद मैं भी अपनी कार पाक कर अपन कमरे म गया। कपडे बदले। वाइन की एक बोतल निकाली और उसे स्वाद ले लेकर पीता हुआ जो कुछ देखा था उसी पर मनन करता रहा। रात काफी बीत गई थी। बाहर थोडी दूर तक भूमध्य सागर की भीगी हवा का आनद लेकर कमरे में आकर सो गया।

"इतना तो स्पष्ट हो गया था कि ब्लास्टा सामान्य वज्ञानिक नही थी। वह रेस्ट्रा का गारसा (बेयरा) भी किसी विशेष काय के लिए वहा था। प्रो० गिसबग ब्लास्टा से प्रभावित थे। इस कारण उसका साथ द रहे थे। स्वत वह इस काय (जिसकी विशेषता करीब करीब स्पष्ट थी, वैज्ञानिक चोरिया वज्ञानिक ढग से) मे ब्लास्टा स पहल रत थे। ब्लास्टा मात्र उनकी सहयोगिनी थी कुछ समय के लिए। पर वास्तव मे उसका क्या रोल था, पता नहीं चल रहा था। मेरी रिपोट ब्लास्टा तब तक तो ले गई,

पर उसके बाद क्या उसकी माइक्रोफिल्म कहा और गई ? कितना पसा मिला था ? क्या दूसर सुपर पावर के लोग इसका उपयोग कसर किट बनाकर करेंगे या कुछ और विचार है उनका ? उपयोग मानव मात्र क भल के लिए या मानव विनाश के लिए ? जीस का दुरुपयोग तो मानव को दानव भी बना सकता है।

'अब मुझे ब्लास्टा स भय सा लग रहा था। वह निश्चित रूप स एक विशेष सुपर पावर की जासूसी गतिविधियो स जुडी थी। पर मैं क्यो अपना सिर खपाऊ। मेर लिए तो ब्लास्टा अब अपन वास्तविक स्वरूप म स्पष्ट था ही। यह सोचता हुआ शाम को जब प्रयोगशाला से निकल रहा था तो ब्लास्टा से भेंट हो गई। वह बडी शालीनता स मुसकराई और बोली, यदि अपने एपाटमट जा रहे हो तो मुझे लिफ्ट द दो। मैं भी थकी हू, अपने एपाटमेट म जाऊगी।

" श्योर।' कहकर मैंन उसे कार मे बैठाया और दस मिनट की यात्रा के बाद एपाटमट आ गए। ब्लास्टा धन्यवाद देकर चल दी और मैं भी कार पाक करके लॉन मे बैठा यह सोच ही रहा था कि आज क्यो न ब्लास्टा पर निगाह रखी जाए। उसी समय प्रो० गिसवग की कार आती दिखी। मैं तुरत उठा और दूसरी ओर मुख कर बठ गया। प्रोफेसर कुछ लडखडाते से उतरे, ब्लास्टा के कमरे म जात दिखे और फिर ब्लास्टा क कमरे का दरवाजा बद हो गया।

'मैं फिर ध्यान लगाए बाइनाकुलर लिए बठा, दरवाज के खुलने का इतजार करता रहा। समय धीरे धीरे बीतता जा रहा था। करीब एक घट बाद प्रोफेसर गिसवग और ब्लास्टा निकल। साथ साथ नीचे आए। प्रोफेसर अपनी गाडी म बठे और ब्लास्टा भी उन्ही क साथ चल दी। मेर पास कार निकालकर पीछा करन का समय नहीं था। इसी कारण वहा पर बठा ब्लास्टा की प्रतीक्षा करता पाइप पीता रहा। रात्रि क बारह बज गए पर ब्लास्टा नही आइ। मैं भी उस कोसता कमर म चला आया।

'दूसरे दिन प्रयोगशाला देर से पहुचा। मज पर एक सूचना रखी थी कि कल गिसवग अपने घर पर ब्लास्टा के सम्मान म एक भोज देंगे। ब्लास्टा तीसर दिन यानी रविवार को पूर्वी बर्लिन चली जाएगी। अब

देखें क्या होता है यही सोचकर काय करने लगा ।

"प्रोफ़ेसर के सुदर मकान पर पार्टी का आयोजन था । सभी अतिथि आ गए थे । शपेन, वाइन, व्हिस्की, स्नक्स, कैवियर, ओलिव (जैतून), चीज (पनीर) और सालेमन (एक प्रकार की मछली) तथा रोस्ट पोक सभी स्वाद म खा रहे थे तथा बातें कर रहे थे ।

"यह तो तुम जानती ही हो, कोरिन, कि प्रोफ़ेसर की पार्टी मे कुछ लोग कुछ न कुछ तोहफे ले गए थे। मैंने अपनी फेवरिट नयनिया की वाइन और ब्लास्टा ने प्रोफ़ेसर को शैपेन (फ्रेंच) की बोतल भेंट की थी। करीब बारह बजे प्रोफ़ेसर गिसबग ब्लास्टा के पास आए। हाथ मे वाइन का चपक लिए बातें कर रहे थे कि ब्लास्टा बाली, 'प्रोफ़ेसर, मै आपके सम्मान मे शपेन खोलना चाहती हू, लेंगे ?'

''अवश्य, कहकर प्रोफ़ेसर ने ब्लास्टा को उसकी लाई बोतल पकडा दी। वफ मे रखी ठडी शपन की बोतल का काक ब्लास्टा न बडी नजाकत से खोला। वह तेजी से उडकर प्रो० गिसबग, जो उसके पास ही खडे थे, की कनपटी पर जा टकराया ।

" आई एम सॉरी,' कहकर ब्लास्टा ने पहले उन्ह शपेन दी और प्रोफ़ेसर ने अपनी कनपटी पर लगे कॉक क स्थान को रूमाल स पोछकर शैपन ली। मुझे लगा कि प्रोफ़ेसर की कनपटी पर रक्त की एक बूद अब भी लगी थी। पर उस वातावरण मे कौन ध्यान देता । सभी मस्त थे ।

"पार्टी 2 बजे रात्रि तक चलती रही । मैं सबसे पहल जानेवाला मे था और सबस बाद मे गई ब्लास्टा, जैसाकि दूसरे दिन मुझे पता चला। प्रोफ़ेसर गिसबग उस दिन प्रयोगशाला मे नही आए। पता चला कुछ अस्वस्थ हैं।

'काय अधिक था, इस कारण इस ओर ध्यान नहीं गया। दूसरे दिन भी प्रोफ़ेसर के न हाने पर चिता बढी । उन्ह फोन करने जा रहा था कि ब्लास्टा का फोन आ गया कि आज शाम को एक या दो घटा हम लोग साथ बिताए। उसे रविवार को जाना था और यही था मात्र एक दिन, मन न चाहते हुए भी स्वीकृति दी। मिलने का स्थान वही रेस्त्रा तय हुआ।

'जब मैं वहा पहुचा तो ब्लास्टा उपस्थित थी। वह बड़े सुरुचिपूर्ण ढग से कपड़े पहने थी। पर उसके चेहरे पर थकान काफी स्पष्ट थी। दिन भर प्रयोगशाला म काम थकानेवाला रहा होगा। ब्लास्टा ने तत्काल मेरी प्रिय नथनिया वाइन तथा कुछ स्नक्स का आडर दिया और इधर उधर की बातें करने के बाद एक सीधा सवाल किया कि क्या मैं उसे अपने प्रयोगो के विषय म विशेषकर कमरजीस (आनकोजीस) के विषय मे बताना पसद करूगा।

हा,' मेरा सीधा उत्तर था, 'आनकोजीम की सरचना जानने के बाद कसर के डिवनन किटस परीक्षण हेतु बनाए जा सकते ह और यह करोडो डॉलर का व्यापार द सकता है, उस देश को जो इसके प्रथम चरण मे सफलता प्राप्त कर ले।'

" अरे वाह ! तुम्हारा काय तो परम श्लाघनीय है।'

" 'हा, मेरे सिद्धात म शोध सदव उपयोगी होनी चाहिए। मैं तुम्हारे विचारो मे सहमत हू।' इसके बाद हम करीब तीस मिनट तय कर अपने एपाटमेट पर चले आए। ब्लास्टा मेरे साथ कार मे आई और शुभरात्रि कहकर विदा ली। मैं भी शावर स्नान लेकर सोने का उपक्रम करने लगा।

अब ब्लास्टा का स्वरूप स्पष्ट था। जब दूसरे दिन प्रयोगशाला म पहुचा तो पता चला कि प्रा० गिलबग अस्पताल म है और चिकित्सको का विचार है कि यदि उनके रक्त मे सफेद रक्त कोशिकाओ की सख्या म कमी इसी प्रकार बनी रही तो उनकी जीवनलीला शीघ्र समाप्त हो जाएगी। सारे प्रयास उन्ह जीवित रखने के लिए किए जा रहे थे। रक्त के कणसमूहो को अलग कर उन्ह विशेष रूप स श्वेत रक्त कोशिकाए दी जा रही थी।

'रविवार को ब्लास्टा को विदा करने जब हवाई अड्डे पर पहुचा तो ब्लास्टा उस बवरे से बातें कर रही थी। उसके चेहरे पर तनाव था, पर मुझे देखकर वह सयत होती हुई मेरी तरफ चली आई और दूसरा व्यक्ति उस भीड म कहीं गुम हो गया। औपचारिकता के बाद मैंने उसे प्रो० गिलबग के विषय मे बताया तो वह बडी सहजता स बोली, 'लगता है फूड पॉयजनिंग हो गई है'।

" 'हो सकता है, पर श्वेत रक्त कोशिकाओं में कमी क्यों हो रही है ? क्या सोचती हो इसके बारे में ?'

" 'पता नहीं,' उसका संक्षिप्त सा उत्तर था।

"मैं भी चुप लगा गया। फिर कोई दस मिनट बाद वह फ्लाइट के लिए अंदर चली गई और मैं भी उसे विदा देकर वापस एपार्टमेंट चला आया। शाम को अंग्रेजी फिल्म देखने चला गया और जब लौटकर आया तो नींद से आंखें बोझिल थीं।

"प्रात जब प्रयोगशाला में पहुंचा तो पता चला कि प्रो० गिंसबर्ग की हालत चिंताजनक है और हो सकता है कि वह 24 घंटे तक ही जीवित रहें। उनके संबंधियों को सूचित कर दिया गया। अब तो मुझे विश्वास हो चला था कि प्रोफेसर गिंसबर्ग बचेंगे नहीं। पर क्या यह विष का प्रभाव था ? पता नहीं।

"समय की गति बड़ी तीव्र होती है। जिस दुखद घटना का आभास था, वही हुई। प्रो० गिंसबर्ग ने अस्पताल में अपना दम तोड़ दिया। पर जब उनके शव के पोस्टमार्टम की रिपोर्ट आई तो सारी बातें स्वत प्रकाश में आ गईं। रिपोर्ट के अनुसार प्रोफेसर की मृत्यु रेसिन नामक विष से हुई है। यह अरंड (कैसटरबीन) के फल से निकाला गया था और किसी बहुत पतली सूई से उनके शरीर में लगाया गया था।

"मेरी आंखों के सामने प्रोफेसर गिंसबर्ग की कनपटी पर एक बूंद खून का दिखना घूम गया जो उस शैंपेन की बोतल के कॉर्क के निकलने से और उनकी कनपटी पर टकरा जाने से दिखाई पड़ा था। तो यह घटना क्लास्टा की शैंपेन की बोतल के कॉर्क में छिपी सूई से छिपे विष के कारण हुई जो उछलकर प्रोफेसर की कनपटी पर लगी थी। तुम तो जानती ही हो, कोरिन, कि रेसिन नामक विष से मनुष्य तड़प-तड़पकर धीरे धीरे 96 घंटों के भीतर मर जाता है।"

"यह तो मैंने भी पढ़ा है," कोरिन बोली "तो फिर क्या परिणति रही ?"

"प्रोफेसर की मेज पर कसर किट बनाने के सारे कागजात बेतरतीब पड़े थे। यह उनकी सेक्रेटरी बता रही थी। लगता था जैसे कोई

जल्दी में कुछ तलाश रहा था। तुम समझ सकती हो सारे कागजातों की फिल्म बना ली गई और उसका उपयोग होगा। कोई कर ही क्या सकता था। चिड़िया तो उड़ गई थी। और प्रोफेसर गिंसबर्ग तो इस लोक में रहे नहीं। पर क्लारिस्टा की नशीली आंखों में भरा विष मुझे भयभीत करता है। न जाने कौन-सी सुंदर दिखनेवाली युवती विष कन्या हो।" कहकर मैं चुप हो गया और बेयरे को बिल दे दिया। इस पर तत्काल कोरिन बोली, "डरो मत, मैं विष कन्या नहीं हूं क्योंकि मैंने विष से किसी को नहीं मारा है आज तक।"

"हां, यह तो मानता हूं" मैंने कहा, ' तुम्हारी मुसकान ही जान लेने को काफी है। आओ, चलें, रात्रि में एफिल टावर देखें, फिर विदा लें।"

1 प्रसिद्ध जर्मन बियर।
2 विभिन्न प्रकार के नृत्य।
3 आनकोजीस वे जीस (पैतृक गुण धारण करनेवाली जैव रासायनिक यूनिटस) जिनका संबंध कैंसर उत्पन्न करने से है।
4 जीस या आनकोजीस में अमीनो एसिडस एक विशेष क्रम में लगा होता है। इसको स्पष्ट करना—जैव-रासायनिक प्रक्रियाओं द्वारा, डिकोडिंग कहलाती है। डिकोड से तात्पर्य है किसी रहस्य को स्पष्ट करना।
5 कैंसर किट (डिटेक्शन) वह रासायनिक, जैव रासायनिक सम्मिश्रण, जिसमें व्यक्ति विशेष के मूत्र या रक्त को डालकर जो परिवर्तन होते हैं वे कैंसर से संबंधित हैं या नहीं का विश्लेषण किया जाता है।
■ हिब्रू में शुभरात्रि को 'लैला तोव' कहते हैं।

फोबोस[1]

ऐलिजाबेथ से अजीब तरह से भेंट हुई। चूंकि वह भी विचित्र थी। अत यह मुलाकात भी वैसी ही थी। हुआ यह कि एक दिन मैं लिफ्ट से अपने कमरे म जा रहा था तो एक महिला जो करीब 6′-3 लंबी, दुबली पर सुदर, घुघराले बालोवाली थी, लिफ्ट मे जा रही थी। मैं उसे देखकर कुछ कहने की सोच ही रहा था कि वह बोली, "क्या भारत से आए हैं ?"

मैं इस सटीक शिनाख्त पर चकित हुआ तो वह स्वत कहने लगी, 'मैं सूडान से यहा पर एस्ट्रोनामी सेमिनार म हिस्सा लेने आई हू। आप क्या कर रहे हैं यहा ?"

मैंने उसे बताया कि मैं वसर वैज्ञानिक हू और यहा और 6 मास रहूगा।

"तो हम फिर मिलेंगे," कहकर जिस तेजी से उसने बातें की, उसी तेजी म वह लिफ्ट से निकल गई और मैं सातवी मजिल पर जा पहुचा। पर उसकी मुखरता और अजीब रग मुझे काफी देर तक याद रहे।

नए लोग रोज मिलते हैं। अत जब तक कुछ विशेष परिचय न हो तो उसका महत्त्व ही क्या रहता है ? मैं भी भूल गया था।

एक दिन शाम को हम सभी लोग बैठकर टेलीविजन देख रहे थे। एका-एक ऐलिजाबेथ आई और कुरसी उठाकर धीरे से मेरी बगल मे बैठ गई। अभिवादनोपरात हम लोग चुपचाप टेलीविजन पर समाचार देखते रहे। वह इस बीच सिगरेट से धुए के छल्ले निकालती रही। समाचारो के साथ

हम लोगों की बात शुरू हुई। पता चला कि उसे भी फ्रेंच नहीं आती। उसी दौरान उसने बताया कि उसकी मां मिस्र (इजिप्ट की श्वेत) की कॉप्ट क्रिश्चियन थी और पिता सूडान की एक विशेष जनजाति का नीग्रो। अतः उनके रक्तों के मिश्रण से ऐलिजाबेथ इस विचित्र रंग को पा गई थी। इसीलिए ऐलिजाबेथ बड़ी आकर्षक थी और विशेषकर जब वह बातें करते करते अपनी हिरनी की भांति बड़ी बड़ी आंखों में सामनेवाले की आंखों में झांक लेती तो लगता था कि सामनेवाले का रक्तचाप बढ़ गया। उस शाम के संक्षिप्त परिचय के बाद हम लोग सप्ताह में एक दो बार मिल जाते और मौसम, कुशल क्षेम की वार्ता के बाद हम लोग चल देते।

एक दिन बर्फ बहुत गिरी थी। अतः शाम को कहीं आना जाना कठिन था। मैं भी अपने पाइप को साफ करके नीचे आया और उसमें तंबाकू भरकर कश लगाया था कि एलिजाबेथ भी आ गई। अब हम लोग एक से दो थे। बातें शुरू हो गई। मैंने उससे सूडान के विषय में अनेक प्रश्न कर डाले। उसने हर प्रश्न का उत्तर बड़ी बुद्धिमत्ता से दिया। लगता था वह विकासशील देशों के तथ्यों से परिचित थी। भारत के विषय में मैंने उसकी जिज्ञासा शांत करने का पूरा प्रयास किया।

अंत में वह मुझसे कहने लगी कि क्या मैं उसकी कुछ सहायता कर सकता हूं।

"हां! हां! क्यों नहीं" मैंने कहा "पर करना क्या है?"

इस पर वह कहने लगी, "मुझे साड़ी पहनने का शौक है। मैं साड़ी पहनना किससे सीख सकती हूं?"

मैंने उसे आश्वस्त करते हुए कहा "मैं किसी भारतीय स्त्री से तुम्हारा परिचय करा दूंगा। वह तुम्हें साड़ी पहनना सिखा देगी।"

उसने धन्यवाद देकर सिगरेट सुलगा ली।

दूसरे दिन मैंने उसका संपर्क एक मित्र की भारतीय पत्नी से करा दिया। ऐलिजाबेथ प्रसन्न थी। एक दिन मैं भोजन करने जा रहा था तभी ऐलिजाबेथ भी अपने हाथ का बना भोजन लेकर आ गई। वह मेरी ही मेज पर बैठी। अतः मैंने उसे थोड़ा-सा मुरगा और दो प्याज दे दिए जिन्हें बड़ी प्रशंसा से लेकर खाया। उसने मुझे सूडानी ढंग से बनाई मछली

खाने को दी। यह भारतीय मछली बनाने की विधि से सिर्फ इसी बात में भिन्न थी कि उसकी बनाई हुई मछली में तेल कम था तो मसाले भी कम, पर इलायची और लवंग की महक से भरपूर थी। मैंने भी उसके भोजन की प्रशंसा की।

इस प्रकार हम लोग अधिक पास आए तो एक दिन मैंने ऐलिजाबेथ से उसके एस्ट्रोनामी के विशेष सेमिनार के विषय में पूछ लिया। वह कहने लगी, 'एक दिन मेरे साथ मेरी यूनिवर्सिटी में चलो। वहीं पर तुम्हें बताऊंगी।"

मैंने भी स्वीकार कर लिया। तय हुआ कि मैं उसके विभाग में दो दिन बाद पहुंचूंगा। वह भी करीब 4 बजे शाम को।

जब मैंने उसके विभाग में जाकर उसके दरवाजे को खटखटाया तो सिगरेट हाथ में पकड़े वह मेरे स्वागत में खड़ी हो गई। मेरे कुरसी पर बैठते ही उसने अरब की सुगंधित बढ़िया काफी (जो गाढ़ी और खूब शक्करायुक्त होती है) सामने रख दी। उसका स्वाद लेते हुए मैंने बातें आरंभ करने का विचार किया, पर इसके पूर्व ऐलिजाबेथ ने मुझसे पूछा, "तुम्हें एस्ट्रोनामी में रुचि कैसे है ? ' मैंने मुसकराते हुए उत्तर दिया, "तुम्हें देखकर।"

"आह, वैरी इंट्रेस्टिंग," कहकर वह रुक गई।

फिर मैंने उससे उसके सेमिनार के प्रोजेक्ट के विषय में जानने की इच्छा प्रकट की तो वह डनहिल सिगरेट का एक जोरदार कश लेकर कहने लगी, "तुमने मंगल ग्रह का नाम सुना ही होगा और तुम्हें यह भी पता होगा कि आजकल हम लोग क्लासिकल टेलिस्कोप का प्रयोग नहीं करते। पर आवश्यकता पड़ने पर रेडियो टेलिस्कोप तथा विशिष्ट गणनाएं कम्प्यूटरों से करते हैं तथा इनके उपयोग से गणनाएं अधिक आसान एवं इनके परिणाम अधिक ग्राह्य हो गए हैं।"

यह तो ठीक है पर तुम्हारे विचार से मंगल ग्रह पर जो नहरें दिखाई देती हैं वे क्या हैं और यह तथ्य कितना सत्य है ? '

यह सुनकर ऐलिजाबेथ मुसकराकर बोली, "अरे, आप तो शिआपारेली की 1899 ई० में प्रतिपादित कैनाल थ्योरी की बात कर रहे हैं। अब इसे कोई नहीं मानता कि वे मंगलवासियों की कृतियां हैं। इस सिद्धांत के

प्रतिपादक के विषय मे यह धारणा है कि उसने कुछ विशेष कारणो से अपने इस सिद्धांत का प्रचार किया होगा ।

"वास्तविकता तो यह है कि मगल ग्रह पर दो प्रकार की प्राकृतिक सतहें है। एक वह है जिसमे वहा की जमीन का घनत्व कम है तथा जिसे हम रेगिस्तान कहते हैं। इसमे आयरन के ऑक्साइड का बाहुल्य है और इसी कारण यह मगल ग्रह को लाल रग प्रदान करती है। वह भाग जो धरती पर से गाढे रग का दिखाई देता है, उसे हम समुद्र कहते हैं। यह बहुत सभव है कि इस आयरन ऑक्साइडवाले भाग म कभी पानी रहा हो और जीवधारी भी रहे हो। आज यह सूखा है। तुम्हें जानकर आश्चय होगा कि उस समय जब मगल ग्रह पर पानी रहा होगा तो उसका वातावरण बहुत कुछ आज की धरती के समान रहा होगा।

"पर आज मगल पर ऑक्सीजन का नही कार्बन डाई ऑक्साइड का बाहुल्य है। पृथ्वी की हवा मे कार्बन डाई ऑक्साइड का अनुपात और दबाव हमारी पृथ्वी की तुलना म 1/100वा भाग है और इसका चुबकीय क्षेत्र पृथ्वी की तुलना मे 1/3000वा हिस्सा है। ये सब सूचनाए हम खगोलशास्त्रियो को अमेरिकी उपग्रह मरीनर 4 मैरीनर-6 और मैरीनर 9 द्वारा मिली हैं। मैरीनर-9 ने मगल के दोनों उपग्रहों—फोबोस और डेमीनास के विषय म जो सूचनाए दी हैं, वे भी कम रोचक नहीं हैं।

'मगल का जो फोबास नामक उपग्रह है वह चौडाइ म 21 कि०मी० और लबाई मे 25 किलोमीटर है तथा दूसरा डेमीनास 12 किलोमीटर लबा और 13 किलोमीटर चौडा है। इनकी उत्पत्ति के बारे म खगोलशास्त्रियो की यह मान्यता है कि ये 'एस्ट्रोरॉयड' हैं जो मगल ग्रह के गुरुत्वाकर्षण क्षेत्र म आने के कारण उसकी परिक्रमा कर रहे हैं। वैज्ञानिक इन उपग्रहों और विशेषकर मगल ग्रह के विषय मे खोज को नया स्वरूप देने के लिए एक अतरिक्ष यान इस ग्रह पर भेजने की तैयारी म लगे हैं। यह यान वैज्ञानिको को सभी सूचनाए देगा। इस मिशन के द्वारा मगल की सतह पर जो यान उतरेगा वह दो प्रकार के यत्रो से युक्त होगा। एक टिड्डे की तरह कूद कूदकर चलनेवाला रोबोट होगा, तो दूसरा मगल ग्रह की सतह पर रुककर इस चलनेवाले रोबोट को निर्देश देगा कि वह

ग्नि क्षेत्र में आकर वहां के भू गर्भ में स्थित गुफाओं, पहाड़ों, ज्वालामुखियों, नहरों और रासायनिक व भौतिक स्थिति के विषय में सूचना देगा। साथ ही वह प्रथम यंत्र द्वारा एकत्रित सूचनाओं का विश्लेषण कर धरती के केंद्र को भेजेगा। वहां इनका अध्ययन होगा। रासायनिक अध्ययन के लिए इस रोबोट में एक लेसर गन लगी होगी जो एक सेकंड में एक करोड़वें भाग के लिए दागी जाएगी। इसके द्वारा एकत्र किए गए मंगल की धरती के नमूनों को सुखा दिया जाएगा। यह सूखी गैस मास-स्पेक्ट्रोमीटर[3] में जाकर विश्लेषण के बाद सूचना देगी कि कौन-कौन से तत्त्व मंगल और उसके उपग्रहों में विद्यमान हैं। इनमें से किसकी कितनी अधिकता है तथा उसे मानव के उपयोग में कैसे लाया जाए।

"इतना ही नहीं स्थिर रोबोट टिड्डे की भांति चलनेवाले रोबोट को मंगल के फोबोस उपग्रह पर जाने का निर्देश देगा और सूचनाएं इकट्ठी करेगा।"

मैंने पूछा, "यह तो बताओ कि मंगल पृथ्वी से कितनी दूर है?"

ऐलिजाबेथ ने बताया, "मात्र 200 मिलियन किलोमीटर दूर है और तीव्रतर राकेट द्वारा छोड़े जाने पर यान को मंगल तक पहुंचने में करीब 4 मास लगेंगे। इस क्रम से यदि प्रयास चलता रहा तो मंगल ग्रह और उसके उपग्रहों के विषय में अनेक सूचनाएं ही नहीं मिलेंगी वरन् यह भी पता चलेगा कि उस पर जीवन की संभावनाएं हैं अथवा नहीं। मुझे आशा है कि जब अंतरिक्ष में आने और जानेवाले राकेट और उनके यात्रों का पूरा विकास हो जाएगा तो मंगल और अन्य ग्रहों से वहां के खनिज पदार्थ, धातुओं, जीवाश्म आदि धरती पर लाए जा सकेंगे और 21वीं शताब्दी के मध्य तक अंतरिक्ष में मानव विचरण कर सकेगा।"

ऐलिजाबेथ की सिगरेट बुझ गई थी। उसकी राख झाड़कर थोड़ी देर रुककर वह कुछ सोचने सी लगी। उसी बीच मैंने कहा "तुम्हारा रंग भी मंगल ग्रह के रंग से मिलता है ऐलिजाबेथ, जो मुझे बहुत पसंद है। पर यह तो बताओ कि तुम्हारे कितने सटेलाइट हैं?"

यह सुनकर वह किंचित् सहास्य बोली, "यह तो मुझे पता नहीं पर एक तो निश्चित है और वह भी सामने बैठा है, मंगल के गुरुत्वाकर्षण

आकृष्ट होकर।"

"अरे वाह ! यह सौभाग्य तुमने मुझे दिया, ऐलिजाबेथ, इसका मैं आभारी हू। पर फोबोस मगल के धरातल पर 500 लाख वर्षों के बाद गिरकर टूट जाएगा और मैं भी तो तुम्हारा सेटेलाइट हू। मेरे बारे मे तुम्हारा क्या विचार है ?" कहकर मैं मुसकरा दिया।

एलिजाबेथ बोली, 'यह तो तुम जानो।"

हम लोग उसके कमरे से बाहर आ गए। आखिर मगल ने फोबोस को आकृष्ट कर ही लिया।

1 फोबोस ग्रीक भाषा मे छोटा चद्रमा, मगल के एक उपग्रह का नाम।
2 ऐस्ट्रारायड अतरिक्ष से आए पिंड जो किसी विशेष ग्रह के गुरुत्वाकर्षण मे फसकर उसकी परिक्रमा करने लगते है।
3 एक विशेष यत्र।

एक्स-रे

आज जब यूरोप से बहुत दूर बैठकर पेरिस म बिताए उन दिनो की डायरी के प ने उलटता हू और डा० कातान्या के दुष्कृत्यो के विषय में सोचता हू तो लगता है जैसे मैंने अपने देश वापस आकर पुन जीवन प्राप्त किया हो। आज भी मुझे अच्छी तरह याद है कि उनकी प्रयोगशाला म शोध काय करने के निमत्रण पत्र कितने शालीन होते थ। जितनी शीघ्रता से उनके पत्रो के उत्तर आते थे उनसे लगता था कि वह बहुत ही प्रतिष्ठित वज्ञानिक है। उनका विज्ञान जगत मे बहुत आदर है। पर वास्तव मे वह ऐसी नही थी।

मुझे आज भी याद है जब पहली बार डा० कातान्या से फ्रास के एयरपोट पर मेरी भेंट हुई थी। वह वहा मुझे लेने आई थी। एयरपोट पर उतरकर मुझे एक घटे तक उनकी प्रतीक्षा करनी पडी थी। आने पर उन्होने देर से आने का कारण पेरिस की भीड भरी सडकें बताया था।

डॉ० कातान्या काई 50 वप की थी, पर दखने म मात्र 40 वप की लगती थी। सुडौल देह कोई 5 फुट 3 इच लबी थी। सुनहरे बालो-वाली और अदर छोटी आखो के बीच विशेष रूप स लबी और आगे फूली हुई नाक तथा सुदर टखनो और ग्रीवावाली महिला थी। चूकि उनकी उगलियो मे अगूठी (रिंग) नही थी, इस कारण मैंने अनुमान किया कि या तो उन्होने विवाह किया ही नही अथवा वह अपने पति को तलाक दे चुकी हैं। पर यही बात तो वह भी अपने मन से सोच सकती थी मेरी रिंग-रहित उगलियो को देखकर।

खैर, औपचारिकता की बातें होती रहीं। उन्हीं की कार (जो सभवत पीजो का नया माडल थी) मे बठकर मैं सवप्रथम उस होटल म गया जिसमे उन्होने मरे लिए एकल कमरा (सिंगल बेडरूम) आरक्षित करा रखा था। यह होटल—ग्रड जीन डी आक 43—बुलवार सेंट मरमल पर था।

मुझे होटल म छोडकर डा० काताया प्रयोगशाला चली गई और मैंने स्नान कर जेट-लग (यात्रा की थकान) दूर कर भोजन का निश्चय किया। फ्रेंच न जानने का परिणाम यहा भी प्रत्यक्ष था। अत मन पास के एक सुपर मार्केट म जाकर दूध पनीर-ब्रेड आदि खरीद और खाकर जब मैं प्रयोगशाला पहुचा तो डॉ० काताया ने सभी कायकर्ताओ स मरा परिचय कराया। उसके बाद कॉफी पीते समय बताया कि उन्होने एक सुदर कमरा मरे लिए 135 बुलवार मोपरनास मे ठीक कर दिया है। अत मैं जाकर अपने होटल को बदल दू और 8 बजे शाम को वह 135, बुलवार मोपरनास पर मेरी प्रतीक्षा करेंगी। काफी पीकर मैं पुन होटल आया और वहा स मेट्रो द्वारा बुलवार मोपरनास पर अपन एपाटमट म पहुचा। वहा हाउस लेडी स अपने कमरे की चाबी लेकर राहत की सास ली।

थकान का असर था। बिस्तर पर लेटा ही था कि नीद आ गई।

दूसरे दिन डॉ० काताया ने बताया कि मुझे रोजेटा के साथ मिलकर काय करना होगा। इस कारण प्रयोग के विषय मे उससे बात कर लू।

मैं तुरत राजेटा के प्रयोग-कक्ष मे गया। मुझे देखकर उसने सहजता स बोनजूर (शुभ दिन) कहकर अभिवादन किया। स्टूल खिसकाया और हम लोग आमन सामन बैठकर प्रोटीन काइनजेज क प्रयोगो पर बातें करने लगे कि किस प्रकार यह प्रयोग प्रारभ किया जाए। प्रोटीन काईनजेज वे एजाइम्स हैं जो टासममब्रेन सिगनलिग के कारण होते हैं।

राजेटा की काय विधि और तक मुझे ग्राह्य लगे। अत दूसरे दिन से हम लोग अपन काय मे जुट गए। प्रयोग आरभ हुआ। एक सप्ताह बीत गया। रोजेटा स्पष्ट विचारोवाली महिला थी। हम लोग राजनीति से लेकर विज्ञान तक के विषयो पर बातें करते थे। एक दिन मैंने रोजेटा को

कॉफी पीने के लिए निमंत्रित किया। कुछ सोचकर उसने शनिवार को प्रयोगशाला से सीधी मोपरनास या उसके पास के किसी रेस्ट्रा में कॉफी पीने का निमंत्रण स्वीकार कर लिया।

दिन बीतते देर नहीं लगती। शनिवार आ गया और निश्चित समय पर रोजेटा मेरे एपार्टमेंट में आ गई।

आज उसका रूप बदला हुआ था। वह अधिक सुंदर ही नहीं, शालीन भी लग रही थी। उसकी लाल स्कर्ट और पीला ब्लाउज तथा गले में काली इटलियन बीड्स की माला और उनसे मिलते रंग के सेंडिल उसके सुरुचिपूर्ण चुनाव के द्योतक थे। गुलाबी रंग और हलके काले बाल उसे और भी सुंदर बना देते थे। आते ही मैंने उसे पहले भारतीय चाय का एक प्याला दिया। पीकर प्रशंसा करती हुई वह चलने को तैयार हुई तो मैं भी चल पड़ा।

नीचे पहुंच हम लोगों ने यह निश्चय किया कि रोजेटा आज भारतीय भोजन करे और कॉफी पीने का कार्यक्रम फिर कभी रखा जाए। कुछ झिझकते हुए रोजेटा ने निमंत्रण स्वीकार किया। हम लोग बुलवार मोपरनास से टहलते हुए मेट्रो स्टेशन बाबा (जो मेरे आवास से कोई 200 मीटर की दूरी पर रहा होगा) पर आए। वहां मेट्रो पकड़कर टहलते हुए मीना महल रेस्ट्रा में आ गए। भारतीय भोजन का आर्डर देकर मैंने रोजेटा से बातें शुरू की।

ठीक याद नहीं कि कैसे डॉ० काताया का जिक्र आया, पर उसका जिक्र शायद ठीक था, क्योंकि मैं उनके विषय में जानने को उत्सुक भी था। और यही अवसर था कि जब रोजेटा से विस्तार में बातें कर सकता था। भोजन आया—चिकन, दो प्याजा, मटर पनीर नान तंदूरी, मटर पुलाव। हम लोग बातें करते करते खाने लगे।

कुछ देर बाद मैंने रोजेटा से डॉ० काताया के विषय में जानने के लिए पुनः पूछा। मेरी बात सुनकर रोजेटा नपकिन से मुंह पोंछते हुए कहने लगी, 'न जाने क्या हर व्यक्ति जो काताया की प्रयोगशाला में कार्य करने आता है उनके विषय में अवश्य जानना चाहता है। मुझे अजीब सा लगता है। पर मैं तुम्हें बताऊंगी क्योंकि संभव है यह

तुम्हारे लिए भविष्य में उपयोगी हो।"

कुछ रुककर मेरी आंखों में झांकती हुई वह वाइन का सिप लेकर पुनः कहने लगी, "डॉ० काताया के विषय में तुम क्या जानना चाहते हो?"

मैंने कहा "डॉ० काताया क्या सर्वथा एकाकी है या कुछ और बात है?"

रोजेटा थोड़ा मुसकराकर बोली "हां, उन्हें एकाकी रहना पसंद है। उनके स्वभाव से ऊबकर डॉ० काताया के चिकित्सक पति नाईजीरिया गए थे। वह वहीं पर रहते हुए कुष्ठ रोगियों का एक चिकित्सालय चलाते थे। विवाह के बाद इन दोनों में कभी नहीं निभी। डा० मारसल बड़े विद्वान और गंभीर प्रवृत्ति के व्यक्ति थे और डॉ० काताया ठीक उनके विपरीत। यह महिला सदा जीवन के रसमय पक्षों को प्रधानता देने के कारण अपने पुरुष मित्रों में विख्यात रही है।

'डा० काताया के पति इनसे ऊब गए थे और संभवतः एक बार जब वह पेरिस आए तो सब लोगों से उन्होंने भेंट की थी। उनके नाईजीरिया वापस जाने के बाद एकाएक उनको कुष्ठ रोग हो गया था। कुछ वर्षों बाद उन्होंने आत्महत्या कर ली।"

बात पूरी होने के बाद मैंने रोजेटा से पुनः पूछा, "डा० काताया अपने पति के उनके पेरिस वापस आने के पूर्व नाईजीरिया गई थीं?"

'हां कई बार, पर जब भी गईं तो अपने पुरुष मित्रों के साथ छुट्टियों में, पर डा० मारसल को इसका पता नहीं चलता था।'

'तो क्या यह संभव नहीं है कि डा० काताया ने उन्हें रास्ते से हटाने के लिए कुछ साधन प्रयोग किए हों—जैसे डॉ० मारसल के शरीर में माइक्रो बैक्टीरियल लप्री के प्रति संघर्ष करने की क्षमता को कुछ विशेष ओषधियों द्वारा घटा देना जिससे उनके शरीर पर इन कीटाणुओं का प्रभाव बढ़ जाए। डा० मारसल ने इसका कोई अन्य विकल्प न देखकर आत्महत्या की हो।'

रोजेटा मेरी बात सुनकर कहने लगी, "संभव तो है ही और वह भी जब काताया के मित्र प्रो० जुकोव जैसे हों।'

प्रो० जुकोव जो संस्थान के निदेशक हैं वह डॉ० काताया के मित्र

है?" मैंने आश्चर्यमिश्रित हास्य से पूछा।

"जी हां, वह डॉ० कानान्या के नवीन घनिष्ट मित्र हैं। डा० मारनेच की मृत्यु की सूचना इस संस्थान में जब मिली तो सबकी यही धारणा थी कि यह कांड इन दोनों के सहयोग से हुआ है।'

'अरे, वाह !' कहकर मैं रोजेटा की बात सुनने पुनः रुक गया।

रोजेटा ने बताया, "डॉ० कानान्या पर अपने पति की मृत्यु का कोई प्रभाव नहीं था, वह और स्वच्छंद हो गईं और अपने शोध कार्य में भी उन्हें रुचि नहीं रही। दूसरों के कार्य में थोड़ा बहुत परिवर्तन करके, वह और प्रो० जुकोव उसे अपना कार्य बनाकर वैज्ञानिक पत्रिकाओं में प्रकाशित करा देते। इसी भांति का कार्य आज भी चल रहा है। इसे छिपाने के लिए डा० कानान्या विदेशों से वैज्ञानिकों को निमन्त्रित करती हैं ताकि लोग उन्हें वास्तविक रूप से वैज्ञानिक समझें और प्रोजेक्ट पर कार्य करनेवाले मिलते रहें।

'मैं एक वर्ष पहले मिलान (इटली) से इनकी प्रयोगशाला में आई थी और अब तो तुम भी आ गए हो। मैंने तुम्हें बताया इस कारण है कि तुम तथ्यों से परिचित हो जाओ और डा० कानान्या के पुरुषों और विशेषकर युवकों के प्रति झुकाव को भी जान लो। चलो, अब रात्रि के 12 बज रहे हैं। तुम्हारा भारतीय भोजन बहुत ही स्वादिष्ट था। इसके लिए पुनः धन्यवाद।" रोजेटा की बात सुनकर मैंने गारसा (वेटर) को बुलाया बिल अदा किया और हम लोग रेस्त्रां से बाहर आ गए।

सोमवार से हम लोगों ने (मैंने और रोजेटा ने) नया प्रयोग आरंभ किया। परिणाम का पता तो एक सप्ताह बाद ही चलता, अतः बड़ी सावधानी से कार्य किया जाता था। सोमवार को जब मैंने रेनवाव काउंटर पर कम्प्यूटर से परिणाम प्राप्त हुआ तो वह चौंकानेवाला था। यह डॉ० कानान्या के अनुभव से पूर्ण विपरीत था। उन्हें बताने से पूर्व हम लोगों ने सारे प्रयोगों को पुनः उन्हीं परिस्थितियों में दोबारा प्रारंभ किया। एक सप्ताह और बीता, परिणाम फिर वही। अतः डॉ० [illegible] को सूचित किया गया कि हम लोग उनसे कुछ प्रयोगों के विषय में विमर्श करना चाहते हैं।

हम लागो ने काफी पीने के बाद उन्हें परीक्षणा के परिणामो के विषय म बताना आरभ किया। अपनी आदत के अनुरूप (क्योकि डा० काताया बहुत ही जिद्दी और दुराग्रही महिला थी) पहल ता डा० काताया मानन का तयार ही नहीं थी, पर जब मैंने उन्हें बताया कि इस प्रोटीन काईनजेज के प्रयोग मे उपयाग आनवाले घाला मे एसिड की प्रक्रियास्वरूप उत्पन्न हाने के कारण जा स्वट्रेट का एसीटिमेटेड-हाइड्राक्सिल ग्रुप है, वह दूर कर अलग हो जाता है। अत शरेनकोव काउटर की गणना अलग आती है। यह समव है कि यह स्वट्रेट की शुद्धता स सबधित हो।"

मेरी बात सुनकर डॉ० काताया कुछ सोचती रही। फिर बोली, "मुझे सोचना होगा, अत कल इसी समय मैं पुन आप लोगो से विचार-विमश करूगी।"

डा० काताया के कक्ष से उठकर जब मैं और रोजेटा जा रहे थे तो धीरे से राजेटा बोली, "अब डॉ० काताया डॉ० जुकोव स बातें करके किसी निष्कर्ष पर पहुचेंगी पर दखना उन्हें हम लोगा की थ्योरी माननी पडेगी।"

'जो भी हो कल दखेंगे," कहकर मैं लाइब्रेरी मे जाकर नए जरनल्स देखने और उनसे आवश्यक वज्ञानिक सूचनाए नोट करन मे लग गया।

दूसरे दिन डा० काताया स्वय हम लोगो के (मेर और राजेटा के) प्रयोग कक्ष म आई और स्टूल खीचकर बैठ गइ। हम लोग भी उनके सामने अपने-अपने स्टूल लकर बठे ही थे कि वह बोल पडी, "तुम लोगो के परिणाम सही हैं और यदि तुम और राजेटा चाहो तो इसका वज्ञानिक जरनल म प्रकाशित करा सकते हो।

यह कहकर वह रुकी हम लोगा के चेहरो को ध्यान स दखा और हम दाना का कोई उत्तर न पान पर पुन कहने लगी और मैं चाहूगी कि यह प्रकाशन हम लोगा का तुम राजेटा और मैं तथा इस सस्थान के डायरेक्टर प्रो० जुकोव के साथ हो।'

उनकी बात हम लोगा के लिए नई नहा थी। अत थोडी देर चुप रहन के बाद रोजटा और मैंने भी स्वीकृति द दी। यह सुनकर

डॉ० कातान्या के चेहरे पर चमक आ गई और वह हसते हुए बोली, "इस चाय के लिए म तुम लोगो को शनिवार को 9 बजे अपन घर पर भोज म निमत्रित करती हू । तुम लोगो की मैं दूसरे मित्रो स भेंट कराऊगी । अब मैं जाऊगी क्योकि मुझे एक मीटिंग मे जाना है ।" डा० काताया यह कहकर तेजी स चल दी ।

मैं और रोजेटा वही पर रुके रहे ।

थोडी देर बाद रोजेटा कहने लगी, "तो अब इस शनिवार को डॉ० काताया के मित्रो से तुम्हारी भेंट होगी ।"

"पर मुझे तो तुम्हारे वहा रहन और बातें करन की कल्पना ही आनद देती है । इस कारण मैं चाहूगी कि हम लोग साथ-साथ चलें ।'

रोजेटा कुछ सोचते हुए बोली, "ठीक है ।"

निश्चित कायक्रम के अनुसार हम लोग डॉ० काताया के घर पहुच गए । कॉलबेल दबाते ही डॉ० काताया द्वार पर आईं और हम लोगो को ड्राइग रूम म ले गइ । वहा सोफे पर प्रो० जुकोव बैठे थे ।

यद्यपि परिस के आसपास आकर मौसम बहुत गरम नही रहता, पर न जाने क्यो मुझे पसीना आ रहा था । डॉ० काताया का ड्राइग रूम मकान के अनुरूप छोटा-सा सुरुचिपूण ढग से सजा था । औपचारिकता के बाद हम सभी कुरसिया पर बैठ गए । पहले मौसम, फिर फ्रासीसी राजनीति पर बातें होन लगी । डॉ० काताया भोजन के प्रबध म लगी थी । इस कारण लगातार आ जा रही थी । हम लोगो को बैठाकर डॉ० काताया करीब दो मिनट बाद फ्रेंच वेफस लेकर आइ और मुझस पूछा, "क्या आप व्हिस्की लना पसद करेंगे ?"

मेरी स्वीकारोक्ति पर उन्होने मुझे एक पैग शिवाज रिगाल का सोडा सहित तथा डॉ० जुकोव को भी इसी अनुपात मे व्हिस्की दकर स्वय एव रोजेटा को मार्टीनी दकर बैठ गईं । अब वह कुछ थकी सी दीख रही थी ।

बातो और ड्रिक्स के दौरान कॉलबेल पुन बजी । डॉ० काता या ने आनेवालो का परिचय कराया । ये थे डा० पीयर और उनकी ईरानी पत्नी सुलेमानलू । मुझे खानम सुलेमानलू बडी ढग की महिला लगी । डॉ०पीयेर पैथलोजिस्ट थे और डॉ० काताया के सहपाठी भी । पहले तो बातें शाली-

नता को देखते हुए अंग्रेजी मे हो रही थी। फिर धीरे धीरे लोग फामीसी मे बातें करने लगे। उस दिन मुझे पता चला कि रोजेटा बहुत अच्छी फ्रेंच बोलती है।

हा उस दिन मैं अधिक बोर होता यदि सुनमानलू न होता। मैंन धीरे स उनम फारसी म बातें करन की अनुमति चाही तो वह फारसी मे बोली, 'अरे मरे लिए यह अति प्रसन्नता का विषय होगा। आइए डॉक्टर, आप मुझस फारसी म जितनी चाहे बातें कीजिए।"

अभी तक हम लोग दूर दूर बैठे थे। मेरे सामने थ प्रो० जुकाव, दाहिनी तरफ रोजेटा तथा बाईं ओर डॉ० पियरे और डॉ० काता या सोफे पर एक दूसरे के आमन सामने बठे थे। प्रो० जुकोव रोजेटा की बगल मे आ गए। बातें चलती रही और शराब भी।

थोडी देर बातो के बाद डॉ० काता या ने सगीत बदल दिया। अब स्लो क्लासिकल म्यूजिक की जगह फास्ट म्यूजिक था। लोगो के पैर जमीन पर ताल दने लग। डॉ० काता या ने प्रो० जुकोव को नाचने का सकत दिया। वह सहप तैयार थे। व्हिस्की न उनकी थकान दूर कर दी थी। हम सभी लोग उठकर ड्राइग रूम से लगे बडे कमरे मे (जो लगता था इसी डास के लिए खाली किया गया था) चले गए। सगीत बढिया था। प्रा० जुकाव और डॉ० काता या, रोजेटा और मैं तथा डॉ० पीयेर और उनकी पत्नी नत्य कर रहे थे। एक राउड के बाद पाटनर बदल दिए गए। मैं डा० काना या के साथ, डा० जुकोव खानम सुलेमानलू के साथ तथा डॉ० पीयेर राजेटा के साथ नत्य करने लगे।

डॉ० काता या काफी अच्छा नृत्य करती थी। वह मुझे अपने स सटा कर नत्य करना चाहती थी। इस कारण हम लोगा के नाचन म समय के बीच जब भी दूरी बढ जाती वह मुझे खीच लती। जब भी वह इस तरह की हल्की हरकत करती तो मेरी और राजेटा की आखें मिल जाती। नत्य करत समय डॉ० काता या न मुझे थोडी दूर ले जाकर कहा क्या मैं आज उनक यहा रुकना पसद करूगा ?"

इस पर मेरा कोई उत्तर न पाकर वह बुझ सी गईं। उनके नत्य म वह जोश न रहा। सभी लोग थक से गए थे। अत सगीत बद होते ही

नत्य रुक गया और लोग अपने मद्य चषकों को खाली करने लगे।

डॉ० काताया की नौकरानी भोजन लगा चुकी थी। प्रो० जुकोव और डॉ० काताया आमने सामने थे। डॉ० काताया की बगल में मैं और मेरी बगल की कुरसी पर सुलेमानलू बैठी। रोजेटा मेरे सामने तथा उसके दोनों तरफ डॉ० पियरे और प्रो० जुकोव थे। गोल मेज पर खाना सजा था। रोम्प्टेड मानमन, सलाद, शैंपन और अन्य भोज्य पदार्थ मेज पर आ रहे थे।

भोजन के बाद तुर्किश कॉफी आई। उसको बनाने की विधि सुनते हुए रात्रि के 12 बज गए। जानेवालों में डॉ० पियरे और उनकी पत्नी तथा रोजेटा और मैं था। डॉ० काताया दरवाजे तक छोड़ने आई और हम लोगों के धन्यवाद ज्ञापन पर मात्र हलकी सी मुसकराहट उनके होंठों पर आई।

रास्ते में रोजेटा ने पूछा "डॉ० काताया ने नृत्य करते समय तुमसे कुछ कहा या नहीं ?"

मैंने बताया, "हां रात्रि बिताने का आग्रह कर रही थी। पर मैं चुप रहा।"

"मैं उनकी इस आदत को जानती हूं। संभव है कि वह अब तुमसे उस सहृदयता से बातें न करें, जैसी वह तीन सप्ताह पूर्व करती थीं" रोजेटा ने बताया।

"पर मैं क्या कोई मशीन हूं, रोजेटा, जो सबकी इच्छापूर्ति करता घूमूं ?" मैंने कहा।

इस पर रोजेटा ने हंसकर उत्तर दिया, "यह तो तुम्हीं जानो। पर डॉ० काताया को निराश करके तुमने अच्छा नहीं किया।

हम लोगों के प्रयोग चलते रहे, परिणाम मिलते रहे और समय बीतता गया। पश्चिम में प्रवास करने का दूसरा महीना शुरू हुआ। एक दिन मैं प्रयोगशाला में कार्यरत था तो डॉ० काताया की सेक्रेटरी ने एक पत्र मेरी मेज पर लाकर रखा। पत्र फ्रेंच में था। अतः रोजेटा को जब अवकाश मिला तो उसने पढ़कर बताया कि मुझे स्वास्थ्य परीक्षण के लिए कोशीन नामक अस्पताल में डॉ० रिवायी के पास कल प्रातः 8

बजे पहुचना होगा। कोशीन अस्पताल मेरे एपाटमट ॥ करीब 20 मीटर पर था।

दूसर दिन निश्चित समय पर मैं डॉ० रिआयी के कक्ष म उपस्थित हुआ। वहा पता चला कि यह सभी विदेशिया के लिए आवश्यक होता है कि वे इस केंद्र पर आकर अपने स्वास्थ्य का परीक्षण करा लें। यहा पुरुषा के स्वास्थ्य का परीक्षण महिला डॉक्टर करती थी तथा स्त्रिया का पुरुष चिकित्सक। डॉ० रिआयी न मेरा चकअप किया। फिर उन्होंने एक्स रे कराने के लिए एक सप्ताह बाद डॉ० पिटेट के क्लीनिक म जाने के लिए कहा।

डा० पिटेट का क्लीनिक मेट्रो के सेंट मिशेल नामक स्टेशन के पास था। इस चैकअप म मेरा सारा दिन बीत गया। दूसरे दिन जब प्रयोगशाला पहुचा तो डॉ० काताया ने मुझसे पूछा कि मैं डॉ० पिटेट के पास कब जाऊगा?

'मुझे अगले सप्ताह सोमवार का 8 बजे जाना है।" मैंन कहा।

जब मैं चलने लगा तो उन्होंने मुझसे कहा डॉक्टर तुम कुछ प्रसन्न नही दिखाई देते। मेरे यहा शनिवार का चाय पीने आ जाओ, तबीयत बहल आएगी।"

मैंने तत्काल बहाना बनाया, 'डॉ० काताया, मुझे प्रसन्नता होती यदि यह सभव होता पर मरे कुछ भारतीय परिचित शुक्रवार की शाम को आ रहे हैं। अत इस बार मेरा आपके यहा आ पाना सभव नही होगा।

मेरे उत्तर को सुनकर डॉ० काताया मुझे ध्यान से देखत हुए बोली, 'जैसी तुम्हारी इच्छा।'

मैं उनके कक्ष स बाहर चला आया। जब मैंन रोजेटा को यह बताया तो वह बोली, 'डॉक्टर, तुम्हे सावधान रहना चाहिए डा० काताया के हाथ बहुत लब हैं।'

'जो भी होगा दखा जाएगा,' मरा [illegible] उत्तर सुन [illegible]
अपने प्रयोग के परिणाम को लिखने [illegible]
जब सोमवार का मैं डॉ० पिटे [illegible]

अभिवादन के बाद उन्होने पूछा, "आप डॉ॰ कातायामा की प्रयोगशाला मे काय करते है ?"

"जी हा।" मेरा सक्षिप्त उत्तर सुनकर उन्होने मुझे को मेरे वक्षस्थल का एक्स रे लेने के लिए कहा। कोई दस मिनट बाद काम पूर्ण हो गया तो डॉ॰ पिटेट ने बताया कि वह परिणाम डॉ॰ कातायामा को और डा॰ रिआयी को सूचित करेंगे।

एक सप्ताह और बीत गया। मैं इस स्वास्थ्य सबधी जाच के विषय मे लगभग भूल-सा गया था। एक दिन मेरी मेज पर फ्रेंच मे लिखी रिपोट मिली। मैंने पढने के लिए उसे रोजेटा को दिया तो उसके मुख का रग एक बार बदल गया। थोडी देर बाद अपने भावो को नियन्त्रित करने के बाद उसने बडे सकोच मे बताया, "इस रिपोट के अनुसार (जो डॉ॰ पिटेट और डॉ॰ रिआयी की सम्मिलित रिपोट थी) मेरे दाहिने फेफडे के ऊपर एक गाठ दिखाई देती है और इन दोनो डॉक्टरो के अनुसार यह कसर की प्रारभिक अवस्था हो सकती है।"

यह सुनकर मैं भी हतप्रभ-सा रहा। कारण था कि पेरिस आने के पूव मैंने भारत म जो एक्स रे लिया था उसमे तो इस प्रकार की कोई सूचना थी ही नही। फिर मात्र दो मास मे यह कसे हो सकता है ? क्या यह रिपोट सही है ? यदि कटु तथ्य सत्य है तो मुझे तत्काल कुछ करना चाहिए। मैं इन्ही तर्कों-वितर्कों मे डूबा था कि रोजेटा के सबोधन ने मुझे चौंका दिया। रोजेटा कह रही थी, 'अभी तो तमाम सभावनाए और भी हैं, और अनथ की ही बात क्यो सोचें। हो सकता है यह भ्रम हो, जैसाकि रिपोट म कहा गया है कि डॉक्टरगण तुम्हारी पुन टोमोग्राफी (पूरे शरीर का एक्स रे) करेंगे।"

मैंने कहा, 'वह तो है ही, पर तुम सोचो कि यदि यह तथ्य गलत है तो टोमोग्राफी की जरूरत नही है, क्योकि इसमे एक्स रे के विकिरण का शरीर पर बुरा प्रभाव पडता है तथा शरीर म जीवाणुओ के प्रतिरोध करने की क्षमता घटने के कारण व्यक्ति रोगो स शीघ्र प्रभावित हो जाता है। यदि यह रिपोट सही है तो टोमोग्राफी के सिवा कोई चारा है ही नही।"

थोडी देर सोचकर रोजेटा ने कहा, "तुम्हारी टोमोग्राफी मे अभी

15 दिन का समय है। इस बीच मैं अपनी एक परिचित डाक्टर से विचार विमर्श कर तुम्हे उसकी सलाह बताऊगी।"

रोजेटा की बात मुझे तथ्यपूर्ण लगी। अत मैंने उसे इस प्रकार के तथ्यो पर सोचने की स्वीकृति दे दी। यह समस्या तो चल रही थी पर इसके कारण हम लोगो का वैज्ञानिक शोध प्रभावित नही था।

एक दिन रोजेटा ने प्रात काल प्रयोगशाला मे आते ही बताया कि उसके चिकित्सक मित्र का विचार है कि टोमोग्राफी की आवश्यकता जब होगी तब देखा जाएगा, पर यदि आवश्यक हो तो फाइब्रोस्कोपी से काफी पता चल सकता है। यह विधि यद्यपि थोडी कष्टदायक है क्योकि इसमे श्वास नलिकाओ मे फाइब्रोस्कोप की नली डाली जाती है जिसके आगे एक छोटा बल्ब लगा रहता है और इसी के प्रकाश मे फेफडे की वायुधारी शिराओ—ट्रकिया और आतरिक अन्य विवरण देखे जा सकते हैं उनकी फोटो ली जा सकती है। यदि फेफडो मे कोई परेशानी है तो उसका पता चल सकता है। इससे कोई प्रत्यक्ष हानि नही होती है।'

मैं भी यही चाहता था।

जिस दिन मुझे टोमोग्राफी के लिए जाना था उससे एक दिन पहले डॉ० काताया ने मुझसे जानना चाहा कि मैं टोमोग्राफी कराने कब जाऊगा। वह मुझे चिकित्सक के क्लीनिक तक पहुचा देंगी।

मैंने उनसे कहा, "मुझे इसमे रुचि नही है क्योकि यह आवश्यक नही है।'

"पर क्यो ?" डॉ० काताया पूछने लगी।

'क्योकि मैं अपने ऊपर एक्स रे का अत्यधिक एक्सपोजर नही चाहता और अगर यह मेरे फेफडे की गाठ ट्यूबरकुलर है तो यह ट्यूबरक्यूलिन टेस्ट से स्पष्ट हो जाएगा और फाइब्रोस्कोपी भी की जा सकती है। इसलिए यदि आप चाहे तो मैं अपने देश वापस चला जाऊ। वहा सारी सुविधाए हैं और आपके लिए समस्या भी नहा होगी।"

'मैं आपके विचारो से सहमत हू। यदि आप यही टेस्ट चाहते हैं तो यह भी हो जाएगा," माथे पर तेवर डालकर डॉ० काताया बोलीं, 'पर मुझे इसके लिए डॉ० रिआयी से बात करनी होगी।"

मैं आपको बता दूं कि डॉ० रिआयी भी मुझे बडी विचित्र महिला लगी। जिस प्रकार वह मरीजा का निरीक्षण करती थी, उसे देखते हुए उसको डॉक्टर कम कसाई कहना अधिक ठीक रहेगा। खैर ! डॉ० काताया की सेक्रेटरी ने दूसरे दिन सूचित किया कि पहले मेरा एंटीएपूवरक्यूलिन टेस्ट होगा। उसका परिणाम 48 घटे बाद पता चलेगा और फिर तीसरे दिन मुझे फाइब्रोस्कापी के लिए तयार रहना चाहिए।

मैं निश्चित समय पर कोशीन चिकित्सालय पहुच गया। वहा पर डा० रिआयी स भेंट हुई। वह मरी प्रतीक्षा कर रही थी। मुझे देखते ही बोली, "डाक्टर मेरे विचार से तुम्हारे फेफडो म कुछ है नही। चूकि एक्स र रिपोर्ट म गाठ दिखती है इस कारण मैं तुम्ह ट्यूबरक्यूलिन टेस्ट का इजेक्शन दना चाहूगी।"

मैंन कहा, "मैं तैयार हू।"

तुरत सिरिंज से ट्यूबरक्यूलिन का इजेक्शन मेरे बाए हाथ पर देकर डा० रिआयी बोली, "आप परसो इसी समय आए। यदि कुछ हुआ तो आपके इजेक्शन लगे स्थान पर सूजन काफी बढ जाएगी। पर उसे खुजलाइएगा नही।"

मैंने डा० रिआयी की बात सुनकर स्वीकारोक्ति मे सिर हिलाया तो वह पुन बोली, "डॉ० काताया आपकी प्रशसा कर रही थी।"

कोई उत्तर न देकर उन्ह अभिवादन कर मैं वापस अपने एपाटमेंट चला आया। नीचे किचन म जाकर मैंने रोजेटा को फोन कर शाम को अपने एपाटमट पर आने के लिए कहा। मेरा मूड बिगड गया था।

रोजेटा शाम को आई। उसका विचार था कि मुझे अपने देश इस कारण वापस चला आना चाहिए क्योकि डा० काताया बहुत ही ईर्ष्यालु, जिद्दी और दुष्ट प्रवत्ति की महिला ह। वह अपने प्रस्ताव को ठुकराए जान का बदला लेंगी और वह भी इस प्रकार कि कोई उन पर उगली न उठा सके।

मैं भी इस बात से पूण सहमत था। पर समस्या यह थी कि मेरा एयर टिकट तो मेरे पास था, पर पासपोट मैंने डॉ० काताया की सेक्रेटरी को द दिया था, ताकि वह समाप्त होते वीसा को बढवा दे सके। इस

काय मे देर लगती है पुलिस कमिश्नर के आफिस मे। रोजेटा की सलाह पर मैंने दूसरे दिन डा० काताया की सक्रेटरी से बात कर परिस्थिति स्पष्ट करन का निश्चय किया।

प्रात जब नीद खुली तो सबसे पहले ध्यान टयूबरक्यूलिन के इजेक्शन के स्थान पर गया। पर वहा तो कोई सूजन थी ही नही। अत एक समस्या तो हल हुई। चाय पीकर मैं जब इस्टीटयूट पहुचा ता सबसे पहले मैं डा० काताया की सेक्रेटरी सिलविया के पास गया। उसन झुमकर स्वागत करते हुए कहा, आज यहा कम ?"

मैंने उससे आने का कारण बताया तो वह कहने लगी, "पासपोट ता मैंने पुलिस के पास भेज दिया है और आज मैं फोन करके पूछ लूगी कि उन्हें वीसा की औपचारिकताए पूरी करन मे कितना समय और लगेगा।'

मैंन उसे धयवाद दिया और प्रयोगशाला म चला आया।

यह सुनकर कि मेरा टयूबरक्यूलिन टेस्ट निगेटिव है, राजेटा की आखो मे चमक आ गई थी। वह कहने लगी "अब तो परिस्थिति कुछ साफ है क्योकि यदि यह टेस्ट निगेटिव है तो तुम्हारे फेफडे ठीक हैं। क्या यह सभव नही कि डॉ० पिटेट ने किसी और की एक्स रे प्लट देख ली हो और तुम्हारा नाम दे दिया हो अथवा डॉ० काताया न उन्हें कुछ कहा हो और दाहिन फेफडे मे गाठ मात्र कल्पना हो जो तुम्हे परेशान करने के लिए गढी गई हो।'

"मैं सारी सभावनाओ को सोच रहा हू पर यह स्पष्ट नही है कि मैं इनसे बचकर निकलू कसे ?" मैंन कहा।

'तुम्हारे पासपोट का क्या हुआ? सिलविया क्या कहती है ?" रोजेटा ने पूछा।

मैंन बताया, 'सिलविया पुलिस आफिस स सपक करके सूचित करेगी। तब तक तो प्रतीक्षा करनी है। रोजेटा का विचार था कि पासपोट पाते ही मैं अपन देश चला जाऊ। यह उसी का सुझाव था। मैंन अपन मन म भी यही निश्चय किया था। समय चक्र का देखकर धय स काय करना ही बेहतर है, यह सोचकर प्रयोगा क विश्लेषण म लग गया।

कॉफी ब्रेक पर डॉ० काताया स भेंट हुई ता मैंन उन्हें बताया कि मैं

डॉ० रिआयी को इजेक्शन का प्रभाव दिखाने जा रहा हू । अत कल ही प्रयोगशाला आ सकूगा । कॉफी पीकर मैं पुन कोशीन चिकित्सालय गया ।

डॉ० रिआयी फुरसत मे थी । मेरा हाथ देखकर बोली, मेरा अनुमान कुछ अशा तक ठीक था । टी० बी० तो नही है । आपके दाहिने फेफडे की गाठ है क्या ?"

मैंने उन्हे बताया, "सभवत यह फासीलाइज्ड नाड(मृत गाठ) हो । इस कारण अब क्या करना ठीक रहेगा " डा० रिआयी थोडी देर तक सोचती रही, फिर बोली, "फाइब्रोस्कोपी से स्पष्ट हो जाएगा ।"

मेरे पूछने पर डॉ० रिआयी ने बताया कि इस विधि मे नाक से ट्यूब डालकर फफ्डे को देखा जाएगा । द्रव्य का विश्लेषण करने पर यह पता चल जाएगा कि किस प्रकार के जीवाणु उस गाठ मे रह रहे है अथवा किनके द्वारा यह उत्पन्न हुई है । यह स्पष्ट कर देगी कि यह गाठ टी० बी० के बैक्टीरिया द्वारा है अथवा कसर का प्राथमिक स्वरूप है । जब तक यह नही हो जाता तब तक समस्या है ।

डॉ० रिआयी की बात मुझे ठीक लगी । अत अगले सप्ताह फाइब्रो-स्कोपी का निणय हुआ ।

आप साच रहे होगे कि इन परीक्षणा की आवश्यकता ही क्या थी ? क्योंकि मैं अपना पासपोट लेकर भारत वापस आ सकता था । पर बात इतनी सीधी नही थी । मैं एक वष के लिए फ्रास गया था और जब तक यह स्पष्ट न हो जाए कि मैं पूण स्वस्थ हू तब तक मैं वहा से हट नही सकता था, क्योकि मेरा वीसा समाप्त हो गया था और पासपोट पुलिस के पास था । डॉ० कातायी इस समस्या को भी बढा सकती थी ।

दूसरी बात यह थी कि यदि मैं अस्वस्थ हू तो पुलिस को वीसा बढाने की जरूरत नही होगी और मैं भारत वापस जा सकता हू । अत परीक्षणो के परिणाम जानना आवश्यक थे ।

सोमवार को डॉ० रिआयी और उसके एक सहयोगी ने मुझे फाइब्रो-स्कोपी के लिए तैयार किया । दाहिनी नाक मे फाइब्रोस्कोप की नली धीरे-धीरे कई बार प्रयास के बाद डाली जा सकी । कई बार उलटी और दद ने काम रोक दिया । अततोगत्वा सफलता मिली । डॉ० रि

सहयोगी डॉक्टर ने एक्स रे मे दिखाई पड़ते क्षेत्र मे कोई गाठ नही देखी। पर उन्होंने उस क्षेत्र से फेफड़े का द्रव्य निकाल लिया।

"इसका परिणाम एक सप्ताह बाद पता चलेगा।" कहकर डा० रिआयी ने मुझे जाने का सकेत किया।

मैं चिकित्सालय से बाहर आ गया।

मैंने प्रयोगशाला म आकर रोजेटा को फाइब्रास्कोपी विशेषकर कोई गाठ दाहिने फेफड़े मे न होने की बात बताई तो वह कहने लगी, 'अब तो हम लोगो के पास दो सबूत हैं कि डॉ० पिटट गलत रिपोर्ट दे रहे हैं या गलती से किसी और की रिपोर्ट को तुम्हारी रिपोर्ट बता रहे हैं। क्योंकि टी० बी० का ट्यूबरक्यूलिन टेस्ट निगेटिव है। फाइब्रोस्कोपी म गाठ दाहिने फेफड़े म नही है। बची बात मात्र विश्लेषण रिपोर्ट की, वह भी अगले सोमवार को मिल जाएगी। इस प्रकार हम लोग यह जान जाएगे कि वस्तुस्थिति कैसी है और क्या करना चाहिए। पता है तुम्हे ? डा० काताया मुझसे पूछ रही थी कि तुम्हारा पेरिस म रहने का विचार है या नहीं क्योंकि वह तुम्हारे काय के परिणामो को शीघ्र ही अपने नाम रखना चाह रही हैं ताकि वह पेपर छपने के लिए वैज्ञानिक शोध पत्रिकाओं मे भेज सकें।"

मैंने कहा, 'जब तक मेरी स्वास्थ्य सबधी समस्या स्पष्ट नही होती मैं डा० काताया को अपने प्रयोगो के परिणाम दूगा ही नही, पर तुमने क्या कहा ?"

रोजेटा कहने लगी, 'मैंने तो इस बारे म उनके सामने अनभिज्ञता ही प्रकट की थी।'

एक सप्ताह बाद मैं पुन डॉ० रिआयी के पास गया तो उसने आश्चर्यमिश्रित अदाज से बताया कि कल के सभी परिणाम निगेटिव हैं। अत मैं पूर्ण स्वस्थ हू। यह रिपोर्ट [illegible] को [illegible] जिससे वह मेरे रहने आदि का उचित [illegible]

मैंने डॉ० रिआयी से रिपोर्ट [illegible] सी [illegible] सहय दे दिया। उसे लेकर मैं [illegible] के लिए दे दिया। [illegible] पढ़कर [illegible]

दूसरे दिन डॉ० कानाया ने आकर मुझे बताया कि अब मुझे अंतिम पुष्टि के लिए टोमोग्राफी करानी होगी, तो मैं चौंका। मैंने उनसे पूछा, "अब इसका क्या औचित्य है," तो वह कहने लगी, "डा० पिटट, डा० रिजायी की रिपोर्ट से सहमत नहीं हैं क्योंकि यह उनकी रिपोर्ट का खंडन करती है। अतः आपके लिए उन्होंने परसों टाइम ले लिया है और आप वहां 9 बजे के आसपास पहुंचकर टोमोग्राफी करा लें, जिससे समस्या का समाधान हो सके और आप गंभीरता से काय कर सकें।" डा० कानाया की बात सुनकर मैंने कुछ कहा नहीं। वह मेरी प्रयोगशाला से तेजी से बाहर चली गईं।

मेरा मूड बिगड़ गया था। रोजेटा भी बातें सुन रही थी। अब क्या किया जाए यह तय करना था। डॉ० कानाया का टोमोग्राफी के लिए बराबर कहना उसके लिए अथपूर्ण था। शाम को जब रोजेटा और मेरी भेंट प्लस डी हाउस पर हुई तो हम लोगों ने यह निश्चय किया कि मैं भारतीय दूतावास को परिस्थितियों से सूचित कर दूं ताकि यदि कुछ अप्रिय घटना घटती है तो वे उचित कायवाही कर सकें।

दूसरे दिन मैं सारे विवरण लिखकर भारतीय दूतावास गया और वैज्ञानिकों के विषय में सूचना रखनेवाले विभाग के इंचाज श्री मोहले से भेंट की। उन्हें वस्तुस्थिति से अवगत कराया और लिखित विवरण देकर उनके घर और दूतावास का टेलीफोन नंबर ले लिया। श्री मोहले ने मुझे सहयोग का पूर्ण आश्वासन दिया।

दूतावास से निकलकर जब मैं प्रयोगशाला में पहुंचा तो डॉ० कानाया की सक्रेटरी सिलविया की चिट मेज पर मिली कि पासपोर्ट शीघ्र ही आ जाएगा। पुलिस को मेरी स्वास्थ्य संबंधी रिपोर्ट की प्रतीक्षा है। उनका कहना है कि मैं अपनी स्वास्थ्य-संबंधी रिपोर्ट शीघ्र पुलिस आफिस भेजूं। मैंने यह पढ़कर चिट फाड़कर फेंक दी और अपने काय को समाप्त करने में लग गया।

मैं न चाहते हुए भी 9 बजे टोमोग्राफी कराने परिस की एक गली में स्थित एक्स रे क्लीनिक में पहुंचा। मेरा नाम और डॉ० पिटेट का पत्र पाकर एक मोटी नस ने कमरे में ले जाकर मुझे कमीज और बनियान

उतारकर एक्स रे मशीन के सामने खड़ा कर दिया। फिर तो इसके बाद करीब एक घंटे तक हर कोण से वे लोग एक्स रे की फोटो लेते रहे— कभी सांस रोककर कभी फेफड़ा में हवा भरकर और कभी दाहिनी तरफ से तो कभी बाईं ओर से। इससे मैं थक गया था। जब मैं उस क्लीनिक से बाहर निकला तो मुझे हलका सा चक्कर आ गया, पर धीरे धीरे चलकर मैं मेट्रो से अपने कमरे में आया और लेट गया।

जब मेरी नींद खुली तो दिन के दो बज रहे थे और मुझे प्यास लगी थी। मैंने जल पिया, तो मुझे उलटी हो गई और चक्करों का आना बढ़ गया। मैं पुन बिस्तर पर लेट गया। थोड़ी देर बाद जब तबीयत कुछ ठीक हुई तो मैंने नीचे जाने का प्रयास किया पर चक्करों के कारण यह संभव न था।

मैं पुन सो गया तो दूसरे दिन आंख खुली। उस समय मैं कमजोरी और भूख से बेहाल था। चक्करों का आना कम था, पर मैं नीचे जाने की अवस्था में नहीं था। किसी तरह मैंने अलमारी से कुछ बिस्कुट निकाले और उन्हीं को खाकर शक्ति आने की प्रतीक्षा करता रहा। मुझे ऐसा लगता था कि भूख से मेरी सारी शक्ति निकल गई है। इस बीच मेरी आंखों के सामने लगातार डॉ० कातान्या का चेहरा घूम जाता। मेरी यह अवस्था करीब दो बजे तक रही। फिर किसी भांति उठा और नीचे जाकर किचन में काफी तैयार की। वहीं बैठकर उसे पिया। आमलेट खाया। उसके बाद मैंने रोजेटा को फोन किया कि शाम को वह मेरे एपार्टमेंट में आ जाए। मुझे हलके चक्कर से आ रहे थे, पर पहले की भांति नहीं। मैं अब थोड़ा स्वस्थ था।

मैं लेटा था। कालबेल बजी। उठकर दरवाजा खोला, तो रोजेटा खड़ी थी। वह सीधे कमरे में आई और मुझे सहारा देकर बैठाया। मेरा हाल पूछने लगी। मैंने सारी बातें विस्तार से बताईं तो उसने तुरंत मुझे हास्पिटल में एडमिट होने की सलाह दी। मैं भी यही चाहता था।

उसने डॉ० रिआयी को फोन किया और उनसे बातें करने के बाद करीब 10 मिनट में एंबुलेंस आकर खड़ी हो गई और करीब 20 मिनट में मैं अस्पताल में था। तात्कालिक चिकित्सा आरंभ हुई। दवा दी गई। सारे

परीक्षण आरंभ हुए और जब यह पता चला कि मुझे एक्स रे सेंसटिविटी है तो उसी लाइन पर उपचार आरंभ हो गया। रोजेटा बैठी रहती मेरे पास। मैंने उसे हॉस्टल जाने के लिए जब कई बार कहा तो रात्रि के दस बजे वह गई। मेरी बेचैनी घट गई थी। शक्ति भी आ रही थी। आशा थी कि मैं 3 4 दिनों में अस्पताल से मुक्त हो जाऊंगा। उस रात मैं आराम से सोया।

दूसरे दिन मैंने श्री मोहले को भारतीय दूतावास में फोन किया था उन्होंने दोपहर बाद आकर चिकित्सालय में मिलने का आश्वासन दिया। रोजेटा ने डॉ० कातान्या को मेरे स्वास्थ्य के विषय में बताया था। इस कारण दिन में करीब दस बजे वह भी फूल लेकर आईं। पर उनके चेहरे पर वही कठोरता थी। औपचारिक बातों के बाद वह चली गईं। करीब 3 बजे श्री मोहले आए। स्वास्थ्य के बारे में पूछा। मैंने उनसे सहयोग मांगा। श्री मोहले ने हर सहयोग देने का आश्वासन दिया। यह भी कहा कि वह टोमोग्राफी करनेवाले डॉक्टर से भी बात करेंगे कि उसने मुझे इतनी देर तक क्यों एक्स रे से एक्सपोज किया। कुछ देर बाद श्री मोहले भी चले गए।

शाम को रोजेटा गाटचीज लेकर आई। यह पनीर बकरी के दूध से बनता है। मेरे पूछने पर उसने बताया, "यह मेरे स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद होगा। अतः मैं इसे खाऊं।" रोजेटा से मैंने श्री मोहले के आने तथा उनसे होनेवाली बातों के विषय में भी बताया। करीब 8 बजे रात्रि तक रहने के बाद रोजेटा चली गई और मैं एक भारतीय मूल की मारीशस की रहने वाली नर्स से मारीशस के विषय में बातें करता हुआ सो गया।

शनिवार आया। करीब 10 बजे रोजेटा आ गई। उसने मुझे कमरे से निकलकर थोडी दूर तक चलने की सलाह दी। उसके साथ मैं थोडी देर तक अस्पताल के लॉन में घूमा। हलकी धूप अच्छी लग रही थी। हम लोग लॉन में बैठकर तमाम बातों के बारे में विचार विमर्श करते रहे। उसी समय मुझे तलाशते श्री मोहले भी आ गए। उनका परिचय मैंने रोजेटा से कराया और रोजेटा को उनके सहयोग की बात बताई।

मोहले ने बताया, "टोमोग्राफी करनेवाला डॉक्टर तुम्हारे एक्स रे के

प्रति मवदनशीलता से अपरिचित था। डॉ० काताया ने उस तुम्ह देर तक तथा ठीक से टोमोग्राफी करन की सलाह दी थी। अत उसने बडी सावधानी से एक्स रे फोटो लिए थे।

"उसन यह भी वताया कि तुम्हार दाहिन फेफडे मे कोई गाठ नहा है। यदि तुम चाहो तो स्वत इन एक्स रे प्लटस को देख सक्ते हो। मैंन यह सूचना पुलिस कमिश्नर को द दी है। आशा है कि तुम्हारा पासपोट भी मगलवार यानी आज स तीसर दिन दूतावास म आ जाएगा। तुम्ह अब इसके लिए डा० काताया से नहीं कहना पडेगा। अन स्वस्थ हात ही तुम भारत वापस जा सकते हो। पर यह तुम्हारा निजी मामला है। मैं जो कुछ कर सकता हू कर दूगा।" श्री मोहन थोडी दर वठकर चल गए। अब रह गए मैं और रोजेटा।

विचार विमश करक हम लागा न निश्चय किया कि इसक पहल कि मैं कोई कायक्रम बनाऊ यह बेहतर हागा कि मैं चिकित्सा के इचाज डाक्टर आरामो से बात करू और उन्ह यह वतान के लिए अनुरोध करू कि मर शरीर पर एक्स र किरणो द्वारा कितनी हानि हुई है।

सोमवार को डा० आरामा भेंट हुई। उनस सामान्य औपचारिकता क बाद मैंन अपन शरीर पर हुए एक्स रे के प्रभाव के विषय म पूछा ता वह कहन लग 'अधिक नहीं है 3-4 दिन म मैं आपका रिलीव कर दूगा। पर करीब एक वप तक आप एक्स र न कराए और न रेडियो एक्टिव रसायना का प्रयाग अनुभवा म करें। आपकी ब्लड एनालिसिस बताती है कि आपका इम्यूनो रिसपास काफी सुधरा है फिर हर 6 मास बाद आपकी ब्लड रिपोट आवश्यक होगी।' यह कहकर, चाट देखकर डॉ० आरामो चल गए।

सारा दिन इस इतजार म बीता कि राजेटा कब आती है। शाम को राजेटा आई। उसे सारी बातें बताइ ता वह कहन लगी, कल यानी मगलवार को डॉ० काताया टामोग्राफी की एक्स र प्लेटस लकर आएगी। वह चाहती है कि तुम उनकी प्रयागशाला म बाकी के 9 मास बिताकर जाओ।'

मैंन कहा, 'तुम तथ्य स परिचित हा। काताया, वह जो कहती है,

कहा करें।"

आज रोजेटा वक्री थी। हम लोगों ने अस्पताल के रेस्त्रा मे बैठकर काफी पी। मैंने जब रोजेटा के सहयोग की प्रशंसा की तो वह कहने लगी, "तुम भी अजीब हो, अब औपचारिकता ठीक नही।"

दूसरे दिन डा० कातान्या ठीक 8 बजे आकर बोली "मुबारक हो, तुम्हे कुछ नहीं हुआ है। तुम ठीक हो। अब तो तुम काय आरंभ कर सकते हो।"

मैंने उन्हे धन्यवाद दिया और बताया कि जब डाक्टर आरामो मुझे रिलीव कर देंगे तो मैं प्रयोगशाला म आकर बात करूगा।

थोडी देर बाद डॉ० कातान्या चली गई और मैंने डॉ० आरामो के कमरे म सूचना भेजकर डिस्चाज करने की प्रार्थना की तो वह फोन पर बोले, "ठीक है आज दो बजे के बाद चले जाइए। मैं आपके कागजात कल आपके सस्थान म भेज दूगा।'

जब मैं अस्पताल से अपने कमरे मे आया तो सामान रखने के बाद मैंने रोजेटा स फोन पर बात की और सूत्र सग्रहालय देखने चला गया।

रात्रि म मैंने श्री मोहले से बात की, तो उन्होने बताया कि मेरा पासपोर्ट उनके पास आ गया था और वह चाहते थे कि उसे कल मैं दूतावास जाकर ले लू। दूसरे दिन जब मैं पासपोर्ट लेने दूतावास गया तो श्री मोहले मीटिंग म व्यस्त थे। थोडी देर बाद आए तो पासपोर्ट दिया। मैंने देखा कि पुलिस ने मुझे एक वर्ष का वीसा दे दिया था। पर उसका अब क्या उपयोग। श्री मोहले स मिलकर मैं एयर इंडिया के कार्यालय गया और आरक्षण कराया। दो सप्ताह बाद के रविवार की फ्लाइट का कनफर्मेशन पाकर मैं सस्थान पहुचा तो मेरी मेज पर डॉ० आरामो की रिपोर्ट रखी थी। स्पष्ट लिखा था कि सारी समस्या गलत रिपोर्टिंग से हुई थी। मुझे जो हिदायतें उन्होंने दी थी वे भी इस पत्र मे उन्होने लिख दी था। नग्न की भांति यह रिपोर्ट फ्रेंच भाषा म थी। अत उसके बारे म रोजेटा के अनुवाद के बाद ही जान पाया था।

मैंने और रोजेटा ने साथ साथ विलिजुइप के एक छोटे से रेस्त्रा में लच लिया और वही पर यह निश्चित हुआ कि डॉ० कातान्या जब तक

स्वत कुछ न कहे मेरा उनसे कुछ कहना ठीक नहीं होगा।

शाम को रोजेटा आ गई। पर आज वह वैज्ञानिक रोजेटा नहीं वरन रूपसी रोजेटा थी। बड़े सुरुचिपूर्ण ढंग से कपड़े पहने काले रंग की स्कर्ट, लाल ब्लाउज, पीले मोतियों की माला तथा शनेल सेंट की सुगंध से भरपूर।

हम लोग घूमते हुए मैट्रो द्वारा ऐफिल टावर के पास के स्टेशन शाप-डे मास पर उतर गए। एफिल टावर शांत खड़ा था, पर उसके नीचे दर्शकों की भीड़ तरंगों की भांति लग रही थी। हम लोग इस टावर में लगी लिफ्ट द्वारा इसके ऊपर घूमनेवाले रेस्त्रां में आ गए। वहां से पेरिस का विहंगम दृश्य स्पष्ट दीखता था। वह नयनाभिराम छवि आज भी मेरी आंखों में घूम जाती है।

जब हम लोग मोपरनास पर अपने एपार्टमेंट में लौटकर आए तो मैंने रोजेटा के लिए भारतीय दार्जिलिंग चाय बनानी चाही। उसकी निगाहें मेज पर रखी स्काटलैंड की विख्यात ब्रांडी 'ड्राबूयी' पर अटक गईं, "चाय से बेहतर यही रहेगी," और यह कहकर पीने लगी। थोड़ी देर बाद जब मैंने देखा कि उसका चषक खाली हो गया है तो मैंने थोड़ी सी ड्राबूयी और देनी चाही। वह बोली, "अब जाना चाहिए नहीं तो मेट्रो बंद हो जाएगी।"

मैंने उससे कहा, "क्या अब भी यह औपचारिकता चलती रहेगी? आज मैं तुम्हें जाने नहीं दूंगा। तुम यहीं रहो।"

यह सुनकर रोजेटा एक क्षण को लाल हो गई और कुछ सोचकर बोली "ठीक है पर प्रात चली जाऊंगी।" उस रात रोजेटा मेरे साथ ही रही। रात कब बीती पता ही नहीं चला।

प्रात जब नींद खुली तो रोजेटा शॉवर लेकर तैयार थी। मुझसे बोली "तुम मेरे साथ आज लंच लोगे। मैं तुम्हें इटलियन भोजन कराऊंगी, खाओगे?"

मैंने कहा, "मुझे पिज्जा सलामी पसंद है वह भी जब तुम्हारे द्वारा बनाया जाए।" मेरी बात पर रोजेटा थोड़ा मुसकराई। मुझे थपथपाकर बोली, "देर न करना, 1 बजे तक आ जाना, फिर मैं तुम्हें लूव्र संग्रहालय

ल चलूगी। इद्र की मूर्ति दिखाने।" उसके जाने के बाद मैंने उठकर स्नान किया और चाय पीने नीचे किचन मे चला गया। ठीक एक बजे मैं रोजेटा के कमरे पर उपस्थित था।

मज पर भोजन की चिरपरिचित गध न मरी भूख को और बढा दिया। रोजेटा जसे मेरी ही प्रतीक्षा कर रही थी। सोरेंतो वाइन, पिज्जा और सलाद को खाकर मजा आ गया।

भोजनोपरात हम लोग लूव्र के लिए निकल पडे।

दूसरे दिन मैं जान बूझकर प्रयोगशाला दर स पहुचा तो मज पर डा० कातान्या की चिट थी, "तुरत मिलो।" अत फोन से उ हे सूचित किया, "मैं एक घटे बाद मिलूगा क्योकि प्रयोगो के परिणाम एकत्र करने हैं।"

जब मैं करीब 11 बजे डॉ० कातान्या के कक्ष म गया तो वह बडी अस्त-व्यस्त सी दिखी। मैं उनके सामने की कुरसी पर बैठ गया तो वह कहने लगी, "अब प्रोजेक्ट पर काम आरम्भ करना चाहिए।'

मैंने थोडी दर सोचने के बाद उन्हे जब यह बताया कि मैं अगले रविवार को भारत जा रहा हू, तो वह चौंक पडी। उनकी कल्पना थी कि भारतीय धन और वभव की भूख से पीडित होते है। अत उनकी यह प्रक्रिया स्वाभाविक ही थी।

वह पूछने लगी कि बात क्या है? मुझे उनकी मक्कारी पर गुस्सा तो आया था पर अपने को नियत्रित करते हुए मैंने उनसे पूछा, 'क्या आपने डॉ० आरामो की रिपोट पढी है?"

डा० कातान्या न स्वीकारात्मक ढग से उत्तर दिया तो पुन मैंने कहा, 'उस रिपोट म मुझे रेडियो सक्रिय रसायनो से काय करने के लिए मना किया गया है। और इन प्रयोगशालाओ मे ये सब रसायन प्रयोग होते हैं। अत मेरे लिए समस्या होगी।"

'मैं आपके लिए प्रयोगशाला द दूगी। रेडियो एक्टिववाले काम कोई भी प्रयोगशाला सहायक कर सकता है।"

मैंने कहा, "यदि डा० पिटट की रिपोट की भाति कुछ हो जाए तो क्या होगा?"

मेरी बात सुनकर डॉ० कातायेवा का चेहरा क्रोध से तिलमिला उठा। उनकी आंखों से घृणा टपकने लगी। वह बोली, "क्या आप समझते हैं कि मैंने डा० पिटट से कहा था कि वह गलत रिपोर्ट दें ?"

इसका उत्तर मेरे पास तैयार था। मैंने उन्हें बड़ी शालीनता से बताया, डॉ० कातायेवा, क्या यह सत्य नहीं है कि आपका डा० पिटेट से पुराना परिचय है ? क्या आप इस बात से इनकार करेंगी ? क्या आपने उस डाक्टर से जो मेरी टोमोग्राफी करनेवाले थे 'ठीक से टोमोग्राफी करने' को नहीं कहा था ? क्या आप इस तथ्य से परिचित नहीं थीं कि मुझे एक्स रे से संवेदनशीलता है ? यह तो मैं आपको पहले ही बता चुका था। डॉ० कातायेवा आपके उस डॉक्टर ने, जिसने मेरी टोमोग्राफी की थी, भारतीय दूतावास के शिक्षा सचिव को यह लिखकर दिया है कि आपके कहने पर उसने मुझे देर तक एक्स रे से एक्सपोज किया था।

मैंने अपनी स्वास्थ्य संबंधी रिपोर्ट और अन्य संबंधित कागजात आपके विभाग के डाइरेक्टर प्रो० जुकोव को तथा भारतीय छात्रों की देखभाल करनेवाले सचिव श्री मोहन को भेज दिए हैं। आप चाहें तो उनसे बात कर सकती हैं।"

मेरी बात सुनकर डा० कातायेवा बोली "यह आपने ठीक नहीं किया। यह सब करके आप मेरा अपमान कर रहे हैं। अतः मैं आपके मामले को अपने वकील को दूंगी, ताकि आप पर कानूनी कार्यवाही की जा सके।'

मैंने उन्हें समझाते हुए बताया, 'मैं रविवार को जा रहा हूं और यदि आपने कुछ और कदम उठाए तो मामला बहुत दूर तक उछल जाएगा और तब मुझे कहना पड़ेगा कि मेरी सारी समस्याएं आपने इसलिए खड़ी कीं क्योंकि मैं आपके साथ रात्रि बिताने के लिए तैयार नहीं था।" यह कहकर मैं कमरे से निकल आया।

मैंने श्री मोहन को फोन पर सारी बातें बता दीं तो उन्होंने तत्काल मुझे अपना एपार्टमेंट खाली करके भारतीय दूतावास में सामान लाकर रखने को कहा और यह भी बताया कि मुझे अब रात्रि में सावधान रहना चाहिए।

श्री मोहले के साथ मैं दो दिन भारतीय दूतावास मे रहा। वही मे रोजेटा से बातें होती थीं। उसस मैंने यहा आकर मिलने के लिए श्री मोहले की सलाह पर मना कर दिया था। दिन भारी हो गए थे। रविवार को भारतीय दूतावास की कार पर एयरपोर्ट के पास रोजेटा से भेंट हुई। वह प्रसन्न भी थी और दु खी भी। उसने मेरे सारे शोध के परिणाम दिए तो मैंने उसे वापस देते हुए कहा कि यह हमारा सयुक्त काय है। तुम ही इसे प्रकाशन के लिए भेज देना।

मुझे रोजेटा ने विदा दी। उसके बाद मैंने अत्यत आभार के साथ श्री मोहले से विदा ली और प्लेन म बठ गया।

मेरे आने के एक मास बाद रोजेटा का पत्र आया कि उसने भी डॉ० कातान्या की प्रयोगशाला म काय छोड दिया है और अपने घर मिलान (इटली) चली गई है। आज जब मैं आपको यह कहानी डायरी के पन्नों को पलटकर सुना रहा हू तो हर पन्ने पर डॉ० कातान्या की असतुष्ट घणा से भरी आखें मुझे घूरती दिखाई दे रही हैं।

दोल्मे[1]

मेरी लय का सहायक अली आगा मुझे सलाम कर, मेरा कुशल क्षेम पूछकर फिर काय आरंभ करता था। यह उसका रोज का नियम था। 9 बजे छोटे से सुंदर गिलास में चाय और प्लेट में शकर का टुकड़ा रख देता। थोड़ी देर बाद गिलास प्लेट के साथ ले जाता। फिर मेरे शोध छात्र आ जाते। काय आरंभ हो जाता। अली आगा बड़ा ही स्नेही और मधुर-भाषी था। उसने पचास साल की उम्र में 30 वर्षीय महिला से विवाह किया था। वह चपल स्वभाव की स्त्री थी और अली आगा था धर्मभीरु।

अली आगा सदैव समय से आ जाता था, ठीक आठ बजे प्रात। यदि वह किसी कारण से नहीं आ पाता तो उसकी छुट्टी का प्रार्थना पत्र आ जाता था। पर एक दिन अली आगा नहीं आया और न उसकी कोई सूचना ही आई। दूसरा क्या, तीसरा दिन भी बीत गया, अली आगा गायब। मैंने कार्यालय से जब पूछा तो हाशिम ने जो बताया वह बहुत ही दुखद था। अली आगा जेल में था। उसने अपनी एक परिचित आगए[2] हगाइगी की हत्या कर दी था। वह भी किसी अन्य विधि से नहीं, दोल्मे खिलाकर।

बात कुछ समझ में नहीं आ रही थी। इस कारण दूसरे दिन सेंट्रल जेल के वाडन से अनुमति लेकर अली आगा से मिला। तबरीज की यह जेल सभी आधुनिक सुविधाओं से युक्त थी। पर अली आगा की हालत ही बदल गई थी। रात भर न सोने से लाल-लाल आंखें और बढ़ी दाढ़ी देखकर ऐसा लग रहा था कि उसे पीलिया हो गया है। उसके चेहरे की सुर्खी भी गायब थी। मैंने उसे धीरज बंधाया। खाने के लिए शीरनी

(निशानी) जिनमें लड़कों[3] और लड़कियाँ[4], जो उसे पसंद थीं, दीं और जब मैंने इस घटना के विषय में जानना चाहा, तो अली ने बताया कि आज तक डॉक्टर ज्ञान को जमानत पर छोड़ दिया जाएगा। तब वह मेरी लाइब्रेरी (प्रयोगशाला) में आएगा और वहीं सब-कुछ बताएगा।

मिलने का समय समाप्त हो चुका था। मैं बाहर आया। कार स्टाट की और विश्वविद्यालय न जाकर अपने मित्र और तबरीज की यूनिवर्सिटी की वकील, खानम[5] माहीन सादगी के चेंबर में जा पहुँचा। सौभाग्य से खानम सादगी मौजूद थीं और वह ही अली आगा के मुकदमे की पैरवी कर रही थीं। अली आगा जेल से बाहर हो जाएगा, ऐसा परवाना वह जेल भिजवा चुकी थीं। खानम सादगी का कोई केस नहीं था, अतः मैंने उन्हें होटल इंटरनेशनल में चाय पीने का दावतनामा (निमंत्रण) दिया जो उन्होंने सहर्ष स्वीकार कर लिया। होटल इंटरनेशनल में पहुँचकर अपनी आदत के अनुसार मैं उन्हें खिड़की की तरफवाली मेज पर ले गया। चाय का ऑर्डर दिया और बिना समय नष्ट किए खास मुद्दे पर आ गया। वह था अली आगा का किस्सा। चाय का सिप लेती हुई खानम सादगी ने बताना शुरू किया—

"यह तो तुम्हें पता है कि खानम फहीमे (अली आगा की पत्नी) कुछ निंफोमेनियक[6] सी है। उसके अनेक पुरुष मित्र भी हैं। कुछ प्रत्यक्ष हैं, कुछ परोक्ष में रहते हैं। प्रत्यक्षवालों में एक आगाए हगाइगी हैं जो डॉ० आगरी के लैब-टेकनीशियन थे। लोगों का यही सब कहना है कि अली आगा तो मात्र दिखावे के लिए पति था। फहीमे का सारा स्नेह और आनंद आगाए हगाइगी को ही प्राप्त था। अली आगा भी इसे जानता था, फिर भी चुप रहता था।

'खानम फहीमे हगाइगी से विवाह करना चाहती थी, पर हगाइगी सपन्न नहीं था और खानम फहीमे अली आगा को इस कारण तलाक नहीं दे सकती थी कि ऐसा करने में वह अली आगा की संपत्ति से वंचित हो जाएगी। अली आगा के कोई संतान नहीं है, यह तो आप जानते ही हैं। आगाए हगाइगी और फहीमे ने अली आगा को खत्म करने का निर्णय किया था, पर सामान्य ढंग से नहीं, बहुत ही वैज्ञानिक तरीके

ढोल्मे[1]

मेरी लैब का सहायक अली आगा मुझे सलाम पूछकर फिर काम आरंभ करता था। यह उसका 9 बजे छोटे से सुंदर गिलास म चाय और प्लेट म देता। थोडी देर बाद गिलास प्लेट के साथ ले जाता आ जाते। काम आरंभ हो जाता। अली आगा बडा भावी था। उसने पचास साल की उम्र म 30 वर्षी किया था। वह चचल स्वभाव की स्त्री थी और अली

अली आगा सदैव समय से आ जाता था, ठीक वह किसी कारण स नहीं आ पाता तो उसकी छुट्टी जाता था। पर एक दिन अली आगा नहीं आया और ही आई। दूसरा क्या, तीसरा दिन भी बीत गया, अल कार्यालय स जब पूछा तो हाशिम न जो बताया वह अली आगा जेल म था। उसने अपनी एक परिचित हत्या कर दी था। वह भी किसी अन्य विधि से नहीं

बात कुछ समझ मे नहीं आ रही थी। इस कारण क वाडन स अनुमति लेकर अली आगा से मिला। सभी आधुनिक सुविधाओ से युक्त थी। पर अली बदल गई थी। रात भर न सोने से लाल-लाल आंख देखकर एसा लग रहा था कि उसे पीलिया हो गया है सुर्खी भी गायब थी। मैंने उसे धीरज बधाया।

(मिठाई) जिसमे नुख्ची[3] और जुल्बीए[4], जो उसे पसद थी, दी और चाय पीते हुए घटना के विषय म जानना चाहा तो अली ने बताया कि आज उन चार बजे शाम को जमानत पर छोड दिया जाएगा। तब वह कल आजमाइशगाह (प्रयोगशाला) मे आएगा और वहीं सब कुछ बताएगा।

मिलन का समय समाप्त हो चुका था। मैं बाहर आया। कार स्टाट की ओर विश्वविद्यालय न जाकर अपने मित्र और तबरीज की फौजदारी की वकील, खानम[5] माहीन सादगी के चेंबर मे जा पहुचा। सौभाग्य से खानम सादगी मौजूद थी और वह ही अली आगा के मुकदमे की पैरवी कर रही थी। अली आगा जेल से बाहर हो जाएगा, ऐसा परवाना वह जेल भिजवा चुकी थी। खानम सादगी का कोई केस अब नहीं था, अत मैंने उन्हे होटल इटरनेशनल मे चाय पीने का दावत-नामा (निमत्रण) दिया जो उन्होने सहर्ष स्वीकार कर लिया। होटल इटरनेशनल म पहुचकर अपनी आदत के अनुसार मैं उन्हे स्वीमिंग पूल की तरफवाली मेज पर ले गया। चाय का ऑर्डर दिया और बिना समय नष्ट किए खास मुद्दे पर आ गया। वह था अली आगा का किस्सा। चाय का सिप लेती हुई खानम सादगी ने बताना शुरू किया—

"यह तो तुम्हे पता है कि खानम फहीमे (अली आगा की पत्नी) कुछ निफामेनियक[6]-सी है। उसके अनेक पुरुष मित्र भी हैं। कुछ प्रत्यक्ष है, कुछ परोक्ष म रहते हैं। प्रत्यक्षवालो म एक आगए हगाइगी थे जो डा० अनवरी के लब-टेक्नीशियन थे। लोगो का यहा तक कहना है कि अली आगा तो मात्र दिखावे के लिए पति था। फहीमे का सारा स्नेह और आनद आगए हगाइगी को ही प्राप्त था। अली आगा भी इसे जानता था, फिर भी चुप रहता था।

'खानम फहीमे हगाइगी से विवाह करना चाहती थी, पर हगाइगी सरल नहीं था और खानम फहीमे अली आगा को इस कारण तलाक नहीं दे सकती थी कि ऐसा करने म वह अली आगा की सपत्ति से वचित रह जाती। अली आगा के कोई सतान नहीं है, यह तो आप जानते ही हैं। अत हगाइगी और फहीमे ने अली आगा को खत्म करने का निश्चय किया था, पर सामान्य ढग से नहीं, बहुत ही वैज्ञानिक तरीके से। यह तय

हुआ था कि खानम फहीमे (जिस दिन घटना हुई है) अली आगा के दोल्मे (जिनमें सामान्यतः मशरूम और गोश्त भरा जाता है और यह सब अंगूर के पत्ते मसाला के साथ भाप पर पकाया जाता है) में डालने के लिए एक विशेष मशरूम (ऐमानीटा फलायडम) खिलाएगी जिसे आगए हुगाइगी वाटनी डिपार्टमेंट से चुराकर लाए थे। इसके खाने पर 4 से 6 घंटे बाद मनुष्य कै-दस्त करता है, प्यासा होकर बेहोश हो जाता है और उसी अवस्था में हृदयगति रुकने से मर जाता है।

"थोड़ी देर बाद सब समाप्त हो जाएगा और अली का दफन कर दिया जाएगा। पर थोड़ी सी गलती समय में परिवर्तन के कारण हो गई।"

'वह कैसे ?' मैंने पूछा।

खानम सादगी बोली, "मैंने सारा किस्सा खानम फहीमे को बुलाकर यह आश्वासन देकर पूछा कि यदि वह सच बता देगी तो अली आगा तो छूट ही जाएगा तथा उसे खुद बचा दिया जाएगा। तब जाकर खानम फहीमे ने बताया, 'चाय पीकर हम लोग गपशप करते हैं और दस बजे तक सो जाते हैं। इस कारण मैंने हुगाइगी के दिए हुए मशरूम को पीस कर गोश्त के साथ दोल्मे बनाए और अली आगा की प्रतीक्षा करने लगी थी। आगए हुगाइगी रात्रि 9 बजे आनेवाला था पर उस दिन अली आगा देर से आए। कुछ थके थे। चाय मांगी और पढ़ने बैठ गए। मेरे खाने के लिए पूछने पर दस मिनट बाद खाना का कहा। कुछ अजब सी कैफियत थी मेरी, पर जो तय कर लिया था—करना था। इस कारण दोल्मे गरम कर करीब दस मिनट बाद लाई। अली आगा के लिए उनकी रकाबी में रख दिए। मैं खुद काम का बहाना कर एक घंटे के लिए अपनी पड़ोसिन के यहां चली गई। पर बदकिस्मती इसे कहते हैं कि उसी समय मेरी पड़ोसिन मेरे ही यहां आ गई। इस कारण हम लोग अपने कमरे में जाकर बातें करने लगी। इसी बीच नौ बज गए। दरवाजे पर कालबेल बजी। आगए हुगाइगी भी आ गए।

" 'उन्हें देखते ही अली आगा उठे। बड़ी खुशी के साथ उन्हें बुला लाए और दोल्मे उनकी खिदमत में पेश कर दिए। आगए हुगाइगी भी तारीफ कर खाने लगे। उन्हें लेशमात्र इसका एहसास न था कि वे क्या खा रहे

है और न अली आगा को ही कि व दोल्मे मे खिला क्या रहे हैं ? अली आगा ने और दोल्मे अपने लिए माग और जो दोल्मे मैंने अपने लिए बनाए थ उन्हे लाकर अली आगा के सामने रख दिया। दो गिलास चाय दी और धडकते दिल स अनहोनी का इतजार करने लगी। आगए हगाइगी जब चलने को तयार हुए तो मैंने राहत की सास ली। खुदा का शुक्र अदा किया कि शायद उन पर मशरूम का असर नही हुआ। जैसे ही आगए हगाइगी दरवाजे के बाहर हुए बडे जोर से चीख मारकर गिर पडे खानम जान[2]।

"'अपने जीवन म इतनी दर्दनाक चीख मैंने कभी नही सुनी थी। सारे पडोसी आ गए। अली आगा भी बदहवास म दौडे। एबुलेंस को फोन किया गया और अस्पताल पहुचते पहुचते आगए हगाइगी का शरीर ऐंठन और ठडा पडने लगा। डॉक्टर की दवा के बाद भी आगए हगाइगी दम तोड चुके थे। उनकी लाश वहा रखी थी। पुलिस आ गई। सारी रिपोर्ट और वाकया सुनकर लोगो के लाख कहने के बावजूद वे अली आगा को जबरन ले गए। आप मेरी मदद करें। किसी से कहे नही वाकया के बारे म। पाकदामन[3] अली आगा को छुडाइए।'

'यही बात है, डॉक्टर। पर देखते हो कि बेचारा अली आगा मारा जा चुका था। यह तो उसकी किस्मत थी कि वह बच गया।

मेरे पूछने पर कि खानम फहमे का क्या होगा ?

खानम सादगी स बोली कि उसे भी यदि सजा मिली तो हल्की ही होगी। पर क्या उसकी आदत छूटेगी ? अभी तो खानम फहीमे काफी लोगो की जानें लेगी। आइए चलें।' कहकर खानम सादगी से खडी हो गई और हम लोग होटल के बाहर आ गए।

1 यह एक ईरानी भोज्य पदार्थ पकौडे की तरह होता है। इसमे अगूर के पत्ते म कीमा और चावल तथा चने की दाल को भरकर बनाया जाता है और भाप पर पकाया जाता है।
2 फारसी मे महोदय का सबोधन।
3 धन की बर्फी।

4 जलेबी।

5 फारसी मे महिला सबोधन शब्द।

6 अत्यधिक परपुरुषगामी स्त्री।

7 फारसी म प्रिय खानम अग्रेजी के माई डिअर के समतुल्य।

8 पाकदामन, जिसका दामन साफ हो, बेगुनाह व्यक्ति।

एड्स की छाया मे

मैंने मेहराबाद एयरपोट पर उनरते ही बाहर खडी पीले रग की टक्सी को बुलाया और ड्राइवर से होटल आर्या शेरेटन चलने के लिए कहा। तेहरान मरे लिए अजनबी न था। साल मे कई बार विश्वविद्यालय के कार्यों के लिए आना पडता था। इस बार भी तवरीज से चलन के पूव मरी सचिव न फान स मरे लिए कमर का आरक्षण करा दिया था। चूकि मामला डॉ० सूसन को तेहरान म रिसीव करके तवरीज लाना था, ताकि वह वहा मे थाडी दूर स्थित एक विशेष प्रयोगशाला के लिए अमेरिकन सहायता दिला सकें, इस कारण मुझे एक दिन पहले ही कुलपति महोदय के निर्देश पर आना पडा।

होटल पहुचकर टक्सी का पैस देने के बाद रिसप्शन काउटर पर बैठी सुदर महिला से पूछन पर पता चला कि मेरे लिए कमरा नबर 308 रिजव है। कमरे की चाबी लेकर लिफ्ट से जब तीसरी मजिल के अपने कमरे मे पहुचा तो तबीयत खुश हो गई। यह ठीक पहलवी एवेन्यू के सामने था। मुझे तेहरान मे पहलवी रियाबान[1] (एवेन्यू) विशेष रूप से सुदर लगती है।

कपडे बदलन से पहले मैंने फान द्वारा गारसा- से एक बोतल 'शिवाज रिगाल, सोडा और सासेज भी लाने का ऑडर दे दिया था। जब मैं शॉवर लेकर स्नानगृह से बाहर आया तो सारी चीजें कमरे मे मेज पर रखी थी। इसी बीच गुलदस्ते मे सुदर शीराज के गुलाब करीने स लगा दिए गए थे। लबा तुर्की तौलिया लपेटे ही मैंने बोतल खोली, सोडा

मिलाया और सासज का एक टुकड़ा खाया ही था कि मेरे टेलीफोन की घंटी बजी। पता चला तबरीज से मेरी फैकल्टी के डीन और सहयोगी डॉ० माहसनी बता रहे थे कि डॉक्टर सूसन बजाय कल आने के आज रात्रि में 12 बजे मेहराबाद एयरपोर्ट पर पान० एम० की तुर्की से आनेवाले विमान पर आ रहे हैं। अतः मैं उन्हें रिसीव करूं और वहीं होटल शेरेटन में ठहरा दूं। रात के 9 बजे थे। मेरे पास 3 घंटे का समय था। अतः सोचा कि क्यों न अपनी मित्र डॉ० शम्शी से बात की जाए और यदि उन्हें समय हो तो ये 3 घंटे उन्हीं के साथ बिताए जाएं।

डॉ० शम्शी के विषय में मैंने शायद आपको बताया नहीं। इनसे मेरी भेंट शीराज की एक अंतरराष्ट्रीय कॉनफ्रेंस में हुई थी। बड़ी तीव्र बुद्धि की इस वैज्ञानिक महिला से पहली ही बार प्रश्नोत्तर के बाद मित्रता हो गई थी। उनकी उम्र कोई 30-35 के आस पास होगी, पर देखने में 25 की ही लगती है। वह फारमाकालोजिस्ट है और इस विषय की जटिलता के विपरीत वह सुलझी हुई महिला है। उनका वैवाहिक जीवन अच्छा नहीं गुजरा था अतः अपने पति से तलाक लेकर अलग हो गई। बुद्धिमानी की बात उन्होंने यह की थी कि उनके संतान नहीं थी। शायद उन्हें इस परिस्थिति का आभास था। अतः वह संतान के पक्ष में कभी भी नहीं रहा। आजकल उनका सारा समय प्रयोगशाला और शोध कार्यों में बीतता था।

इसी कारण मैंने उनकी प्रयोगशाला में ही फोन करना ठीक समझा। फोन करते ही दूसरी तरफ चिरपरिचित आवाज आई डॉ० शम्शी की। मैंने उन्हें बताया, "मैं होटल आया शेरटन के कमरा-नंबर 308 में हूं। यदि अवकाश हो तो तुम भी यहीं आ जाओ। खाना साथ-साथ खाएंगे। समय भी अच्छा कट जाएगा।"

डॉ० शम्शी कुछ सोचकर बोली, "प्रयोगशाला से चलकर सीधे तुम्हारे होटल पहुंचने में करीब एक घंटे का समय लगेगा। अतः मैं 10 बजे तक पहुंचूंगी।"

मैंने उन्हें धन्यवाद देकर फोन रख दिया।

ठीक नौ बजे टेलीफोन पर रिसेप्शनिस्ट ने सूचना दी कि खानम डॉक्टर शम्शी मुझसे मिलने लिफ्ट से मेरे कमरे में आ रही हैं। यह

जानकर मैं तुरत खानम डॉक्टर शम्शी से मिलन के लिए लिफ्ट के पास चला गया। मेरे पहुचने के शायद दो सेकड बाद डा० शम्शी बाहर आईं। मुझे देखकर हाथ मिलाया। हम लोग कारीडोर से होते हुए कमरे मे आ गए। उन्हें सोफे पर बैठाकर मैं भी उनके सामने कुरसी खीचकर बैठ गया।

मेरे कुरसी पर बैठने के पूव ही डॉ० शम्शी न आखें घुमाकर कमरे का निरीक्षण कर लिया था। जसे ही उनकी नजर व्हिस्की क गिलास पर पड़ी, वह कहने लगी, "अरे वाह अकेले शाम काट रहे हो ? लाओ, एक पैग मैं भी लूगी। फिर देखा जाएगा।"

मैंने कुरसी पर बठन का इरादा छोड दिया। एक पैग अपन लिए और दूसरा डॉ० शम्शी के लिए बनाकर कुरसी पर बैठा।

मेरे पूछने पर डॉ० शम्शी कहने लगी, "आजकल तेहरान मे हेरोइन का प्रचार अधिक बढ गया है। मैं भी इसके प्रभावो को चूहो पर जाच रहो [redacted]। हेरोइन के प्रभाव को कम करने के लिए विभिन्न ओषधियो की फरमाकालोजी का अध्ययन कर रही [redacted]। पर मुझे ऐसा लगता है कि यह हेरोइन[3] लगातार अफगानिस्तान से आ रही है। रोकन का एक ही तरीका है कि इसके खाने पीने बेचनेवाला को मृत्युदड दिया जाए। पर कौन दे ? यह समस्या है।"

मैंने कहा, "यह हेरोइन का नशा करना सपन्नता का प्रतीक है। जब आदमी के पास सब कुछ हो जाता है तो वह इन लतो मे समय गुजारता है। तुम्हें जानकर आश्चय होगा कि भारत के मध्य-युग म माडू का सुलतान पारा खाता था और सारे दिन उसकी गरमी को कम करन के लिए सुदर हौजो मे, जिनमे गुलाब-सुवासित पानी आता जाता रहता, दिन भर अपनी रानियो से विहार करता और थककर सो जाता था। सारे दिन वह पानी म पड़ा रहता था। एक दिन कुछ अमीरो ने उसे पानी म डुबोकर मार दिया। तुम्हारे तेहरान म हेरोइन के प्रभाव से तो मकान, बाजार, कारें, कालीन और विभिन्न प्रकार के प्रसाधनो की भरमार है पर इनके धन का अत उसी प्रकार होगा जैसा माडू के सुलतान का हुआ था।"

मेरी बातो के समथन म डॉ० शम्शी ने सिर हिलाया और बोली,

"वाह, इतने दिनों बाद भेंट हुई और फिर तुम्हारी फिलॉसफी शुरू हो गई। मैं तो चाहती हूं कि आज की मुलाकात का पूरा उपयोग हो। व्हिस्की तुम्हारी अच्छी है, पर बातें नहीं।"

मैंने कहा, "डॉ० डियर, जहर को जहर मारता है, पर लगता है तुम्हारी सुंदरता व्हिस्की पीने के बाद और बढ़ गई है।"

मेरी बात सुनकर डा० शम्शी हंसी और बोली, 'तुम्हें ही लगता है, पर मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है कि तुम कुछ और कहना चाहते थे पर कह नहीं रहे हो।"

मैंने कहा, "नहीं बात ऐसी है भी और नहीं भी है—जब घड़ी देखता हूं तो लगता है समय भाग रहा है और तुम्हारी आंखों में भीतर झांकता हूं तो लगता है कि इनमें सुरूर अभी पूरी तरह से भरा ही नहीं है।"

"अरे वाह!" कहकर डा० शम्शी हंसी और उठकर कमरे में टहलने लगी।

मैं भी व्हिस्की का गिलास लेकर खियाबान पहलवी का उनके साथ देखने लगा। न जाने कैसे मेरा हाथ खानम डॉक्टर शम्शी की कमर में जा पड़ा और उन्होंने अपना सिर मेरे कंधे पर रखकर एक ही सिप में सारी व्हिस्की समाप्त कर दी। हम लोग खियाबान पहलवी पर चलती कारों की कतारों को देखते देखते कब हम बिस्तर हो गए, पता नहीं चला।

यदि मेरी घड़ी के ऐलार्म ने यह न बताया होता कि ग्यारह बज गए हैं तो हम लोग बिस्तर पर ही पड़े रहते। उठकर हम लोगों ने कपड़े पहने और भोजन करने नीचे चले आए। रक्त का उफान और व्हिस्की का प्रभाव कम पड़ चुका था, भूख लगी थी। खाना खाकर डॉ० शम्शी ने धीरे से मुझे धन्यवाद दिया। वह अपनी कार को स्टार्ट कर फिर मिलेंगे, कहकर चल दी।

मैंने भी टैक्सी मंगाई और मेहराबाद एयरपोर्ट की ओर अपने विशेष मेहमान के स्वागत के लिए चल पड़ा। पान० एम० की तुर्की की फ्लाइट एक घंटे लेट थी। मेरे सामने सिवा कॉफी पीने और घूमने के और कोई चारा न था। इस बीच मेरी निगाह न जाने क्यों एक लंबे अमेरिकन (मुझे वह अमेरिकन ही लगता था) पर जाकर रुक जाती थी। वह भी मेरी

ही भाति पान० एम० की तुर्की से आनेवाली फ्लाइट की प्रतीक्षा कर रहा था।

समय बीतता गया और जब फ्लाइट आ गई तो सूचना-केंद्र पर जाकर डॉ० सूसन को गेट नबर 5 पर मिलने की सूचना उद्घोषित कराने जा ही रहा था कि मैंने देखा वह अमेरिकन सा लगनेवाला व्यक्ति उद्घोषक से बातें कर रहा था।

अत जब वह वहा से हट गया तो मैंने भी अपनी बात उस उद्घोषक से कही। वह मेरी बात सुनकर कहने लगा 'आज डा० सूसन से मिलने काफी लोग आए हैं और ये सभी विदेशी ह।"

मैंने यो ही उससे पूछा कि कितने लोगा न डा० सूसन के विषय मे जानकारी चाही है तो वह कहने लगा, 'तीन लोग—एक आप, वह अमेरिकन और एक महिला ने भी डॉ० सूसन के विषय मे फोन पर पूछा था।'

इतने मे यात्रीगण सारी औपचारिकताए पूरी करके बाहर आन लगे तो मैं गेट नबर 5 पर पहुच गया। पर मेरी निगाहें उस अमेरिकन पर थी जो उद्घोषक के पास खडा डा० सूसन की प्रतीक्षा कर रहा था। उद्घोषक बीच-बीच मे डॉ० सूसन को अपनी विशिष्ट अग्रेजी मे उद्घोषणा केंद्र पर आने को कह रहा था।

करीब दस मिनट बाद डॉ० सूसन उदघोषक के पास आ गईं और उस प्रतीक्षारत अमेरिकन से बडी गमजोशी से हाथ मिलाया। उसने एक छोटा-सा पकेट डॉ० सूसन को दिया। इसके बाद वह बाहर आकर भीड मे गायब हो गया।

मैं बाहर गेट नबर 5 पर खडा अपने अतिथि की प्रतीक्षा कर रहा था। उदघापक की सूचना के अनुसार सूसन गेट-नबर 5 पर आईं तो मैंने उन्हें अपना परिचय दिया और यात्रा का समाचार पूछा।

उनकी एकमात्र अटैची को टैक्सी मे रखवाकर हम लोग होटल म आ गए। डॉ० सूसन काफी थकी थी। उनको उनके कमरे का नबर 803 बताकर मैं भी उनसे दिन मे एक बजे मिलने का कायक्रम बनाकर अपने कमरे म चला आया।

मेरी मीटिंग प्रात 8 बजे से 1 बजे तक विराजते-उलूम (शिक्षा मत्रालय) मे प्रारभ होनी थी। इस कारण जब घडी पर नजर गई तो रात्रि के 2 बजे थे और मैं भी होटलवालो का 6 बजे जगाने के लिए कहकर सो गया।

मीटिंग म मुझे अपने विश्वविद्यालय की समस्याओ से सदस्या को अवगत कराना था। प्रोजेक्ट को देखते ही मत्री महादय कहने लगे, "मैंने फोन पर रजाइमे म बनी विशेष प्रयोगशाला को दखने के लिए डा० सूसन को स्वीकृति दे दी है। यही नही, मैंने तुम्हारे कुलपति महोदय से भी बातें करके इस प्रोजेक्ट की स्वीकृति के लिए बता दिया है। हा, जो अमेरिकन वज्ञानिक आ रही थी निरीक्षण के लिए, वह आ गइ या नही?"

मैंने उन्ह सूचित किया, "श्रीमान, वह आ गई है और एक-दो दिन बाद वह निरीक्षण स्थल पर पहुच जाएगी।"

इसके बाद मत्रीजी अन्य वैज्ञानिका की समस्याए सुनने लगे। मीटिंग 12 बजे समाप्त हो गई। मैं भी अपन होटल म आया। रिपाट कमर मे रखी और चूकि 15 मिनट का समय था, अत मैंने कपडे बदले। एक बजे मैं होटल के लाउज मे आ गया।

कल शाम की थकी डॉ० सूसन आज ताजगी से भरी लग रही थी। उनके कपडे सूती थे और चेहरे का हल्का मेकअप उनके परिधान के अनुरूप था। वह कुरसी पर बठी सिगरेट पी रही थी। मुझे देखत ही उठ खडी हुई और हम लोग आमने सामने कुरसिया पर बैठ गए। डा० सूसन ने सिगरट आफर की पर मैंन शालीनता से मना कर दिया।

धुए के छल्ले निकालती हुई डॉ० सूसन कहन लगी, "आज तो मौसम बहुत ही सुदर है, पर हवा की तेजी यदि कम हा जाए ता अच्छा है।'

मैंन कहा, "तेहरान म प्रात से दोपहर तक हवा तज चलती है, पर रात्रि मे शात हा जाती है। तब मौसम काफी ठडा हो जाता है।"

मैंन डा० सूसन से पुन पूछा कि यदि वह चाह तो हम लोग यही होटल म अथवा कही और चलकर भोजन कर सकत हैं। साथ ही-साथ उनका क्या कायक्रम रहेगा, यह भी तय हो जाएगा।

डॉ० सूसन न कहा, "क्यो न तहरान के बाजार म चलकर भोजन

किया जाए और वहीं पर कुछ गलीचे भी देखे जाएं। मैं गलीचे खरीदकर ले जाना चाहती हूं।"

मैंने कहा, 'ठीक है, चलिए। टैक्सी बाहर से ही ले लेंगे।"

डॉ० सूसन ने अपना बैग लिया और हम लोग सुनहरी धूप का आनंद लेते टैक्सी में बैठकर तेहरान के बाजार में जा पहुंचे।

एक दुकान पर हम लोग बैठ गए। डॉ० सूसन ने करीब 20 गलीचा को देखने के बाद खाशानी रेशम का एक गलीचा 20 हजार तोमान में खरीदा। वह सचमुच सुंदर था और उसका दाम भी ठीक था। डा० सूसन को अधिक मोल भाव नहीं करना पड़ा, इस कारण वह प्रसन्न थीं। दिन के तीन बज रहे थे और मेरे पेट में चूहे कूदना शुरू कर चुके थे। अतः मैंने जब डा० सूसन को चिलो कबाब[4] की याद दिलाई तो वह तुरंत तैयार हो गईं।

थोड़ी ही दूर पर एक साफ दुकान में जाकर हम लोगों ने चिलो कबाब, दूग और कुछ सलाद का ऑर्डर दिया। जब दो काफी ऊंचाई तक चावल से भरी प्लेटें, करीब 250 ग्राम मक्खन से सनी दो दो कबाब आईं तो रुक पाना कठिन था। मैंने देखा, डॉ० सूसन बड़ी रुचि के साथ भोजन का आनंद ले रही थीं।

बातों बातों में मैंने उनसे पूछा, " चिलो-कबाब' के विषय में आपको कैसे पता है ?'

वह कहने लगी, "न्यूयार्क में मैं अकसर ईरानी रेस्ट्रां में जाती हूं और मुझे यह डिश पसंद है।"

'बड़े ताज्जुब की बात है कि अमेरिकन रुचि के साथ चिलो कबाब खाए ?" मैंने कहा।

डॉ० सूसन कहने लगी, "नहीं, ऐसी कोई बात नहीं है। यह वैयक्तिक रुचि का प्रश्न है।"

शाम को डॉ० सूसन के पास अमेरिकन दूतावास का निमंत्रण था। वह वहां जाने के लिए तैयार होने चली गईं। पर जाते समय वह तेहरान में एक दिन और रुककर और तेहरान विश्वविद्यालय के बैक्टीरिऑलोजी विभाग एवं क्राउन ज्वेल म्यूजियम को देखने की इच्छुक थीं। दूसरे दिन

प्रात 8 बजे होटल के लाउज म मिलना तय हुआ।

मैंन डॉ० शम्सी का फोन किया। फान पर उनकी चिरपरिचित आवाज सुनकर मैंने एक सास मे डॉ० सूसन के विषय में सब कुछ सुना दिया। मरी बात सुनन के बाद डॉ० शम्सी कहन लगीं, "मुझे तो कुछ अजीब लगती हैं तुम्हारी डॉ० सूसन। कहीं ये ईरानी तो नहीं हैं? कल पूछना, क्योंकि यह बहुत सभव है कि उनके माता पिता म से कोई एक आरमेनियन क्रिश्चियन रहे हों और अमरिका म गए हों। सूसन उन्हीं की लड़की हो या जो भी हो पूछना।"

मैंन कहा, 'मैं जरूर पूछूगा। पर वह बैक्टीरिऑलोजी विभाग का भी देखना चाहती हैं। विशेषकर डॉ० मुस्तफावी स भी मिलना चाहती हैं। क्या डॉ० मुस्तफावी अमरिका गए थे कभी?"

"पता नही।' डॉ० शम्सी का उत्तर था।

मुझे थकान थी, नींद भी आ रही थी, अत मैंने डॉ० शम्सी से 'कल रात्रि मे फान पर बातें होगी, शब ए खैर," कहकर विदा ली।

ठीक समय पर दूसरे दिन मैं जब लाउज म पहुचा तो डॉ० सूसन मेरी प्रतीक्षा कर रही थी। आज वह बडी सुदर दिख रही थी और उनके दाहिने हाथ की तीसरी उगली मे पडी हीरे की अगूठी काफी चमक रही थी। बैठते ही मैंने उनसे कुशल क्षेम पूछने के बाद उनकी अगूठी की प्रशसा की तो वह कहन लगी 'बस, यह साधारण-सी है, विशेष नहीं है।'

इस पर मैंन छूटते ही कहा, "कुछ भी हो यह आपके सौंदय मे इजाफा कर रही है।'

इतने म कॉफी, ब्रेड मक्खन, वेकेन और फ्राइड ऐग आ गया। नाश्ते के बीच मैंने उनसे पूछा कि वह पहले म्यूजियम चलना चाहेंगी या बैक्टीरिऑलोजी डिपाटमट?

डॉ० सूसन कहने लगीं, 'शाहयाद को देखन चलूगी और बाद म म्यूजियम।"

मैंन डॉ० सूसन के कहने पर डॉ० मुस्तफावी का फोन किया और अगले दिन उनके डिपाटमेंट मे पहुचकर साथ साथ एक बजे लच लेन का उनका अगला आग्रह स्वीकार कर लिया। इसकी सूचना डॉ० सूसन

को भी दे दी। अब कार्यक्रम तय था। टैक्सी मे बैठते ही मैंने पूछा, "क्या डा० मुस्तफावी आपके पुराने परिचित है ?" इस पर उनके स्वीकारात्मक उत्तर को सुनकर मैंने पुन पूछा, "आपको गलीचा के विषय म इतना कसे पता है डॉ० सूसन ? क्या आपके यहा कोई गलीचो का व्यापार करता था ?"

यह सुनकर डॉ० सूसन कहने लगी, "हा। यही समझिए। मेरी मा के भाई कारपट्स का व्यापार करते हैं और शायद आपको जानकर आश्चर्य होगा कि मेरी मा ईरानी हैं, बाप क्रिश्चियन।"

"अरे वाह, तभी तो आपको ईरान के सारे रस्मोरिवाज का पता है। चिलो-कबाब पसद है, दूग पसद है और गलीचो को खरीदने की आदत है।"

इसके पहले कि वह कुछ जवाब देती, टैक्सी तेहरान के विख्यात शाहयाद पर पहुच चुकी थी। शाहयाद ईरान के साम्राज्य के 2500 वष पूरे होने के उपलक्ष्य मे इरान के शाह मोहम्मद रजाशाह पहलवी ने बनवाया था।

टक्सी को फिरदौसी एवन्यू पर स्थित बक मरक्जी ईरान—ईरान के सेंट्रल बक तक चलने को कहा। फिरदौसी एवन्यू शाहनामा के विख्यात शायर फिरदौसी की स्मृति मे बनाया गया था। बक मरक्जी के नीचे बने तहखाने म, जिसम दरवाजा का खुलना बद हो जाना स्वचालित था, हम लोगो ने 100 रियाल के टिकट लिए और स्वचालित लोहे के मोटे दरवाजे से भीतर प्रविष्ट हुए। आखें सचमुच चौंधिया जाती हैं वहा। जवाहरातो और मोतियो स जडे थे कटोरे जो शराबनोशी के लिए रूबियो स मडित थे, रसोईघर के बरतनो मे फीरोजा, लाल, मोतिया और नीलमो का उपयोग हुआ था।

यह सब दखते हुए उस विख्यात ग्लोब को देखन पहुच गए जिसम ईरान, फ्रास, इगलड और एशिया हीरो से जडे थे। बाकी भाग जैसे अमेरिका, अफ्रीका मोतिया तथा अन्य देश और समुद्र लाल पत्थरो से जडे हुए थे। ग्लोब के चारो पैरो म रूबिया और हीरे जडे थे। इसका निर्माण ईरान के नसरुद्दीन शाह के जौहरी इब्राहीम मसीही द्वारा सन् 1869 म

किया गया था।

सबसे अत मे हम लोगों ने विश्वविख्यात हीरा दरियाए-नूर देखा, जो कोहनूर के साथ भारत से लाया गया था। उसे देखकर डॉ॰ सूसन मुग्ध-सी देखती रही। अत मे मैंने उनका ध्यान तख्ते-नाऊस की ओर दिलाया जो भारत की सपदा थी और जिसका मूल्य आक पाना कठिन था। सारा का सारा सिंहासन सोने का बना, जवाहरातो से जड़ा चमक रहा था। यह भारतीयो के उत्कृष्ट हस्तशिल्प का प्रमाण था।

समय कब बीता पता ही नहीं चला। पर इस दौरान जहा डॉ॰ सूसन के निरीक्षण की मैंने सराहना की, वहीं दूसरी बात जो मेरे मस्तिष्क मे खटक रही थी, वह भी देखी। डॉ॰ सूसन का हर जवाहरात को देखने के बाद अपनी अगूठी को ठीक करना और पास खड़े हुए व्यक्ति से थोड़ी दूरी बनाए रखना अजीब-सा था। शायद उन्हें लोगो से दूर रहने की आदत थी, इस कारण वह सावधान रहती थी—यह सोचकर मैं चुप रह गया।

टैक्सी लेकर हम लोग खियाबान फिरदौसी से जब आय शेरेटन होटल पहुचे तो शाम हो गई थी अत उनसे नौवे के भोजन कक्ष मे 9 बजे मिलने का वादा कर हम लोग अपने-अपने कमरो मे चले गए।

हम लोग ठीक समय पर होटल के सुदर सजे भोजन कक्ष मे आ गए। उस समय डा॰ सूसन सामान्य कपडो मे थी। उन्होंने शिशलिक के स्टीक सलाद, ब्रेडसूप और ईरान की ताजी बनाई हुई शराब पाकदिस का ऑर्डर दिया। भोजन का पूर्ण आनद लेने के बाद डॉ॰ सूसन कहने लगी, 'ईरान मे प्रगति हुई है और यह लाल अगूर की वाइन पाकदिस इसका द्योतक है। इसका टेस्ट अच्छा है और यह कैलीफोर्निया की रेडवाइन की तरह है।"

मैंने भी समर्थन मे सिर हिलाया। इस पर डॉ॰ सूसन ने कहा, 'क्यो न साकी कक्ष मे चलकर नर्तकों का बेले डास देखा जाए।'

यद्यपि मुझे नींद आ रही थी पर विकल्प नही था। अत हम डास देखने के लिए साकी कक्ष मे जा बैठे।

साकी-कक्ष आय शेरेटन का सचमुच बहुत ही सुदर कक्ष था। लाल

दीवारों पर रेशम के पर्दे और हलकी धुंधली रोशनी बीच में लगे बहुत बड़े फानूस से छन छनकर आ रही थी। यह संगमरमर के फर्श पर एक दूसरा प्रभाव उत्पन्न करती थी। डांसर आइदा संगमरमर सी सफेद, हरी आंखों, काले बालों तथा तराशे हुए शरीर की विख्यात नर्तकी थी। उसने निम्न अनि आवश्यक वस्त्र, वह भी नीले रंग के, गले में मोतियों की माला और हाथों में कुछ गहने पहने जब फर्श पर संगीत की धुन पर नृत्य आरंभ किया तो लगता था कि समय रुक गया है। उसका उरोजों को और जांघों को डफ की धुन पर थिरकाने का ढंग मनोहारी था। बीच बीच में उसका बल खाकर चलना और घूमना लोगों को मुग्ध किए था। डॉ० नूसन पार्कदिम को पीने पर जुटी थीं और मैंने सिगरापा वोदका मंगा ली थी। (मन और मस्तिष्क दोनों को सुचारु रूप से जागरूक रखने में इससे सहायता प्राप्त करने के लिए।) इस ढंग की सभा से 12 बजे रात्रि में फुरसत मिली तो हम लोग प्रातः 8 बजे नीचे जलपान कक्ष में मिलना तय कर चल दिए। पर डॉ० सूसन की ऐसे डांस देखने की रुचि मुझे कुछ अजीब-सी लगी। कमरे में आकर डॉ० शम्मी से बातें करने का मूड था, पर घड़ी पर जब नजर डाली तो उन्हें जगाना ठीक नहीं लगा। अतः सोने के सिवा कोई चारा नहीं था।

दूसरे दिन निश्चित समय पर जलपान करके हम लोग तेहरान विश्वविद्यालय में बैक्टीरिऑलोजी एवं वाइरोलोजी विभाग के अध्यक्ष डॉ० मुस्तफावी के पास पहुंच गए। डॉ० मुस्तफावी आम ईरानियों की भांति गोर-वर्ण के न होकर कुछ भारतीयों के से दिखे। फ्रैंचकट दाढ़ी, चमकते दांत हंसने पर दीखते थे। वह थे भी आह्लिदा में। लंबे और गुणीन, वर्षों तक पूर्वी जर्मनी में रहे और मानव में उत्पन्न रोग को रोकने की क्षमता कम होने के विषय पर उनका बहुत प्रशंसित कार्य था। इसके लिए वह कई बार अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार भी पा चुके थे। वह इम्यूनोलॉजी के विशेषज्ञ थे और वाइरस[5] द्वारा इम्यूनोडेफिशियेंसी पर कार्य करा रहे थे। उनके शोध छात्रों की संख्या अधिक थी और वैज्ञानिक सम्मेलनों में उनके कार्य की धाक रहती थी। उन्हें अमेरिका भी बुलाया गया था। वहां भी उनके वैज्ञानिक भाषणों की सराहना हुई थी। स्वाभाविक था

डॉ० सूसन, जो वाइरसों की विशेषज्ञ भी थी, उनके काय से परिचित थी।
अत मिलते ही वे लोग विभिन्न वाइरसों और रोगकारी पैथोजेंस[6] के विषय में बातें करते रहे। डॉ० मुस्तफावी ने उनका परिचय अपने छात्रों से कराया, प्रयोगशाला दिखाई, इलेक्ट्रॉन माइक्रोस्कोप दिखाया और अत में लच के लिए वह हम लोगो को टीचर्स कटीन म ले गए। सुस्वादु भोजन की समाप्ति पर तुर्की काफी आई और डा० मुस्तफावी स वाइरस विशेषकर एस० एल० वी० (जिसके प्रतिरूप एड्स नामक रोग उत्पन्न करते है) के विषय मे, हरपस वाइरस, इन्फ्लूएजा वाइरस तथा अन्य प्रकार की फफूदियों और सबधित रोगकारी कीटाणुओं के विषय में बातें करते रहे। हम लोगो की भेंट का समय समाप्त हो गया था। अत शालीनता से डॉ० मुस्तफावी ने पहले डॉ० सूसन से हाथ मिलाकर विदा लेनी चाही पर पता नही कैसे डॉ० सूसन की अगूठी से डॉ० मुस्तफावी की तर्जनी उगली छिल गई। पर यह मात्र खरोच थी। इस कारण किसी ने इसको महत्त्व नहीं दिया। हाथ पोछकर डॉ० मुस्तफावी ने मुझे धन्यवाद दिया कि मैंने डॉ० सूसन को उनकी प्रयोगशाला दिखाने का कार्यक्रम बनाया। अपनी कार स वह हम लोगो को टैक्सी स्टैंड तक छोडने आए और खुदा हाफिज' कहकर हम लोगो ने उनसे विदा ली।

होटल पहुचकर हम लोगो ने सारा सामान पैक कर होटल का बिल अदा किया और तबरीज के लिए रवाना हो गए।

तबरीज म मैं डॉ० सूसन को इटरनेशनल होटल म उनके पूर्वारक्षित कमरे म पहुचाकर उसी टैक्सी से अपने एपार्टमेंट म पहुच गया। सारा एपार्टमेंट वही था। यदि कुछ बदला था तो वह था मेरा मन।

स्नान करके मैंने डॉ० शम्सी को फोन किया। इत्तफाक था कि वह घर पर थी और फुरसत म थी। अत मैंने विस्तार स यात्रा के विषय म उन्हें बताया, और यह भी बताया कि लौटते समय मैं डॉ० सूसन को लेकर तहरान आऊगा एक सप्ताह बाद, तब भेंट होगी। यात्रा की थकान थी। अत मैंने शब्बखैर कर डॉ० शम्सी से फोन पर विदा ली।

दूसरे दिन ठीक आठ बजे नियमानुसार मैं अपनी प्रयोगशाला म था। छात्रों की शोध की समस्याओं का समाधान व प्रोजेक्ट पर काम शुरू

करना था, अत मैं उनसे उलझ गया। लच के समय जब फुरसत मिली तो सीधा विश्वविद्यालय की कैंटीन म जाकर लच लिया। अपनी प्रिय तुर्किश[3] कॉफी पी। प्रयोगशाला मे आकर पुन अपने कार्यों को निपटाने मे लग गया। शाम को कोई तीन बजे फोन की घटी बजी। पता चला कुलपति महोदय मुझस 8 बजे रात्रि को अपने कक्ष मे बातें करना चाहते है।

"मैं आ जाऊगा," कहकर मैंने उनकी सेक्रेटरी से पुन 7 55 पर फोन करने को कहा।

छात्रो के शोध प्रबधो से उलझता मैं दोबारा याद दिलाने पर फाइलें लेकर कुलपति महोदय के कक्ष मे जब पहुचा तो लोग जा चुके थे। कुलपति महोदय फाइलें देख रहे थे और मुझे आते देख बडी सहजता से सामने की कुरसी पर बैठ जाने का सकेत कर कार्यरत हो गए। करीब दस मिनट बाद जब उन्ह फुरसत मिली तो कहने लगे, "डॉ० सूसन आज प्रात मेरे साथ थी। उ हे वह विशेष केंद्र दिखाने के लिए तुम्ही को जाना होगा। मैंने वहा के निदेशक डॉ० अदबीली को फोन से तुम्हारे और डॉ० सूसन के निरीक्षण की सूचना दे दी है और हा मत्री महोदय ने 13 लाख तूमान नए प्रयोगो के लिए तथा एक करोड तूमान एक और प्रयोगशाला के लिए रजाइए मे स्वीकृत किए हैं। इस काय को प्रारभ कराने के लिए भी तुम्ह डा० अदबीली से बातें करनी होगी।"

मैंने कुलपति महोदय की बात सुनकर कहा, "ठीक है, पर कृपया आप यह बताइए कि सस्थान तो रेजाइए झील के किनारे बना है, वह तो सुरक्षा विभाग का है। क्या इसके लिए सुरक्षा विभाग से पूव स्वीकृति की आवश्यकता नहा होगी?"

"होनी तो नही चाहिए—यदि वह औपचारिकता आवश्यक होती तो डा० अदबीली सूचनास्वरूप कहते जरूर। पर चूकि तुम कह रहे हो इस कारण मैं कर्नल अफगाही से बात कर लूगा। किंतु तुम लोगो का जाना कल है। अब मैं चलूगा। डॉ० सूसन हम लोगो के भोजन पर आज अतिथि हैं।' कहकर कुलपति महोदय उठे। उन्ही के साथ मैं भी बाहर आ गया।

बरामदे मे से होता हुआ जब मैं अपनी प्रयोगशाला की सीढिया चढ

रहा था तभी फैकल्टी डीन डॉ० मोट्सिनी मिल गए। उन्होंने अपने विशेष मजाकिया अंदाज मे मुझसे तेहरान का समाचार, नए मेहमान (डॉ० सूसन) का हाल और अन्य बातें पूछ ली।

मैंने कहा, "डाक्टर साहब, यदि आप मेरे साथ होते तो तेहरान मे अच्छा रहता, क्योंकि आपका स्वभाव डॉ० सूसन के स्वभाव मे मेल खाता है।"

मेरी बात सुनकर डॉक्टर मोहसिनी मुसकराते हुए कहने लगे, 'मैं तुम्हारी तरह जवान तो रहा नहीं। कुलपति महोदय को अमेरिकन पसंद भी हैं क्योंकि वह वहां पर आरकेनसास विश्वविद्यालय में रहे हैं, अतः उनकी बातें करने लायक नहीं हैं।"

मैंने कहा "जनाब जवानी और इल्म दोनो दुश्मन हैं। मैं भी इल्म की खोज में हूं। अतः आपकी तरह बूढ़ा हो गया हूं।"

डा० मोहसिनी मेरी बात सुनकर हसते हुए बोले, 'यार, यह बताओ कि डॉ० सूसन को इतना महत्त्व क्यों दिया जा रहा है ? क्या बात है ? कहीं यह कुछ और मकसद लेकर तो नहीं आई ?"

मैंने कहा "मैं क्या कह सकता हूं, पर मेरे दोस्त, वह वैज्ञानिक कम लगती हैं और बाकी सब कुछ हो सकती हैं।"

डॉ० मोहसिनी कहने लगे वह कल जा रही हैं रेजाइए। वहां वह विशेष रूप से विकसित की गई बायोलाजिकल वारफेयर की प्रयोगशाला देखेंगी। इसका क्या तात्पर्य है ?"

मैं सोचते हुए कह उठा, "डेटा कलेक्शन या सूचना एकत्र करने के लिए हो सकती है गुप्त रूप मे इनकी यात्रा। अमेरिकन सरकार को यहां के युद्ध संस्थान 'पेंटागान' को सूचनाएं देना भी एक कारण हो सकता है। वास्तविक बात क्या है कुलपति महोदय ही जानें या मंत्री महोदय। जो भी हो मुझे तो उनके साथ कल रेजाइए जाना होगा।'

'देखो, बचे रहना, तुम्हारे जैसे जवानों के लिए औरतें खतरनाक होती हैं" कहकर डॉ० मोहसिनी चल दिए और मैं भी अपनी प्रयोगशाला के दरवाजे को खोलकर कपड़ो को हैंगर मे डालकर घर की ओर कार से चल दिया।

तो कार्यालय था, उसके नीचे के फ्लोर में बैक्टीरिओलोजी का विभाग था। बैक्टीरिया मानवों में विभिन्न रोग पैदा करते थे, कुछ पशुओं में भी। कुछ भोजन को प्रभावित करने की क्षमता रखते थे। इसके नीचे सारे फ्लोर पर वाइरसों की प्रयोगशाला थी। इनमें तरह तरह के वाइरसों के कल्चर रखे जाते थे। सबसे नीचे के फ्लोर पर चूहा, गिनीपिग, खरगोश और पौधों के ऊपर प्रयोग करने का प्रावधान था। इस संस्थान में करीब 20 वैज्ञानिक अनुसंधान करते थे।

चूंकि मैं फ्रेंच भाषा से परिचित नहीं था, अतः डॉ० अदवीली शिष्टाचारवश पुनः अंग्रेजी में बातें करने लगे। वह डॉ० सूसन को तमाम रोगकारी बैक्टीरियाओं के बारे में बता रहे थे। उस पूरे कक्ष को देखने के बाद वह डॉ० सूसन के साथ वाइरसों के विषय में चर्चा करने लगे जिनमें से मुख्य थे—जुकाम का राइनोवाइरस 14, इन्फ्लूएंजा वाइरस, हर्पिस और अनेक रोगों के उत्पन्न करनेवाले साल्ट 4 बी और ऐडोनो वाइरस।

उनकी बात सुनकर डॉ० सूसन एक शब्द भी नहीं बोली थी, पर जब उन्होंने वाइरस के विषय में बताना आरंभ किया तो डॉ० सूसन का मौन भंग हुआ। वह कहने लगी, "यह कार्य तो अमेरिका में भी किसी ने अभी इन प्रजातियों (स्ट्रेंस) पर नहीं किया है। आपका यह कार्य सराहनीय है। पर देखिए, इनका दुरुपयोग नहीं होना चाहिए।"

मुसकराते हुए डॉ० अदवीली बोले, 'इनका दुरुपयोग कैसे हो सकता है जब इनके विषय में हम लोगों को ही पूरा पता नहीं है।"

'ठीक कह रहे हैं आप, पर क्या आप मुझे इस वाइरस का एक नमूना भी देना पसंद करेंगे ? मैं भी इसी वाइरस के स्ट्रेन पर कार्य आरंभ करना चाहूंगी।" डॉ० सूसन ने पूछा।

इस पर डा० अदवीली चुप रहे और आगे बढ़कर दूसरे वाइरसों के विषय में बताते रहे। पर लगता था डॉ० सूसन की रुचि समाप्त हो गई थी। जब हम लोग सबसे नीचे की प्रयोगशाला में जा रहे थे तो सीढ़ियों से एकाएक डा० सूसन फिसल गईं और उन्हें सहारा देने के लिए डॉ० अदवीली ने उनके हाथ को पकड़ना चाहा तो डॉ० सूसन की अंगूठी की

खरोच डा० अदवीली के हाथ म लग गई।

चूकि मैं उनके दूसरी तरफ था इस कारण डॉ० सूसन को मैंने सहारा देकर खडा किया और डॉ० अदवीली के कमरे म ऊपर ले आया। डॉ० अदवीली स्वत पानी स हाथ धोकर अपने स्थान पर आए। डा० सूसन का घुटना म साधारण-सी चोट लगी थी। चाय के साथ दर्द निवारक दवा क बाद वह स्वाभाविक हो गई।

मैंन डा० अदवीली को चाय मगाने का सकेत किया। चाय पीने के बाद हम लोग लच लेने कटीन मे चले गए।

लच के बाद डॉ० अदवीली के साथ हम लोग रेजाइए झील देखन गए। झील लबी झील जिसम तेज हवा के कारण काफी ऊची तरगें उठती थीं। मुझे तो वह झील कम समुद्र अधिक लगी। खारे पानी की वह झील डॉ० अदवीली के अनुसार करोडो वष पहले समुद्र ही थी, पर भूतल मे परिवतन होने के कारण अन्य स्थानो का समुद्र सूख गया, जमीन निकल आई किंतु यहा पर परिवतन न हो सका। अत यह खारे पानी की झील ही रही। इसके चारो तरफ मीलो तक मानव का निशान नही था। यदि कुछ था तो वह मात्र सैनिक प्रयोगशाला थी जिसे देखने को डॉ० सूसन आई थी। शहर रजाइए यहा स 3 किलोमीटर दूर था।

हम लोग शाम को तबरीज पहुच गए और डॉ० सूसन को होटल म छोडकर मैं अपने एपाटमट मे चला आया। तीन दिनो तक डॉ० सूसन के कायक्रम क्या रहे, मुझे पता नही। पर एक दिन जब कुलपति के सक्रेटरी ग्वानम माहीन ने मुझ फोन पर बताया कि मुझे डॉ० सूसन के साथ तेहरान जाना होगा तथा वही पर शिक्षामत्री से भेंट करनी होगी, इस विषय से सबधित फाइल मरी मज पर 15 मिनट म पहुच जाएगी, तो मुझे पता चला कि एक सप्ताह बीत गया।

अपने शोध निबंध को समाप्त नहीं कर पाया था कि कुलपति कार्यालय से फाइल लेकर एक व्यक्ति आ गया। काय समाप्त कर मैंन फाइल पलटनी आरभ की तो उसमे डॉ० अदवीली का एक पत्र मनस अपगाही के नाम था, जिसम उन्होंने डॉ० सूसन के विषय में लिखा था कि इन्होंने एक विशेष वाइरस कोडनेम शीराज का नमूना ले जाना

चाहा, पर मैंने दिया नहीं। इनकी यह रुचि इनके मात्र वज्ञानिक होने का सकेत नहीं है।

इस पत्र को पढकर मुझे आश्चर्य था कि यह फाइल लेकर मुझे क्यों मत्री महोदय से मिलने जाना पड रहा है। पर चारा ही क्या था। दूसरा पत्र था कुलपति महोदय का मत्री के नाम जिसमे ग्राट की कापी (जो करीब सो पृष्ठों की थी) लगी थी। फाइल लेकर मैंने उसे ब्रीफकेस मे रख लिया और शाम को जब काय समाप्त हो गया तो लेकर घर चला आया।

डॉ० सूसन के साथ तेहरान की यात्रा प्लेन मे सामान्य थी। इस बार उनका तेहरान का होटल तो वही था पर कमरा बदल गया था। मेरा कमरा भी उन्ही के बगल मे था। शाम को डॉ० सूसन का कुछ और कायक्रम था और मुझे शिक्षामत्री से भेंट करने विराजते-उलूम शिक्षा मत्रालय मे जाना था। अत मैंने मत्री महोदय से समय पर जाकर भेंट की। उन्होंने तत्काल ग्राट स्वीकृत कर पत्र लिखवाया और मुझे दे दिया। पर डॉ० अदवीली के पत्र की प्रतिलिपि को पढकर कुछ सोचने के बाद उन्होंने किसी को फोन किया और जब उधर से सबध हो गया तो वह कनल अफगाही से बातें कर रहे थे और उन्होंने डा० अदवीली के पत्र का भी जिक्र किया। इस पर कनल अफगाही का उत्तर क्या था, मैं नहीं जान सका, पर मत्री महोदय उसके बाद प्रसन्न नहीं लगे। थोडी देर बाद मुझे जाने का सकेत मिला।

मैं शिक्षा मत्रालय से निकलकर सीधे डॉ० शम्शी की तेहरान विश्वविद्यालय मे स्थित प्रयोगशाला गया और फिर हम लोग वहा से चलकर करीम खा जद एवन्यू पर स्थित सुदर पिज्जा के रेस्ट्रा मे काफी पीने के लिए आकर बैठ गए।

तेहरान से तबरीज आकर जीवन यथावत हो गया। वही शोध प्रबधो व शोध पत्रो का लिखना, ठीक करना और प्रकाशन हेतु भेजना फकल्टी मीटिंगें आदि चलती रही। एक बार हम लोग फकल्टी की वार्षिक मीटिंग मे थे। सारी समस्याओ को निपटाने के बाद जब मीटिंग समाप्त हुई तो डीन डा० मोहसिनी ने मुझे रोक लिया। उनकी प्रिय चाय आ गई। उनके

अपनी उगलियो म कोई अगूठी आदि नहा पहने थी। मैंन ध्यान से देखा था कि 'वेब मिली' म जवाहरातो को देखत समय वह अपनी अगूठी को ध्यान से देखती रहती थी।

"जब डॉ० सूसन तेहरान मेरे साथ वापस चली गई तो उन्होंने अपनी अगूठी उतारकर दूसरी अगूठी पहन ली थी। इन सब बातो को देखते हुए अब आप क्या सोचते हैं?"

मेरी बात सुनकर डॉ० मोहसिनी न अपने पाइप मे स धुआ छोड़ा और कुछ सोचते हुए बोले, "जब मैं ग्लासको—इग्लड मे स्काटलडयाड की विषो से सबधित एक प्रयोगशाला म शोध करने को आमत्रित किया गया था तो वहा रहते हुए मेरी मित्रता उसी प्रयोगशाला के एक वैज्ञानिक डॉ० मैरी ग्रारट से हो गई थी। वह सूक्ष्म, अति सूक्ष्म यत्र जो विषैले इजेक्शन देने के काम आते हैं जासूसी के लिए, विकसित करन मे लगे थे। यदि मुझे सही याद है तो उसमे एक अगूठी भी थी। इस अगूठी म लगे नग म एक बहुत मोटे सूराख से एक माइक्रोसीरिंज की सूई निकलती थी और वह वाछित व्यक्ति के शरीर मे धीरे से चुभोई जा सकती थी। इसमे विष रखा जा सकता था। अगूठी के भीतर का जो हिस्सा उगलियो के ऊपर रहता है उसमे एक हलका और बिंदीनुमा प्वॉइटर रहता है, जिस पर उगली के मोड़ते ही दबाव पड़ता है और विष सूई स बाहर आ जाता है। दूसरे शब्दो मे यह माइक्रोसीरिंज के पिस्टन का काम करता है। अब यदि तुम मान लो कि डॉ० सूसन की उगलियो मे इस प्रकार की ही अगूठी थी, जिसम विष के स्थान पर वाइरस को विशेष द्रव्य मे भरकर रख दिया जाए तो अगूठी के भीतरी हिस्से पर दबाव पड़ते ही वाइरस सूई की नोक म बाहर आ जाएगे। जिसको भी यह चुभोई जाएगी, उस पर वे प्रभाव दिखाएगे।"

'आपकी बात समझ मे आती है पर डॉ० अदवीली को क्यो चुना डॉ० सूसन ने यह समझ मे नही आता, मैंने कहा।

इस पर डॉ० मोहसिनी का उत्तर था हो सकता है डॉ० सूसन ने यह यात्रा डॉ० अदवीली को हटा देने के लिए ही की हो। चूकि डॉ० अदवीली प्रगतिशील विचारधारा के वैज्ञानिक थे और वह बहुत अशो मे

अमेरिका के विज्ञान पर एकाधिपत्य के विरुद्ध थे। साथ-ही-साथ वह ईरान के विकास के हित म जिन वाइरसो पर काय कर रहे थे, वह इस देश की सुरक्षा के लिए अति महत्त्वपूण थे। अमेरिकनो को सभवतया यह रुचिकर न लगा हो और उन्होने ईरान का हित करनेवाले अपने सौदे के विरुद्ध जा रहे व्यक्ति को रास्ते से हटाकर घाटे के सौदे को मुनाफे मे बदलने के लिए डॉ० सूसन का प्रयोग किया हो। तुम्हे तो पता है कि डॉ० अदवीली ने कनल भफगाही को इस सदभ मे पत्र भी लिखा था और उसकी प्रतिलिपि सुरक्षा मत्री महोदय को भी भेजी थी। मेरे विचार म यह षड्यत्र है 'पेंटागान' का, जिसके तहत बायोलाजिकल युद्ध हेतु ईरान के प्रयासो को नष्ट कर दिया जाए। इसके बाद ईरान को महगे भाव पर वे बैक्टीरिया और वाइरस उपलब्ध कराए जाए तो ईरान अनुगृहीत भी रहेगा और अमेरिका का मित्र भी।"

डॉ० मोहसिनी के इस तक को सुनकर मैंने मन ही मन यह तय किया कि मैं आज डॉ० शम्शी से डॉ० मुस्तफावी के स्वास्थ्य के विषय म पता लगाऊगा।

फिर मैंने डॉ० मोहसिनी से कहा "डॉक्टर यदि आपकी बात सही है तो यह भी स्पष्ट है कि डॉ० सूसन अमेरिकी प्रयोगशाला मे विकसित एडस के वाइरस की टेस्टिंग इस यात्रा मे करने आई हो और इसके शिकार डॉ० अदवीली हुए हो। अब यह देखना है कि डॉ० मुस्तफावी कैसे है ?"

इस पर डॉ० मोहसिनी ने डॉ० मुस्तफावी के घर पर फोन किया। और यह पता चला कि डॉ० साहब अस्पताल मे हैं। उस अस्पताल का नबर लेकर जब वहा के इजाज म मैंने डॉ० मुस्तफावी के विषय मे पूछा तो उत्तर सतोषजनक नही था। अत मैंने डॉ० मोहसिनी को फोन दे दिया और जो सुना वह वही था जिसकी आशा थी।

डॉ० मुस्तफावी के रोग के सारे लक्षण डॉ० अदवीली के-से थे। उन्हे उपचार हेतु विदेश भेजा जा रहा था। यह सुनकर डॉ० मोहसिनी और मैं हतप्रभ-से बैठे रहे। फिर चाय मगा ली गई। तब हम लोग वार्तालाप के मूड मे आए। सबसे पहले डॉ० मोहसिनी बोले, 'मेरे विचार से यह षडयत्र ही है और इसमे स्वास्थ्य मत्री और कुलपति का भी हाथ है,

क्योंकि कल मेरी भेंट कुलपति महोदय से हुई थी। वह स्वस्थ हैं और तुम्हें यह जानकर आश्चर्य नहीं होगा कि डॉ० सूसन कुलपति महोदय की हमबिस्तर रही थीं। करीब-करीब हर रोज उनसे भेंट होती थी, लेकिन उन पर इस रोग के लक्षण नहीं दिखाई पड़ते। अतः ये ही इसके सूत्रधार हैं।' फिर कुछ सोचते हुए डॉ० मोहसिनी कहने लगे, "यार! तुम तो बचे हो यही खुशी है, पर देखो, अभी कितनों को यह रोग लगता है। गनीमत है, हम लोगों ने डॉ० सूसन को अप्रसन्न नहीं किया। पर अब तो ईरान में भी एड्स फैलेगा क्योंकि जिन लोगों को यह हुआ है उनकी प्रेमिकाएं आदि प्रभावित होंगी और अन्य लोग भी। इस प्रकार हम लोग एड्स की छाया के तले जी रहे हैं।" कहकर डॉ० मोहसिनी उठ खड़े हुए। रात्रि के 12 बज चुके थे। हम लोग अब सड़क पर अपनी कारों में आए तो सारा तबरीज सो रहा था और लगता था कि एड्स के भय को कम करने के लिए ही हल्की-हल्की बर्फ गिर रही थी।

1 पहलवी खियाबान तहरान का प्रसिद्ध राजपथ। खियाबान के अर्थ एवेन्यू, मुख्य पथ होता है।
2 गारसों फ्रेंच भाषा में बटर के लिए प्रयुक्त होनेवाला शब्द।
3 हेरोइन मादक पदार्थ जो अफीम से बनाया जाता है।
4 चिलो कबाब ईरानियों का प्रिय भोजन। इसमें चावल और भेड़ का कबाब प्याज और मक्खन के साथ रहता है।
5 वाइरस विषाणु जो शरीर में अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न कर सकते हैं।
6 पैमार्जेस एलगी या फफूंदी से अथवा अन्य वानस्पतिक पदार्थों से उत्पन्न रोगकारी रासायनिक पदार्थ।
7 इलेक्ट्रॉन माइक्रोस्कोप विषाणुओं और कोशिकाओं के अध्ययन में प्रयोग होनेवाला विशिष्ट सूक्ष्मदर्शी।
8 तुर्किश कॉफी इसको बहुत कम पानी मिलाकर खूब गाढ़ा बनाया जाता है और इसी में इलायची डालकर पिया जाता है।

नशालु

नवबर म तेलअबीव (इजराइल का प्रमुख नगर) शाम को और सुदर हो जाता है। गरमी का पता ही नही चलता। शीत का प्रकोप हलका रहता है। भूमध्य सागर का गजन और उसकी उठती ऊची ऊची लहरें फेनिल होकर एक अजीब-सा समा बाध देती हैं। शाम को मैलानियो का ताता लग जाता है। डीजनगाफ पर बिना धक्के खाए चल पाना कठिन हो जाता है। रेस्त्राओ मे बैठने की जगह नही रहती। इस कारण मैं रिहोवोथ से (जहा पर वाइजमान इस्टीटयूट ऑफ साइस नामक विश्व-विख्यात विज्ञान केंद्र है) रात्रि मे 9 बजे चलता था। नेक्स्ट मे करीब बीस मिनट मे तेलअबीव पहुच जाता था।

भीड को बैठकर देखने का अजीब आनद होता है। इसे वही समझ सकता है जिसने कभी घटो नदी की बहती शात धारा को देखा हो या जगलो मे घटो अकेले भ्रमण किया हो। इन सभी परिस्थितियो म मानव को अपनी अस्तित्वहीनता का बोध होता है। लगता है जो दिखाइ पड रहा है, उसका एक अश न होते हुए भी मैं एक भाग हू। मुझे यही अनुभूति डीजनगाफ के एक अपने प्रिय रेस्त्रा मे बैठकर कॉफी पीने तथा जनप्रवाह को देखने मे होती थी। यह हर रविवार का कायक्रम रहता था।

आप तो समझ ही गए होंगे कि यह मुख्यत एकाकी कायक्रम रहता था। पर एक दिन का अनुभव कुछ भिन्न रहा। उस दिन मैं करीब दस बजे उस रेस्त्रा से उठनेवाला ही था कि एक सुदर महिला के हलकी-सी मुसकान ने बरबस मुझे आकर्षित किया। वह यूरोपीय और अरब रक्त

का मिश्रण लगती थी। तीखे नाक-नक्श, गजाले (हिरन) की भांति काली आखा, काले-काले बाला और खुलत चपई रग से उसकी उम्र का अदाज कर पाना कठिन था। वैंम सुदर स्त्रियो की उम्र का अदाज करने की जरूरत होती ही नही। पर वह सुदर, कसे कपडे पहने महिला तीस वसत ता देख ही चुकी थी। कुछ पल तक तो मैं ठगा-सा रह गया था, पर फिर मैंने भी मुसकराहट के साथ उसकी ओर देखा और उसे अपनी मेज पर आने का आमत्रण दिया। कुछ सोचकर वह उठी और मेरी मेज के पास आकर बाली, "क्या आपने मुझे एकाकीपन दूर करने के लिए बुलाया है ?'

मैंने उसे बैठने का सकेत किया और उसी समय उसकी मेज की ओर आ रहे बेयरे को अपनी ओर आने का सकेत किया। बेयरे को उसकी काफी का बिल देकर, दो और कॉफी लाने के लिए कहकर मैंने उस महिला का धन्यवाद दिया कि उसने मेरे सकेत को ठीक समझा।

कुछ क्षण हम लोग चुपचाप कॉफी पीते रहे। मेरे पूछने पर उसने बताया कि वह दूर एक किवुत्त[1] म रहती है। उसकी मा पोलिशथी और पिता यमनी यहूदी थे। व दानो मर चुके हैं। इस कारण वह अपनी जीविका चलाने के लिए स्वतत्र है। अब कुछ स्पष्ट हो रहा था कि उसकी अपनी जीविका कम चलती है और यह उत्सुकता भी बढ रही थी कि उसने मानव के इस प्राचीनतम रोजगार का क्यो स्वीकार किया ? वह अन्य काय क्यो नही करती ? पर पूछू कस मैं यह साच ही रहा था कि उसने पूछा, "कहीं चलोगे या मैं तुम्हे ले चलू अपनी जगह पर? मैं 250 पाउड[2] लूगी।'

दाम तो अधिक नहा था और यह जानने के लिए कि वह इस धधे में आई क्य का भी तो मेहनताना देना ही होगा। यह सोचकर मैंने उसके एपाटमेट तक जाने का निश्चय किया। हम लाग रेस्ट्रा स उठे। उसने कार की ओर चलने का सकेत किया। वहीं पास मे कार थी। उसके कोई दस मिनट बाद हम लोग उसके एपाटमट मे थे जो पूणरूपण सज्जित और आधुनिक था। मुझे सोफे पर बठाकर उसने अपनी वाइन की अलमारी खोली और मशहूर नयनिया वाइन, दो मद्य चषक तथा फ्रिज स सलाद और मछली की एक प्लेट निकालकर मेज पर रखकर मेज के दूसरी

तरफ बैठकर उसने बड़ी नफासत से वाइन पेश की। हम लोग बातें करने लगे। यमन, पोलैंड, इजराइल आदि की समस्याओं पर जिस प्रकार उसने अपने विचार व्यक्त किए, उनसे लगता था कि वह काफी पढ़ी लिखी है और उसके अपने विचार भी हैं एवं व्यक्तित्व भी। समय बीत रहा था। वह मेरी ओर देख रही थी कि मैं कब उससे समर्पण के लिए कहूं। पर मेरा मन तो उसकी समस्या को जानने में लगा था, न कि उसके शरीर के भोग में।

कुछ समय और बीता तो मैंने अपनी मंशा उसे बताई। उसका उत्तर था, "तुम मेरे इतिहास को जानने आए हो? क्या तुम्हारी प्रेमिका मुझसे सुंदर है?"

मैंने उसे समझाया कि यह मेरा सहज कुतूहल है।

बड़ी जोर से हंसती हुई बोली, "अच्छा, जीवन में प्रथम बार मैंने किसी से पैसे लेकर शरीर न खोलकर मन खोलने का निश्चय किया है, पर तुम अजीब भारतीय हो!"

उसने सिगरेट सुलगाई और आंखें बंद कर कुछ सोचती रही। सिगरेट मानवत उसके अशांत मन की भांति ही जल रही थी। उसका मौन और सिगरेट का धुआं वातावरण में अजीब तनाव पैदा कर रहे थे।

मैंने उठकर जब उसके सिर पर हाथ फेरा तो उसकी चेतना जैसे लौटी हो, 'ओह, आई एम सॉरी, तुम सही में सुनना चाहते हो तो मेरे पास आ जाओ, मैं अपने दिल का दर्द जोर से नहीं कह सकती।"

मैं उठकर उसकी बगल में बैठ गया। सिगरेट का एक लंबा कश लेकर वह कहने लगी 'बिलकुल अकेली हूं और ऐसे ही रहना चाहती हूं। मेरे माता पिता तो मर चुके थे। इस कारण मैंने एक केमिस्ट की दुकान में नौकरी की और विज्ञान का अध्ययन भी तेलअवीव विश्वविद्यालय में प्रारंभ किया। वे दिन बड़े कठिन थे। दिन भर विश्वविद्यालय और रात्रि में 4 घंटे दुकान पर बैठना और दवा देना तथा दुकानदार का सदैव निमंत्रण मुझे थका देता था।

"जीवन किसी प्रकार चल रहा था। इस प्रकार मैंने ग्रेजुएशन किया। फिर रसायनशास्त्र में पोस्ट ग्रेजुएशन भी प्रारंभ कर दिया। अब मुझे

पैसों की अधिक आवश्यकता थी। इस कारण कहीं और काम मिल जाए तो अध्ययन भी पूरा हो जाए और काम भी चल जाए, यह सोचकर मैंने विभिन्न स्थानों पर आवदन-पत्र भेजे।

कुछ समय बाद रसायन बनानेवाली एक फर्म से जवाब आया कि वे मुझे अपनी फर्म में नियुक्त करने को तैयार हैं तथा वेतन भी काफी देंगे। मैं वहां गई, नियुक्त हुई। मैंने उनकी प्रयोगशाला में काम प्रारंभ किया। दिन में विश्वविद्यालय और रात्रि में 8 से 12 बजे तक उस फैक्टरी की प्रयोगशाला का निरीक्षण।

"एक दिन एक सहायक ने मुझसे पूछा कि क्या मुझे पता है कि वह हेरोइन बनाता है और उस यह फैक्टरी एक ऐसी कंपनी को बेचती है जो इसे कैप्सूल में भरकर, दवा का नाम देकर विदेश में बेच देती है।

"मैंने हेरोइन के विषय में सुना अवश्य था, किंतु यह काम यहां होता है मुझे पता नहीं था। पर मैं कर ही क्या सकती थी। नौकरी की समस्या थी। इस कारण उस सहायक की बात अपने तक ही रखी। धीरे धीरे मैं उस सहायक के समीप आती गई और हम दोनों मित्र बन गए।

"एक दिन उसने मुझसे पूछा कि क्या मैंने हेरोइन का स्वाद लिया है? मेरा नकारात्मक उत्तर सुनने पर उसने सिगरेट में इस ब्राउन पाउडर को भरकर मुझे पीने के लिए दिया। उसका नशा अजीब था और लगता था कि सारी चिंताएं उड़ गई। उसी दिन से धीरे धीरे हम दोनों ने हेरोइन का सेवन प्रारंभ कर दिया। यह उस समय तक चलता रहा कि जब तक हम दोनों पर नशालु होने का आरोप लगाकर फैक्टरी मालिक ने काम से निकाल नहीं दिया। गनीमत थी कि पुलिस में रिपोर्ट नहीं की। हम दोनों के पास कुछ जमापूंजी थी, इस कारण उसी सहायक के घर पर ही प्रयोगशाला बनी।

"हम लोग मारफीन के द्वारा हेरोइन बनाने लगे। पैसा भी अच्छा मिलता था। पढ़ाई भी चल रही थी। जीवन का आनंद अपनी जगह पर था। यह सिलसिला कई वर्ष तक चला। एक दिन मेरे सहायक मित्र को हेरोइन बेचते पुलिस ने पकड़ लिया। वह जेल में और मैं पुनः बेसहारा। इस हेरोइन ने मेरी पढ़ाई पर भी प्रभाव डाला। परिणामस्वरूप मैं परीक्षा

मे फेल हो गई और पम भी धीरे-धीरे समाप्त हो गए। तभी एक अन्य एजेंट (हरोइन क) से भेंट हुइ। हम लोग फिर इसी धधे म लग। मैं पूव परिणाम से परिचित थी। इस कारण एक तरफ मैं हेरोइन वेचती थी ता दूसरी ओर शरीर। अब भी इसी प्रकार समय बीत रहा है। मुझे काफी पैसे मिल जाते हैं। पर अब हरोइन की जस आदी हू, उसी प्रकार नौजवाना की, क्याकि हरोइन के बाद मेरी शारीरिक भूख जाग उठती है। इसी कारण आज तुम्हारी तरफ आकर्पित हुई। पर तुम तो भारतीय साधु हो। तुम्ह दखकर नही लगता कि तुम्हारे ही देश मे 'कामसूत्र' लिखा गया होगा। क्या सभी भारतीय तुम्हारी ही तरह है ?"

"मैं नही कह सकता, पर यदि सभी तुम्हार आकपण मे डूब जाते ह ता एक ऐसा भी होना चाहिए जो तुम्हारे भूतकाल मे झाक सके और भविष्य को देख सके। तुम अब मुझे अपना नाम तो बताओ ?"

"अरे, नाम की इस धधे मे लगे हुए लोगो को बताने की जरूरत नहीं होती। तुम मुझे 'नजीला' कहो या 'लैला', फक नही पडता," यह कहकर उसने मुझे अपनी ओर खीचकर चूम लिया।

जब घडी की तरफ नजर गई तो रात्रि के 12 बजे थे। मैंने उसे उसका मेहनताना देना चाहा तो बोली, "तुम मात्र 100 पाउड वाइन का दाम द दो। यही तुमसे काफी है। यदि दोबारा इच्छा हो ता आ जाना, यह मेरा काड है।"

मैंन उससे लैलातोव[3] कह विदा ली और उसके विषय मे सोचता शेरूट से रेहोबोथ अपन एपाटमट पर पहुचा। दूसरे दिन रात गई, बात गई।

1 इजराइल म सामूहिक रूप मे जीवनयापन करने के लिए बनाए गए केंद्र।

2 इजराइली मुद्रा यह ब्रिटिश पाउड स्टलिंग से भिन्न है और सामान्यत एक रुपए के बराबर का मान रखती है।

3 हिब्रू भाषा मे शुभरात्रि का सबोधन।

आधी रात का सूर्य

सदैव की भांति मैं होटन[1] मे सामान खरीदने गया था। जब सामान को ट्राली मे भरकर काउटर पर भुगतान कर रहा था तो बगल के काउटर पर भुगतान करनेवाला व्यक्ति कुछ परिचित सा लगा। बहुत देर तक उसकी शक्ल मेरे दिमाग मे घूमती रही। जब मैं बाहर आया तो अपने सामान को किनारे पर रखकर उस व्यक्ति के भी वहा तक आने की प्रतीक्षा करता रहा। करीब पाच मिनट बीते होंगे कि वह भी आ गया और मुझे देखकर कुछ ठिठका। फिर मेरा नाम लेकर बडी गर्मजोशी से मुझसे लिपट गया। मेरी भी जॉज से करीब 5 वर्ष बाद आज भेंट हुई थी। मेरी खुशी का अदाज आप लगा सकते हैं। यद्यपि मेरा मित्र मुझसे इतने समय बाद मिला था पर मैं कुछ बोल न सका। मेरा गला हर्षातिरेक मे रुध गया था। करीब 2 सेकड बाद मैंने उसका हाथ पकडकर जोर से दबाया और पूछा, 'तुम यहा कैसे ?"

मेरी बात सुनकर जाज कहने लगा, 'मैं अपनी सबैटिकल लीव पर हू और जेनेटिक इस्टीटयूट (हाइडिलबर्ग) मे काम कर रहा हू। मेरी छुट्टी के करीब तीस दिन बाकी हैं। अब तो इ [illegible] मित्र [illegible]

सारा सामान लेकर मैंने कार पार्किंग स[illegible]
के सामान को स्टेपनी म रखा और कार म[illegible]
जॉज हाइडिलबर्ग से करीब 20 [illegible]
था। यद्यपि मैं उस स्थ[illegible] था,
अत मैंने जॉज को बस[illegible]

मिलने का वादा किया। शुक्रवार तो आज है ही, सिर्फ शनिवार की बात थी।

जॉर्ज से मेरी भेंट ट्रोनघाइम—नारवे में टेक्नोलॉजी इंस्टीट्यूट में हुई थी। मैं वहां पर शोध छात्र था और जॉर्ज प्रोफेसर का असिस्टेंट। काम हम लोगों का एक था। इस कारण हम लोग धीरे धीरे प्रगाढ़ हो गए। जॉर्ज स्कॉट था ग्लासगो (इंगलैंड) का निवासी, अतः भाषा की समस्या थी ही नहीं। मैं भूतकाल में डूबा ही रहता, यदि टेलीफोन की घंटी न बजती। फोन पर डॉ० श्वाइजर थे। वह शनिवार को मेरे यहां आ रहे थे, फिर हम लोगों का घूमने का कार्यक्रम था फिलासाफेन वेग पर।

शनिवार भी तेजी से बीता और रविवार को मैं अपने प्रिय मित्र जॉर्ज से भेंट करने आठ बजे अपने एपार्टमेंट से निकल पड़ा। अप्रैल में हाइडिलबर्ग थोड़ा गरम हो जाता है। अतः प्रातः यात्रा कष्टदायी नहीं रहती।

जॉर्ज का एकुआविट प्रिय थी पर जरमनी या हाइडिलबर्ग में उसका मिलना कठिन था। अतः मैंने उसकी जगह पर वोदका की बोतल खरीद ली थी। जब मैं अपने डोसन हाइमर लैंड स्ट्रोस के एपार्टमेंट से चला तो समय काफी था। कार को इतमीनान से ड्राइव करते हुए जब मैंने पीटर स्टाल की सड़क पकड़ी तो एक बार इच्छा हुई कि कुछ फूल ले लूं पर पार्किंग के लिए जगह न मिल पाने के कारण सीधा जार्ज के घर पहुंच गया। पीटर-स्टाल एक छोटा सा गांव है, जिसके नीचे बाजार है और पहाड़ के ऊपर लोगों के मकान बने हैं। जॉर्ज का मकान पहाड़ की चोटी पर था छोटा पर सुंदर। जब मैंने कॉलबेल बजाई तो जॉर्ज ने आकर दरवाजा खोला और हम लोग ऊपर चले आए ड्राइंगरूम में। ड्राइंगरूम काफी बड़ा था। एक कोने में नारवे का नक्शा तथा दीवार पर कुछ चित्र थे। बीच की मेज पर जार्ज का परिचित पाइप और दियासलाई रखे थे और ऐश-ट्रे भरी थी जली हुई तंबाकू से।

मेरे बैठते ही जॉर्ज ने खिड़की खोल दी। ताजी हवा कमरे में भर गई। मेरे बगल में सोफे पर बैठने से पहले जॉर्ज ने ब्लैक काफी के दो प्याले तथा केक लाकर रख दिए। अपना पाइप उठाकर सुलगाया और

फिर मेरे सामने की कुरसी पर बैठ गया। कुछ पल वह चुपचाप बैठा पाइप पीता रहा। मैंने ब्लैक काफी के प्याले को सरका लिया था। इतने दिनो की बातो का सिलसिला कहा से शुरू हो, मैं यही सोच रहा था और सभवत जॉर्ज भी।

कुछ समय बाद मैंने ही मौन तोडा। मैंने जॉर्ज के मकान की स्थिति की प्रशसा की और फिर उससे पूछा, "हाइडिलबर्ग कैसा लगा ?"

जॉर्ज भी कुछ सयत सा हो गया था। धुए के बादल कमरे मे भरता हुआ बोला 'ठीक है, काफी सुदर और छोटा शहर है।'

मैंने कहा, "इसमे दो राय नही हैं यह शहर बहुतो को प्रिय है। जॉर्ज, वहा नारवे का क्या हाल है ? तुमने कुछ बताया नहा। हालदिस कैसी है और तुम्हारा विभाग एव काय कैसा चल रहा है ? मुझे लगता है तुम यहा अकेले आए हो।'

मेरे इतने ढेर से सवाल सुनकर जॉर्ज ने सिर्फ गहरी सास ली और पाइप पीता रहा। लगता था कि वह मानसिक उलझन से निकलने मे धुए की मदद माग रहा था। थोडी देर बाद उसने आखें खोली और कहने लगा, "तुमसे आखिरी बार जब भेंट हुई थी तो हालदिस जीवित थी। तुम्हें जानकर दु ख होगा कि अब उसकी मृत्यु हो गई, वह भी बडी रहस्यमय परिस्थितियो मे और ठीक उस समय जब मैं उससे विवाह करने जा रहा था। तब से मैं अकेला हू।"

जॉर्ज की बात सुनकर मुझे बहुत दु ख हुआ। हालदिस की अन्ना मित्र थी और अन्ना मेरी मित्र। इस कारण हम एक दूसरे के बहुत करीब थे। मैंने सात्वना के कुछ शब्द कहे और फिर जॉर्ज से पूछा कि यदि वह चाहे तो बातो को थोडा विस्तार से बताए।

"हा क्यो नही, इससे मेरा भी कुछ बोझ हलका हो जाएगा।"

यह कहकर जॉर्ज ने एक सास मे काफी पी ली और कहने लगा, 'तुम्हारी अन्ना जॉनसन से भेंट कैसे हुई थी, याद है ?'

'हा याद क्यो नही है ! मैं कैसे भूल सकता हू ! अन्ना जॉनसन मेरी प्रयोगशाला मे तकनीकी सहायिका थी। वह मुझसे प्राय भारत की गाथा बारे मे पूछती रहती थी। मैं पहले तो उसे समझाता था कि बेकार की

बातो मे समय नष्ट न किया करे, पर वह मानती क्यो ! एक दिन जब हम लोग लच ले रहे थे तो उसने फिर अपना प्रश्न दोहराया था। इस पर मैंन उससे कहा कि हिंद् गाय को माता की तरह मानता है क्योकि गाय के दूध मे जा गुण हात हैं वही मा के दूध मे पाए जाते है, समझी ? यदि तुम चाहो तो मैं तुम्हें भारत लेकर चलू और तुम्हे भी गाय का दूध पिला दू।

"इस पर अन्ना न कहा था, 'नही, मुझे वह दूध तो अच्छा लगेगा नही, मेरे लिए यह नारवेजियन पश्चराइज्ड दूध ही ठीक है। पर यह बताओ, तुम्ह भारतीय लडकिया पसद हैं या नारवजियन ?'

"इस पर मैंन उससे कहा था, 'गाय के विषय म जानन की इच्छा रखनेवाली तुम्हारी जैसी नारवेजियन लडकी मुझे पसद है।'

'यह सुनकर अन्ना का चेहरा लाल हो गया था।

"इस प्रकार पहली स्पष्ट बात हुई थी अन्ना जोंनसन से, और फिर हम मित्र हो गए थे। तुम्हारो मित्रता का पता हालदिस से लगा था। हालदिस पेपर टकनालाजी मे डिप्लोमा कर रही थी और तुम उसके मित्र थे।" यह कहन के बाद मैंने अपनी ठडी होती कॉफी पी और सोफे पर आराम से बैठ गया।

मेरी बात सुनकर जॉज कहन लगा, "तुम्हे अपने कमरे का नबर याद है न ? मेर कमरे का नबर था 66 और तुम्हारा 99। हम लोग एक ही बिल्डिग म थे पर हमारे फ्लार अलग अलग थे। मैं था सबसे ऊपर कोने मे 9वी मजिल के 9वें कमरे म और तुम थे छठी मजिल के छठे कमरे म। रोज शाम को प्रयोगशाला से लौटने के बाद हम लोग टेलीफोन से बातें करत थे। कायक्रम बनता था हम लोगा का अपनी मित्रो से मिलन का।

"एक शनिवार को हम लोग अन्ना के एपाटमेट मे 'फ्लिे फीस्ट' (शराबनाशी की दावत) के लिए निमत्रित थे। चूकि साथ ही साथ चलना था हम लोगा को, इस कारण तुम मेरी फाक्स वोगन मे थे और हम लोग अन्ना जॉनसन क फ्लट की ओर जा रहे थे।

'एकाएक मेरी फाक्स-वोगन मोहोल्त किर्के के पास खराब हा गई थी। उस दिन बहुत बफ पड रही थी और सर्दी भी अधिक थी। शायद

तापक्रम शून्य से 8 डिगरी नीचे था। काफी कोशिशों के बाद भी मेरी कार नहीं चली थी। हम लोग पैदल चलते हुए जब क्लोवरवीन की तरफ जा रहे थे तो रास्ते में सिर्फ टेलीविजन टावर का प्रकाश दूर तक दिखाई पड़ता था।

"हां, तो कॉलबेल बजाते ही अन्ना दिस ने दरवाजा खोला था। सर्दी से ठिठुरते हुए जब हम लोग कमरे में पहुंचे और उसने दरवाजा बंद किया तो ऐसा लगा था कि जान में जान आई।

"हम लोगों ने अपने लांग कोट, मफलर, टोपी दस्ताने उतार और कमरे में जलती हुई फायर प्लेस की आग के सामने बैठे ही थे कि हालदिस भी बगल में अपने फ्लैट से आ गई थी। फिर धीरे धीरे उसके अन्य मित्रगण आए थे। भोजन से पहले एकुआविट रम और वोदका पी थी हम लोगों ने। कितना डांस किया था और कितना शोर मचाया था, जब मैं इसकी कल्पना करता हूं तो हंसी आती है। पर वह जोश था जवानी का। भोजन और शराब तीन बजे रात तक चलती रही थी। इसके बाद ब्लैक कॉफी पी गई थी। हालदिस के और अन्ना के अन्य मित्र धीरे धीरे करके अपनी-अपनी कारों से चल दिए थे। फिर बचे हम और तुम। हालदिस ने जब अन्ना से पूछा था कि वह मुझे लेकर अपने एपार्टमेंट में जा रही है क्योंकि रात अधिक है और कार खराब है तो अन्ना ने जोर से पकड़कर तुमसे कहा था कि तुम यहीं रहोगे उसके साथ।

नशा इतना था कि मैं झूलता हुआ हालदिस के सहारे उसके फ्लैट में गया था और तुम वहीं सोफे पर उलट गए थे जूते और सारे कपड़े पहने। दूसरे दिन मैं जब तुम्हें देखने आया था तो तुम्हारी आंखें कितनी लाल थीं यह तुम नहीं जान सकते।'

'मुझे अब भी याद है कि जब तुम और हालदिस कार को ठीक कराने गए थे तो मैं फिर सो गया था और अन्ना ने मुझे कई बार जगाकर ब्लैक कॉफी पिलाई थी। तब मैं उतनी शराब पीने का आदी भी नहीं था। हां जब तुम और हालदिस वापस आए थे तब तक मैं स्वस्थ हो चुका था। मैं और अन्ना पैदल एक चक्कर सरेग्राल-पारस' का जो वहीं पास की लोन थी, लगा आए थे। अन्ना का स्नेह मुझे पूर्णरूपेण बांध चुका था

और इसी कारण मुझे वह दिन पूरी तरह याद है।" कहकर जब मैं रुका तो जॉज ने वोदका की वोतल खोल दी थी और इसके बाद मेज से दो गिलास, पनीर, वेफ्स तथा मछली काटकर ले आया।

बातें पुरानी थी, पर उनका असर अब भी था। एक पैग के बाद जॉज न पुन पाइप भरा और कहने लगा, "एक दिन हम लोग गरमिया मे प्रयोगशाला से निकलकर ट्रोनधाइम विश्वविद्यालय की पुरानी सडक की तरफ से होते हुए विश्वविद्यालय की कटीन म आए। वहा लच लिया। फिर पैदल ही घूमत करीब 40 फुट ऊची किंग ओलाव की प्रतिमा के चारो ओर लगनेवाले साप्ताहिक फल फूलो के बाजार मे खरीदारी करते रहे थे। तभी हालदिस को एक माक (पादरी) से बातें करते देख मुझे आश्चय हुआ था। बाद मे पता चला कि वह उसी के ग्राम हालमेसुड का रहनेवाला युवक था, जिसन धार्मिक पथ अपना लिया था। वह युवक हालदिस का बाल मित्र था। अत वह हालदिस से हस हसकर बातें कर रहा था। विदा लेते समय उसने मुझे और हालदिस को 'मुक होल्मेन' आने का निमत्रण दिया और चल दिया।

"हम लोग घूमते घामते वापस मोहोल्त चले आए थे। खाने का सामान, फल-सब्जिया साथ थी, अत हालदिस ने वहीं मेरे एपाटमेट मे ही भोजन बनाया था। हम लोगो ने खूब भोजन किया और रात्रि मे मैं हालदिस को उसके एपाटमेट छोड आया था।"

मैं जॉज की बातें बडे ध्यान से सुन रहा था। अत उसके कथा के बीच विराम लेने पर मैंने उससे पूछा, "तुम्हारी बातो से लगता है कि शायद तुम किसी ऐसी बात को बताना चाहते हो जो तुम सोचते हो पर जबान पर नही ला रहे हो।"

जॉज के पाइप का तबाकू समाप्त हो गया था। उसने मेरी बात सुनकर कहा तो कुछ नही पर पाइप को सुलगाने के बाद कुछ सोचता हुआ कहने लगा, "तुम ठीक समय रहे हो। जो बात मैं कहना नही चाहता था वह आज तुम्हारे सहारे कहने जा रहा हू। मैंन तुम्हे बताया ही था कि हालदिस का बाल मित्र पादरी हो गया था। वह मुक होल्मेन नामक टापू पर एकात साधना के लिए जानेवाला था। तुम जून मे चले आए थे

हाइडिलबर्ग । उसके बाद एक दिन हालदिम ने मुझस अनुरोध किया कि क्यो न 'मूक होल्मेन' चला जाए। जुलाई म मौसम भी अच्छा होता है। सूय लाल रग के गोले के समान क्षितिज पर तीस अश का कोण बनाकर टिका सा दीखता है। तापक्रम दस डिगरी सेल्सियस तक पहुच जाता है। फूल खिल आते हैं। पत्तिया की हरीतिमा मन को आकर्षित करती है और स्त्रिया भी सुदर दिखने लगती है।

"एक दिन हम लोग मूक होल्मेन जान के लिए 'स्कासन फैरी हावन' गए। वहा से स्टीमर लिया और करीब बीस मिनट म हम लोग 'मूक होल्मेन' के पश्चिमी छोर पर ग्रेनाइट की चट्टाना के बीच बने मुहाने पर पहुच गए। स्टीमर से उतरकर करीब 20 सीढिया चढनी पडी, तब जाकर हम लोग टापू 'मूक होल्मेन' पर पहुचे।

"सामने का द्वार 20 फुट ऊचा और करीब 10 फुट चौडा था, जो लकडी के दरवाजो को खोलने पर खुलता था। उसके दोना तरफ की दीवारें एक मीटर माटे पत्थरो से बनी थी। इसकी प्राचीर पर पुरानी छ तापें थी। ये हर तरफ से इस प्राचीन किले की रक्षा हेतु लगाई गई थी। इस टापू पर दो घटाघर थे। एक तो जहा पर स्टीमर रुकता था और दूसरा था टापू की ऊची चोटी पर। वहा से हर आने-जानवाले जहाजा पर नजर रखी जा सकती थी। इन परकाटो के बीच म था विशाल चच। आज यह चच था पर इसकी दीवारें बताती थी कि कभी यह मुख्य महल रहा होगा वार्किग योद्धाओ का। उसके चारों तरफ कमरे बने थे और हर तीसरे कमरे के फश के पत्थर हटाने पर सीढिया थी। आगे जाकर वे सीढ़िया सुरगा म बदल जाती थी। एक सुरग स्टीमर (दक्षिण तरफ) तक जाती थी। उसकी बाहरी दीवारा म छेद थे, जिनस हवा आती थी। इस सुरग का अत एक कमरे म होता था। यह पादरिया का साधना-कक्ष था। दूसरी सुरग उत्तर की ओर जाती थी। यह उस कमरे की सीढिया से उतरने पर ही पता चलता था। मैं तुम्हें यह विशेष कारणवश बता रहा हू," यह कहकर जॉज रुक गया।

हम लोगो की वोदका समाप्त हो गई थी पुन गिलास भरे गए और जॉज ने बताना आरभ किया।

"इस प्रकार जब हम लोग इस चर्च का निरीक्षण समाप्त कर ऊपर आए तो फादर जॉन (हालदिस के बाल्यकाल के मित्र) से भेंट हुई। हम लोगो को उन्होंने कॉफी पिलाई। उनकी बातें हम लोग सम्मोहित स सुन रहे थे। हालदिस तो बडी ध्यानमग्न होकर सुन रही थी। घडी की सूई स्टीमर के वापस जान का समय बता रही थी। अत हम लोग फादर स विदा लेकर स्टीमर पर आ गए।

"दूसर दिन जब हालदिस ने अपनी प्रयोगशाला म इस यात्रा के विषय म बताया तो सभी ने ध्यान से सुना और हालदिस के पूव प्रेमी अर्ने एयोसेन ने भी इस यात्रा के विषय म काफी रुचि ली।

"हालदिस का जब भी मूड हाता और अवकाश रहता तो वह 'मूक होल्मन' चली जाती—कभी अकेले और कभी किसी महिला मित्र के साथ। उसे ध्यान करने म रुचि हो गई थी। फादर जॉन उसे सदव स्नेह से साधना और ध्यान के विषय म बताते थे। एक दिन हालदिस न बताया कि वह जेन' साधना फादर से सीख रही है। इससे उसक काय करन म भी सहायता मिलती है और थकान भी नहीं होती। मैंने भी उसे इस दिशा म प्रयास करते रहने का कहा।

'हां, मैं यह बताना भूल गया था कि अर्ने एयासेन यद्यपि हालदिस का पूव प्रेमी था और उसको हम लोगा की मित्रता अच्छी नहीं लगती थी, लेकिन उसने इसको कभी प्रकट नहीं किया। वह बडे ध्यान से हालदिस की बात सुनता और एक दिन शायद किसी रविवार को वह भी 'मूक होल्मन' गया और उसके कमरो व सुरगो को ध्यान स देखा था, क्योंकि उसन हालदिस से कहा था कि वास्तव मे वह स्थान ध्यान आदि के लिए उत्तम है। पर तथ्य ता यह था कि उसे मेरी हालदिस स मित्रता ठीक नहा लगती थी।

हालदिस प्रत्येक शनिवार को 'मूक होल्मेन' जाती, दा घटे साधना करती और चली आती। अभी पिछले सितबर की बात है कि हालदिस वहा गई और एक दिन बीत जाने पर भी वापस नहीं आई ता मैं चिंतित हुआ। मैं भी मूक होल्मेन गया, तो वहा पता चला कि एक लडकी की स्टीमर रुकने की तरफवाली सुरग के आखिरी कमरे मे किसी ने हत्या कर

दी थी। लाश को पुलिस ले गई थी। पुलिस केंद्र जाने पर पता चला कि यह लाश हालदिस की थी। अनुमानत हालदिस जब उस अंधेरे कमरे में ध्यान कर रही थी तो उसी कमरे में कोई छिपा बैठा था, जिसने पहले उसके साथ बलात्कार किया, क्योंकि हालदिस के कपड़े फट गए थे, शरीर पर खरोच के निशान थे, उसकी उंगलियों में एक बाल भी फंसा था (जो उसका नहीं था) तथा उसकी जांघों पर वीर्य के छींटे थे, जिन्हें पुलिस ने प्रेजर्व (सुरक्षित) कर लिया है।

पुलिस ने बताया कि हालदिस के चेहरे पर के भाव बताते थे कि वह संभवत अपने हत्यारे को पहचानती थी। शायद इसी कारण हत्यारे ने गला दबाकर उसकी हत्या की है। लगता था वह अपनी उंगलियों के निशान न मिल सकें, इस कारण दस्ताने पहने था। पुलिस ने हालदिस की लाश उसके माता पिता को दे दी थी, ताकि वे उसका अंतिम संस्कार कर सकें। पर उसके शरीर से वस्त्र विश्लेषण के लिए भेज दिए गए थे।"

जॉर्ज ने बताया कि उसने पुलिस को अपना पूरा सहयोग देने का वादा किया और भारी मन से घर चला आया। जार्ज यह बताते समय कांप-सा गया था। हालदिस उसे अत्यंत प्रिय थी। थोड़ी देर रुककर एक घूंट ब्रांडी का पी लेने के बाद जार्ज ने पाइप को साफ किया, फिर तंबाकू भरी। पाइप को जलाया और रूमाल से अपना चेहरा पोंछकर कहने लगा, 'मैं दूसरे दिन पुलिस इंस्पेक्टर ओसवियोर्न के पास पुन गया क्योंकि उन्होंने मुझे बुलाया था। इंस्पेक्टर ने मुझसे हालदिस के विषय में तमाम बातें पूछी और कहा कि उसे मेरा एक बूंद रक्त, वीर्य तथा एक बाल परीक्षण हेतु चाहिए। मैंने उन्हें दे दिया। पर दूसरे दिन उन्होंने मुझे बुलाया और फादर ऑन और अन्य हालदिस के मित्रों के विषय में जानकारी चाही। इससे संतुष्ट होने के बाद पुलिस हालदिस के एपार्टमेंट में गई। विशेषज्ञों ने सारे कमरे का गंभीरता से निरीक्षण किया और कुछ चीजें ले गए। समय दूसरा के लिए भाग रहा था। वैसे ट्रोनधाइम में सेक्स क्राइम है हो नहीं। सारे नारवे और वैसे कहें तो स्कंडेनेविया में यौन स्वच्छंदता है। अत यह घटना अजीब-सी थी, पर पुलिस लगी थी पता लगाने में।

'हालदिस के सभी परिचितों, मित्रों से पूछताछ चल रही थी।

हत्यावाले दिन जितने लोग 'मक होल्मेन' फेरी स्टीमर से गए थे, पुलिस सबकी तलाश करने में लगी थी। सभी के इंटरव्यू की फाइल बन गई थी। पर रहस्य ज्यों का त्यों बना रहा। समाचार पत्रों में पुलिस की असफलता पर टिप्पणियां छप रही थीं। हर वार सप्ताह में मुझे पुलिस इन्स्पक्टर से भेंट करने की जरूरत पड जाती। मैं भी इस भाग दौड में उलझ चुका था और शायद अन्य लोग भी।

"एक दिन मैं पुस्तकालय में बैठा कुछ वैज्ञानिक शोध पत्रिकाएं रख रहा था कि मेरी दृष्टि एक नई विधि पर गई जिसके द्वारा अति स्वल्प मात्रा में प्राप्त डी० एन० ए०[3] के विश्लेषण द्वारा यह पता चल सकता था कि यह किस जीव का है।

"इस विधि में, तुम्हें पता ही है कि डी० एन० ए० मॉलीक्यूल में पैतृकता के गुण ही निहित नहीं होते, वरन् ये एक विशेष सीक्वेंस में हर व्यक्ति में होते हैं। डी० एन० ए० का यह सीक्वेंस ही व्यक्ति की विशेषता होती है। असामान्य लोगों की सीक्वेंसिंग सामान्य लोगों से अलग होती है। अतः इसके अध्ययन से यह पता चल जाता है कि यह मानव का डी० एन० ए० है (उसके सीक्वेंस के आधार पर) अथवा पशु या पक्षियों का।

"मानव के पैतृक गुण क्रोमोसोमों में निहित होते हैं और प्रत्येक क्रोमोसोम में डी० एन० ए० एक विशेष सीक्वेंस में लगे रहते हैं। इनकी संख्या अधिक होती है और इनकी संरचना यही पैतृकता प्रदान करती है।

"इस रिपोर्ट की जिरॉक्स लेकर मैंने अपने वैज्ञानिक मित्रों को दी। सबका यह विचार था कि यदि हालदिस की उंगली में लगे बाल और शरीर पर पड़े वीर्य के नमूने का इस विधि से विश्लेषण किया जाए तो संभव है कि खूनी का पता लग जाए। काम कठिन था, पर जरूरी था। अतः मेरे कहने पर प्रो० आकलुंड ने पुलिस इंस्पेक्टर आसबियोर्न को फोन किया और उनको इस नई विधि की सूचना दी। तत्काल इंस्पेक्टर ने ओसलो में स्थित अपनी प्रयोगशाला से संपर्क किया और कार्य आरंभ हो गया।

"ट्रॉनधाइम की पुलिस ने उस दिन मुक होल्मेन जाने वाले सभी व्यक्तियों की सूची बनाकर पता लगाना शुरू किया। यह इत्तेफाक था कि

उस दिन अधिकतर स्कूलों से बच्चे और उनकी अध्यापिकाएं वहां गई थीं। पर चार लोग ऐसे थे जो प्रौढ़ थे। इनमें से पुलिस ने तीन का तो पता लगा लिया, पर चौथा व्यक्ति कौन था, यह पता नहीं चला। पुलिस का अनुमान था कि यह व्यक्ति या तो पर्यटक था अथवा नाम बदलकर गया था।

"पुलिस ने उन तीनों व्यक्तियों के शरीर से रक्त और बाल जांच के लिए लेने के बाद हालदिस के विभाग में कार्य करनेवाले सभी व्यक्तियों के रक्त और बालों के नमूने लेकर, उन्हें सील कर आसलो भेज दिया और परिणाम की प्रतीक्षा करने लगी।

"रक्त और बालों के डी० एन० ए० की सीक्वेंसिंग के परिणाम आने लगे तो उनमें से कोई भी हालदिस के हाथ में पाए गए बाल और वीर्य के परिणामों से नहीं मिला था। हम सभी सांस रोके दूसरे समूह के परिणाम की प्रतीक्षा कर रहे थे। करीब 20 दिन बाद जब दूसरे समूह (जो हालदिस की प्रयोगशाला के सहयोगियों और कार्य करनेवालों का था) के रक्त और बालों के डी० एन० ए० सीक्वेंसों का परिणाम आया तो हालदिस के हाथ में पाए गए बाल और वीर्य के डी० एन० ए० सीक्वेंस अर्ने एथासेन के रक्त और बाल के सीक्वेंस से मिलते थे। पुलिस ने तत्काल अर्ने एथासेन को गिरफ्तार कर लिया। जब पुलिस ने उसके वीर्य का भी डी० एन० एन० पाली मरेजचेन रिएक्शन के द्वारा परीक्षण कराया तो इसका भी परिणाम वही था जो अर्ने एथासेन के बाल और रक्त का था।

"पुलिस के बार-बार दबाव डालने पर अर्ने एथासेन ने अपना अपराध स्वीकार कर लिया था। पुलिस के कथन के अनुसार अर्ने हालदिस से शारीरिक संपर्क यदा-कदा रखता था और उस दिन जब हालदिस साधना करने के लिए जा रही थी तो वह भी फेरी द्वारा मूक हालमन जा रहा था। उस समय उसने अपना नाम बदलकर टिकट खरीदा था। घूमते घूमते जब वह उस अंधेरे कमरे में पहुंचा जो सुरंग के अंतिम छोर पर था तो उस पर एक उन्माद छा गया। उसने हालदिस को जमीन पर गिराकर सभोग किया और उसके प्रतिरोध करने पर विवाद होने के भय से गला दबाकर उसकी हत्या कर दी।

'अर्ने का कहना था, उसने यह काम काम के वशीभूत होकर किया

था और फिर गलती का एहसास होते ही उसने हत्या कर दी। उसका यह भी कहना था कि यदि कुमारी हालदिस उससे कभी-कभी शारीरिक संपर्क न रखती होती तो शायद यह नौबत आती ही नहीं। पुलिस ने अर्ने को आजीवन कारावास की सजा देने के लिए कोर्ट से प्रार्थना की थी।" जॉज इतना बताकर चुप हो गया।

मैंने पूछा, "अर्ने के हालदिस से शारीरिक संबंध के विषय में तुम्हें कुछ पता था ?"

जॉज का उत्तर था, "वह जीवित होती तो उत्तर देती पर जब वह जीवित है ही नहीं तो अर्ने जो चाहे वह कह सकता है।"

जॉज कहानी सुनाते सुनाते थक गया था और आक्रोश तथा बादशा की अधिकता से उसकी लाल आंखें मुझे ट्रोनधाइम में दिख पड़नेवाले जुलाई-अगस्त माह की दोपहर के सूर्य की भांति लग रही थीं। अंतर इतना ही था कि जॉज की आंखों में दुःख, घृणा और क्रोध की ज्वाला थी और दोपहर के सूर्य में घृणा न होकर वही शक्ति रहती है जो शायद हालदिस जॉज को प्रदान करती थी।

1 होटन हाइडिलबर्ग की एक सुपर मार्केट। हाइडिलबर्ग पश्चिमी जरमनी का एक सुंदर शहर है।
2 जेन यह जापानी पद्धति की बौद्ध साधना होती है। इसका उद्गम भारत में हुआ था।
3 डी० एन० ए० डी ऑक्सी राइबो न्यूक्लिक एसिड।

एपाथिङ[1]

जेरूशलम बहुत पुराना है, यह वहा पहुचते ही प्रतीत हो जाता है। मैं भी इस तीन धर्मों—यहूदी, ईसाई और इस्लाम—के पवित्र स्थल की सैर पर गया था। यात्रा शाम को 9 बजे मे प्रारभ होनी थी। मैं भी हर यात्री की भाति इस पयटन एजेंसी के पास समय से पूव पहुच गया। इधर उधर घूमकर समय काट रहा था। ठीक समय पर बस आई। हम सभी अपनी सीटो पर बठ गए। तभी गाइड ने अग्रेजी मे जेरूशलम के विषय म बताना आरभ किया।

मुझे कई बार ऐसा लगा कि जो लडकी मेरी बगल की सीट पर बठी है, अग्रेजी पूरी तरह समझ नहा पा रही है, पर मैं कर ही क्या सकता था, जब तक कोई सुअवसर न आए। एक स्थान पर बस रुकी। हम सभी उतरे। वह जगह वेलिग वाल[2] थी।

कुछ लोग एँटीक्स के प्रतिरूप खरीदने मे और कुछ लोग इधर-उधर घूमने म व्यस्त थे। वह लडकी मेरे साथ एक दुकान पर आ गई और अपनी जरमन मिश्रित अग्रेजी म एक हनुक्का[3] केंडिल स्टड का दाम पूछने लगी। पर दुकानदार शायद समझ नही पा रहा था। इस कारण वह प्रश्न कर रही थी और दुकानदार जवाब कुछ और दे रहा था। मैं भी यह दृश्य देख रहा था और आनद ले रहा था। लडकी परेशान होकर जाने ही वाली थी कि मैंने उससे जरमन म पूछा, "क्या मैं सहायता कर सकता हू?"

आश्चय मे डूबी उसका उत्तर था, "अवश्य।"

मैंने उसे वह कैंडिल स्टैंड खरीदवाया। इसके बाद हम जरमन मे ही

बातें करते हुए इधर उधर घूमते रहे। बस के चलने का हान सुनकर हम दोनों अपनी अपनी सीटो पर आ गए। गाइड ने बस के चलने पर पुन बताना शुरू किया। जब उसकी भाषा स्पष्ट न होती थी तो मैं धीरे से जरमन में उस लडकी को बता देता। बस यात्रा के दौरान हम लोग मित्र बन ही गए थे।

हम लोग मसजिद-अल अक्सा को देखने के लिए उतर गए और गाइड ने एक घटे का समय दिया था कि पयटकगण अरब क्वाटर को देखकर वापस बस पर आ जाए। मैं और रोजमेरी साथ साथ घूमते एक अरब-रैस्ट्रा मे पहुच गए।

हलकी रोशनी मे नीची मेजें और कालीनो पर बैठकर कॉफी पीते लोग मधुर अरबी सगीत और उस पर नत्य करती एक अरब सुदरी मध्ययुगीन वातावरण उत्पन्न कर रहे थे। रोजमेरी और मैं भी अरबी कॉफी की चुस्की लेने और नत्य देखने मे मग्न थे। समय कब बीता, पता नहीं। इस बीच बातो बातो मे मुझे पता चला कि रोजमेरी (जिसे मैं अब राज कहने लगा था) मेरे ही होटल मे दो-तीन कमरो के बाद रुकी थी। बस मे पुन बठकर यात्रा की समाप्ति पर हम लोगो ने पदल चलकर होटल पर पहुचने के विचार से धीरे-धीरे टहलना प्रारभ किया और बातें भी करते चले।

बातो के दौरान रोज ने बताया कि वह जरमन नहीं वरन् दक्षिण अफ्रीकी है पर उसके माता पिता जरमन मूल के हैं। वे यहूदी हैं। इसी कारण वह इजराइल की यात्रा पर आई है। वह दक्षिण अफ्रीका के एक विश्वविद्यालय म जरमन भाषा की छात्रा है। रोज करीब 28 वष की, मेरे शरीर और गुलाबी रग की सुदर युवती थी। उससे जरमन में बात करने का आनद उसी भाति था जैसे सुस्वाद जरमन रड वाइन पीने का। उसे जरमन दाशनिको का और उनके विचारो का अच्छा ज्ञान था, पर वह हिटलर की नीतियो की परम विरोधी और नए-नाजियो (नियोनाजिज्म) को गिरी निगाहो मे देखती थी। इसे अमानवीय कहती थी।

"अश्वेत तो भारतीय भी है दक्षिण अफ्रीका के नियमानुसार," मेरे यह कहने पर उसका मुख और रक्ताभ हो उठा।

वह उत्तर के लिए शब्द तलाश करने-सी लगी थी। कुछ सयत होने के बाद उसने कहा, "हा, एक कटु तथ्य है पर मैं आपको बता ही चुकी हू कि मैं व्यक्तिगत रूप से इसकी विरोधी हू।"

वार्ता के दौरान हम लोग होटल मे आ गए थे। मैंने उसे उसी होटल के फ्वायर मे बैठकर काफी पीने का निमत्रण दिया जिसे उसने सहर्ष स्वीकार कर लिया, पर इस शर्त के साथ कि यह कार्यक्रम थोडी देर के बाद रखा जाए। उसका विचार ठीक था। हम लोगो ने आधे घटे बाद मिलने का निश्चय किया।

होटल के कमरे मे जाकर शावर लेने के बाद तबीयत प्रसन्न हो गई। कॉफी पीने की इच्छा बलवती थी ही, इसी कारण एक पट और पुली पहन कर नीचे होटल के फ्वायर मे आ गया। थोडी देर बाद रोज भी आ गई। उसने भी स्नान किया था और हलके पोल्का डाटेट ब्लाउज एव स्कर्ट पहने थी। उसी से सुदरता निखर आई थी। यह निर्विवाद था कि वह पट और शर्ट की अपेक्षा स्कर्ट और ब्लाउज मे अधिक स्वाभाविक और रूपवती लगती थी। उसके सुनहरे बाल कधो तक थे और उसके परफ्यूम भी ताजगी का एहसास कराते थे।

कॉफी आ गई और साथ ही मैं पोटैटो फिंगर्स तथा जतून भी मैंने मगा लिए थे। कॉफी अच्छी सुगध युक्त थी। अब मैं रोज को जेरूशलम के विषय मे बताने लगा और वह चुपचाप कॉफी को सिप करती सुन रही थी। मेरी वार्ता समाप्त होने पर उसने भारत के विषय मे पूछा, विशेषकर भारतीय स्त्रियो के विषय मे।

मैं जो जानता था उसे बताया। फिर मैंने दक्षिण अफ्रीका मे अश्वेत पुरुषो के श्वेत स्त्रियो के सबध के विषय मे जानकारी चाही तो रोज इतना बोलकर चुप हो गई "मैं तो इसकी भुक्तभोगी हू।"

मेरा कुतूहल स्वाभाविक था। जब मैंने और जानने की इच्छा की तो रोज कहने लगी, "कॉफी का मजा बेकार हो जाएगा यदि मेरी कहानी तुमको पता चली। इस कारण जब कल हम लोग जेरूशलम चलेंगे तो रास्ते मे तुम्हे बताऊगी।" मैं कर ही क्या सकता था। बात बदलकर विदेशो के विषय मे बातें करने लगा। रात्रि के करीब बारह बजनेवाले थे। रोज

कुछ थकी थी, इस कारण कॉफी का बिल अदा कर उससे दूसरे दिन दस बजे फ्वायर मे मिलना तय कर मैंने उससे गुटन नाख्त (शुभरात्रि) कहकर विदा ली। थकान मुझे भी काफी थी।

दूसरे दिन निर्धारित समय पर मैं जब नीचे आया तो राज मेरी प्रतीक्षा कर रही थी। उसने कॉफी और नाश्ते का मेरे लिए भी ऑर्डर दे रखा था। इस कारण 'गुटन मरगेन' कहते ही वह उस मेज पर गई, जहां कॉफी प्रतीक्षा कर रही थी। कॉफी पीते हुए 'जेरूशलोम पोस्ट' के समाचारो को भी देखकर हम लोग पुराने जेरूशलम को देखने पैदल चलने के लिए तैयार हुए। पिछली रात की बातें मुझे याद थी। इस कारण रोज को उनकी याद दिलाई। पर रोज ने यह कहकर टाल दिया, "दोपहर में लंच के लिए हम लोग जब होटल में आएंगे तो सुनाऊंगी।" पुराने जेरूशलम को देखने मे समय का भान नही रहता, इस कारण दो बजे के बाद दोपहर मे ही हम लोग होटल लौट पाए।

भोजन में शिशलिक, ब्रेड, सलाद और नारंगी का जूस तथा सूप का ऑर्डर देकर हम लोग जेरूशलम की प्राचीनता, उसके इतिहास और समस्याओ मे डूब गए थे। गरम सुस्वाद भोजन करके कॉफी का ऑर्डर देकर जब मैंने रोज को पुन अपना प्रश्न याद दिलाया तो वह कहने लगी, "हां, अब सुनाऊंगी जरूर, पर तुम्हें यदि कुछ अप्रिय लगे तो क्षमा कर देना।"

अब उसकी सदैव प्रसन्न रहने की मुद्रा बदल गई थी। वह सिगरेट के कश ले रही थी मानो भूतकाल मे डूब गई हो।

थोडी देर बाद आखें खोलने पर उसने बताना प्रारभ किया "मेरा मित्र एक अश्वेत था, पर वह अफ्रीकी मूल का न होकर भारतीय मूल का था। मेरे मित्र के पिता के पूवज भारतीय थे जो करीब सौ वर्ष पहले भारत से नैटाल म आए थे। उसकी मा मिश्रित रक्त की थी। पर मेरा मित्र भारतीय यहूदी अधिक दिखता था। रग बदल सकता है, यह भ्रम पैदा कर सकता है पर नाम नही। व्यक्ति नाम से पहचाना जाता है। दक्षिण अफ्रीका के कानून के अनुसार मेरा मित्र अश्वेत था और मेरे साथ उसका उठना बैठना, घूमना फिरना असामान्य था। मैं विश्वविद्यालय की छात्रा

थी। वह भी वहां रसायन विज्ञान का शोध छात्र था। मेरी मा इस सबध के विषय मे जानती थी, पर उसने पिता से इस सबध म कुछ नहीं कहा था। मेरे पिता रसायन विज्ञान के अध्यक्ष थे। मेरा मित्र उन्ही के निर्देशन म शोध काय करता था। मेरे और मित्र के सबध घनिष्ठ थे, इस कारण हम लोग रोज ही मिलते थे। मैं उसको इतना चाहती थी कि विवाह उसी से करती।

"पर मेरी मित्रता की चर्चा छिपी न रह सकी। एक दिन मेरे पिता न मुझसे पूछा कि क्या मित्रता के लिए कोई और नही मिला था ? मुझे चाहिए कि मैं कोई श्वेत मित्र तलाशू।

'यह सुनकर मैं दु खी हुई, पर करती भी क्या ? मैंने अपने मित्र को जब यह बात बताई तो वह भी दु खी हुआ। उसने सात्वना देत हुए कहा कि हम लोगो को अपने सबध थोडे कम कर देने चाहिए, जिससे पिता का आक्रोश कम हो जाए और वह अपना शोध प्रबध भी पूरा कर सके।

"एक दिन मेरे मित्र ने मुझे फोन करके बुलाया। हम लोग बडी देर तक बातें करते रहे। चलने के समय मेरे मित्र ने बताया कि मेरे पिता ने उस शोध के लिए एक ऐसा रिऐक्शन दिया है जिसमे यह देखना होगा कि कितनी हाइड्रोसायनिक एसिड उस प्रक्रिया मे निकलती है। शोध विषय बहुत उपयोगी है पर खतरनाक भी। चूकि शोध प्रबध पूरा करना है, इस कारण इस प्रक्रिया पर भी अनुसधान करना पडेगा।

"मैंने उसे प्यार से फोन पर चुबन देकर विदा किया। हम लोगो ने मिलना कम कर दिया था। मेरी अपने मित्र से एक माह तक भेंट न हो सकी। मात्र फोन कर हम एक दूसरे का कुशल क्षेम पूछ लेते थे। मेरे मित्र ने बताया कि उसका काय ठीक चल रहा है पर उस विशिष्ट शोध रिऐक्शन मे जो गैस पैदा होती है उससे बडी समस्या हो जाती है। गैस-मास्क लगाकर काय करना पडता है। मेरे पिता मुझसे यदा कदा मेरे मित्र के विषय मे पूछ लेते थे।

'खैर, दिन बडे लबे हो गए थे। मेरा मित्र भी मेरे न मिलने से घबरा रहा था पर और विकल्प था ही क्या ? उसने एक दिन मुझे फोन पर बताया कि आज उस प्रक्रिया को अतिम रूप देना है इस कारण उसे सारी

रात्रि परीक्षण में लगा रहना होगा। मैंने उससे बातें की, हिदायतें दी, शुभ रात्रि कहकर विदा दी।

"दूसरे दिन प्रात मैंने जब समाचार पत्र देखा तो यह पता चला कि मेरे पिता की प्रयोगशाला मे कार्यरत एक अश्वेत शोध छात्र की मृत्यु हो गई है। मैंने तत्काल अपने पिता को बताया। वह भी जल्दी से प्रयोगशाला पहुचे। वहा से उन्होंने फोन करके बताया कि वह मरनेवाला मेरा मित्र था। किसी तरह उसका गैस मास्क खिसक गया था। फलत हाइड्रोसायनिक एसिड[4] की वाष्प के फेफड़ो मे चले जाने से उसकी मृत्यु हो गई। पर यह गैस-मास्क खिसका या खिसकाया गया पता नही। इस घटना को हुए मात्र तीन मास हुए हैं। अपनी दु खी आत्मा की शांति के लिए मैं जेरूशलम आई हू कि तबीयत बदल जाए, पर तुमने बातें पूछकर मेरे घावो को हरा कर दिया।"

रोजमरी की कॉफी ठंडी हो गई थी और उसकी आखो के कोनो मे आसू तर रहे थे।

1 दक्षिण अफ्रीका का रग भेद सबधी सिद्धात।
2 वह पवित्र दीवार जहा पर यहूदी अपने पापो का प्रायश्चित्त करने के लिए रोते हैं। यह जेरूशलम इजराइल की राजधानी है।
3 हनुक्का कडिल नववर्ष का प्रतीक है। यह सात मुखोवाली होती है।
4 एक विषैली गैस।

ऑक्सीजन-मास्क

यदि आप बुनसेन गिमनेजियम से स्ट्रासेन वान नबर 1 (ट्राम) लकर होटल की ओर आए तो स्टॉप पर उतरने के वाद बाईं तरफ पद यात्रियों के लिए सडक है और टाम दाहिनी ओर घूमती हुई आग रेलवे स्टेशन तक चली जाती है। इसी बाइ तरफ के पद यात्रियो के रास्ते पर आपको सजी सुदर दुकानें तथा काफ़-हाउस मिलेगी और करीब 100 मीटर आगे जाने पर मिलेंगी अनेक इटैलियन पिज्जेरिया (पिज्जा की दुकानें—रेस्ट्रा)। यही पर मैं हर सप्ताह शाम को आकर अपनी प्रिय पिज्जेरिया में पिज्जा मारगारेटा और पिल्सनर बियर का आनद उठाता था। एक शाम मेरी दृष्टि सामने की मेज पर वैठी एक भारतीय लडकी पर पड़ी जो मुझे देखकर मुसकरा रही थी। आश्चय हुआ मुझे, पर जब मैं अपना बिल अदा करके उठा तो उसकी मेज पर जाकर मैंने जरमन मे उससे पूछा कि क्या वह भारतीय है ? कोई उत्तर न मिलने पर हिंदी में पूछा, पर वही नकारात्मक सकेत रहा। अत मे मैंने अग्रेजी में उससे वही प्रश्न किया तो उत्तर मिला, "नही, मैं भारतीय नही हू मक्सिकन हू और हाइडिलवग म पत्रकारिता के काय के लिए आई हू। क्या आप भारतीय है ?" उसके पूछने पर मैंने 'हा' मे उत्तर दिया। मरे साथ वह भी अपना बिल देकर उठी। साथ ही बाहर सडक पर आ गई।

मैंने उससे पूछा, 'आप क्या यहा के लिए नई हैं ?'

उसन बताया, 'मैं कल ही यहा आई हू और मेरे पास एक विनय

घटना की रिपोर्ट का कार्ट्रैक्ट है। कल से उस कार्य को प्रारभ करना होगा।"

मैंने उससे पूछा, "क्या आप थोडी देर और घूमना पसद करेंगी ?"

इस पर उसने सहमति दी। सितबर म हाइडिलबर्ग का मौसम बहुत ही सुहावना रहता है। हम लोग काफी देर तक घूमते रहे और फिर मैंने उसे बियर पीने का निमत्रण दिया। एक छोटे से पब मे हम लोग घुस। ठसाठस भर पब मे जगह थी नही, कमरे म सिफ धुआ भरा था, और की आवाज थी—म्यूजिक की। लोगो की बियर लानेवाली लडकिया बडी कठिनाई से ग्राहकों तक बियर पहुचा पाती थी। हाइडिलबग ठहरा पयटको का प्रिय शहर और सितबर का मास सोने मे सुहागे का काम कर रहा था। थोडी देर बाद जब भीड छटी तो कुछ राहत मिली।

पहले तो मैक्सिको के विषय मे ही बातें होती रही—वहा की समस्या, बेकारी आदि के विषय मे, फिर उसने भारत के विषय मे पूछना प्रारभ किया।

मैंने उसके प्रश्नो का यथाशक्ति उत्तर दिया, पर जब उसने भारतीय महिलाओ और उनकी भाल बिंदी के विषय में पूछा तब मैंने कहा, "यह सौंदय की प्रतीक होती है।"

"ओह, यह बात है, मैं तो समझती थी कि यह शकुन मे सबधित है।"

थोडी देर बाद हम लोग बियर पीकर उठे और बाहर आ गए। वह घडी देख रही थी। रात्रि के 11 बज गए थे, पर सडक भरी थी। लोगो के ठहाके और कहकहे वातावरण मे गूज रहे थे। जाते समय मैंने उसे अपना टेलीफोन नबर और एड्रेस दिया तथा उसने अपने टेलीफोन एव ठहरने के स्थान का पता देकर विदा ली। मैं भी थोडी देर घूमते रहने के बाद ट्राम से नुनमेन जिमनेजियम आया और कसर-केंद्र के गेस्ट हाउस मे पहुच गया।

करीब दस दिन हुए होंगे उस मैक्सिकन लडकी से भेंट हुए, पर उस दिन मैक्सिको म आई हुई बाढ की समस्या ने उसकी याद दिला दी। मैंने शाम को गेस्ट हाउस पहुचने पर उसके काड और टेलीफोन नबर को

तलाश और ध्यान से देखा। वह मेरी गेस्ट हाउस से थोडी ही दूर पर डासन हाइमरलेंडस्ट्रासे मे एक कमरे मे रह रही थी।

मैंने उसे फोन किया तो फोन पर उसकी मकान मालकिन की आवाज आई। उसने बताया कि वह लडकी अभी नही आई है। सुबह से वह किसी काम पर गई है। यदि मैं अपना टेलीफोन नबर दे दू तो वह आकर फोन कर लेगी। मैंने टेलीफान नबर दिया और स्नान करने चला गया।

रात्रि मे करीब 9 बजे मेरे टेलीफोन की घटी बजी। जब फोन उठाया तो वही मैक्सिकन लडकी बोल रही थी। मैंने उससे कुशल-क्षेम पूछा और भेंट न कर पाने के लिए माफी मागी तो वह कहने लगी, "अरे, ऐसी बात नही है। मैं भी तो तुम्हें फोन न कर सकी। हा, कल शाम को मेरे पास कोई काम नही है। कही जाना भी नही है। यदि आप चाहें तो मेरे यहा आकर कॉफी पी सकते हैं।"

मैंने निमत्रण स्वीकार कर लिया।

दूसरे दिन उसकी कॉलबेल बजाई तो सोफिया ने दरवाजा खोला (उसका नाम सोफिया है यह उसने फोन पर बताया था)। उसे देखकर मुझे एक बार फिर भारतीय लडकिया याद आ गईं। सफेद ब्लाउज और नीली स्कर्ट मे वह सुदर और सौम्य दिख रही थी। उम्र होगी कोई 28 वर्ष तीखे नाक-नक्श और करीब 5 फुट की ऊचाई। मेरे विचार से सोफिया देखने म जितनी सुशील और सौम्य थी, उतनी ही बुद्धि की तीव्र।

मुझे अपने एक कमरे के एपार्टमेंट म ले जाकर उसने बैठाया। कमरे मे मक्सिको की कलाकृतिया, नक्शे आदि लगे थे। मेज पर मैक्सिको की मक्के की रोटी थी। साथ मे मक्खन और पनीर तथा दो बोतलें बियर की।

कहने लगी मैंने अभी डिनर नही लिया है। तुम आ रहे थे, तो सोचा कि साथ ही डिनर लेंगे।

मैंने उसे इसके लिए धन्यवाद दिया और हम लोगो ने मक्के का गरम सूप पीना आरभ कर दिया।

उसी दौरान पता चला कि सोफिया को पत्रकारिता की धुन तक खीच लाई थी। मैंने उसे अपने विषय मे बताया, अपने

काय के विषय मे बताया और यह भी जमिन की इच्छा प्रकट की कि उसकी पत्रकारिता की खोज प्रारंभ हुई भी नहीं। इस पर उसने बताया कि उसने एक अजीब घटना के विषय मे सूचनाएं इकट्ठी करनी आरंभ कर दी हैं। थोडा और मैटर मिल जाए तो वह मुझे बताएगी।

मक्सिकन रोटी भारतीय रोटी की भांति थी। उसे खाकर मुझे मक्सिको और भारत के सहस्रो वर्षों के प्राचीन संबंध याद आ गए तथा याद आई भिक्षु चमनलाल की विख्यात पुस्तक 'हिंदू-अमरिका' जिसमे वर्णित है भारतीय रोटी, कनफटे योगी और गणेश की प्रतिमाए। जब मैंने उससे इनका जिक्र किया तो वह कहने लगी, "यह असभव तो नही है। प्राचीन काल म भारतीयो की यात्रा न मैक्सिको की सभ्यता का प्रभावित किया होगा।"

बियर पीने के बाद उसने सिगरेट सुलगाई और भारतीय समस्याओ के विषय म बातें करने लगी। मुख्य समस्या थी भ्रष्टाचार की। उसका विचार था कि यह तृतीय विश्व की सर्वत्र व्याप्त समस्या है और यदि इससे छुटकारा पाना है तो उन देशो के मौजूदा हालातो मे परिवर्तन आवश्यक होगा। कुछ देर बाद वह बढिया ब्राजीलियन कॉफी ले आई। थोडी देर को लगा कि सारा कमरा उसी महक से भर उठा। कॉफी पीते हुए उसने मुझसे पूछा, "आपके संस्थान मे प्रो० शिमिड न दूसरा विवाह किया है क्योकि उनकी पत्नी का देहात हो गया था, यह आप जानते हैं?"

मैंने उत्तर दिया, "मैं तो इस तथ्य से सर्वथा अनभिज्ञ हू।"

"पर मुझे यह सूचना मिली है। मैं प्रो० शिमिड के विषय म पता लगा रही हू।"

"तब तो यह बडी ताज्जुब की बात है," मैंने कहा, "प्रो० शिमिड तो प्रसिद्ध वैज्ञानिक हैं। मुझे लगता है कि वह सच्चरित्र ही नहीं बडे विचारवान और शिष्ट व्यक्ति हैं। तुम तिल का ताड न बना देना।"

मेरी बात सुनकर सिगरेट की राख झाडती हुई सोफिया कहने लगी, "तुम धैर्य रखो, मैं तुम्हें सब सही, स प्रमाण बताऊगी, तब तुम्हें पता चलेगा हकीकत का।"

मैंने कहा, "ठीक है म प्रतीक्षा करूगा। पर यह बताओ, कल क्या कायक्रम है ? यदि चाहो तो कल करीब 11 बजे मेर एपाटमेंट म आ जाओ। घूमने चलेंगे। लच म दूगा तुम्हें। दिन अच्छा कट जाएगा।"

सोफिया बोली, "हा म आ जाऊगी, मुझे भी सप्ताहाता म काफी बोरियत होती है। अत तुम्हारा यह कायक्रम पसद है।"

उसे अच्छे भोजन और कॉफी के लिए धन्यवाद दकर मैं उसके एपाटमट से सीढियो द्वारा नीचे आया। सोफिया न भी नीचे आकर 'शुभरात्रि' कहकर विदा ली।

जब मैं अपने एपाटमट पहुचा तो रात्रि के 10 30 बजे थे। थोडी देर मक टेलीविजन देखता रहा और फिर कब सोया ठीक याद नही।

अगले दिन ठीक ग्यारह बजे सोफिया मरे एपाटमट मे आ गई। देखा तो कहने लगी, "तुम्हारे लिए तो काफी बडा है।"

मैंन कहा, "हा, अकेले के लिए बडा है। पर यदि साथ मे कोई और रहने लगता तो अच्छा रहता।"

मेरी बात सुनकर सोफिया हलके से मुसकराई, पर बोली कुछ नही। मैंने उसे पीने के लिए भारतीय चाय और नमकीन दालमोठ दी। दालमोठ उसे तीखी लगी पर सी सी करन के बाद भी खाती रही। कहने लगी, 'दालमोठ अच्छी है, पर कडवी।"

मैंने कहा 'तुम्हारी पत्रकारिता की तरह।"

मेरी बात पर सोफिया जार स हमी। उसक छोटे सफेद दात बहुत सुदर लगे मुझे। उसे चाय पसद आई। अत दो कप चाय पीने पर जब उसने दालमोठ की तीव्रता कम कर ली तो हम लोग घूमन बाहर निकल आए।

'हिरश गासे' पास ही था और यह हाइडिलबग का सुदर एव पुराना रस्ट्रा था। वहा जाकर हम लोग पहाडो को दखती हुई खिडकी के पास मज पर बैठ गए। स्टीक, सूप तथा ब्रेड चीज खाकर और मशहूर राइनगाऊ वाइन पीते हुए हम लोगों न बातें प्रारभ की।

मैंने सोफिया से पूछा 'तुम्हें मक्सिको स प्रो० शिमिड के विषय मे पता लगान और सूचनाए एकत्रित करन के लिए भेजा गया है बात मेरी

समझ से बाहर है। क्या वास्तव मे यही तथ्य है ?"

इस पर सोफिया कहने लगी, "वास्तव म प्रो० शिमिड जो वैज्ञानिक काय कर रहे हैं वह बडा ही महत्त्वपूण है। इससे विज्ञान का भला होगा। प्रो० शिमिड के इस अतरराष्ट्रीय काय के लिए अमरिकन सरकार न जो पैसा दिया है वह पेंटागान के सकेत पर ही मिला है।"

"यह ठीक है, पर तुम क्या कर रही हो इस काय मे ?" मैंने सोफिया से फिर पूछा।

"प्रोफेसर शिमिड का काय चूकि सना से सबधित ह इस कारण कुछ अय शक्तिया उसे रोक देना चाहती है। इसीलिए उन्होने प्रोफेसर के विषय म उनम जुडे कुछ गडे मुर्दे उखाडे है। मुझे जो काम दिया गया है वह है तथ्य का पता लगाना कि सही बात क्या है। पर यदि उनके चरित्र के विषय मे जो सूचना पूर्वी जरमनी के समाचार पत्र न दी है वह सही है तो प्रोफेसर सचमुच समस्या म फस जाएगे।"

'अरे वाह तब तो तुम रिपोटर नहीं जासूस हो।"

मेरी बात सुनकर सोफिया हसने लगी 'तुम बचे रहना वरना तुम्हारे बारे म भी सूचना छप जाएगी।'

थोडी देर बाद मैंने फिर सोफिया से पूछा "तुम्हारी तफ्तीश कब पूरी होगी ?

वह कहने लगी 'अभी दो सप्ताह का समय है। पर आशा है, जल्दी ही पता चल जाएगा। मैंने लिक बना लिए है।"

मैंने फिर एक सप्ताह बाद यानी अगले शनिवार को मिलने का निश्चय कर विदा ली।

शनिवार को मैं थोडी देर तक सोता हू, पर उस दिन टलीफोन ने मुझे 9 बजे जगा दिया। उधर से सोफिया कह रही थी "मैं 11 बजे तुम्हारे यहा आ रही हू और फिर चलेंगे घूमने। लच मे दूगी तुम्हे।"

मैंने उसे धन्यवाद दिया और दनिक कृत्य म लग गया।

वह समय म आ गई। उसके बैठते ही मैंने उसे चाय दी और कुछ पापड भूनने लगा। इसे सोफिया प्याला लिए देखने लगी और उसने पापड को पूरे स्वाद से खाया। जब उसने सिगरेट निकाली तो मैं भी खिडकी के

दरवाजे खोलकर बैठ गया। मुझे ऐसा लगा कि सोफिया अब कुछ बताने के मूड मे है। अत मैंने उससे पूछा, "लगता है तुम्हारी खोजबीन काफी सफल रही है।" सिगरेट का धुआ फेंकती सोफिया कहने लगी, "तुम्हारा अनुमान सही है। मैं जिस नतीजे पर पहुची हू वह है तो अजीब, पर दुखद भी है। पहल मैं तुम्हें तथ्यो से परिचित कराऊगी और फिर तुम्हारी राय जानना चाहूगी।"

मैं चाय की चुस्की लेता ध्यान से विवरण सुनने बैठ गया।

सोफिया कह रही थी, "तुम्हे शायद यह पता न हो कि प्रो० शिमिड काफी सुदर और सभ्य हैं पर उनकी पूर्व पत्नी भी उतनी ही सुशील और मिलनसार थी। वह फिजिक्स (भौतिकी) की स्नातक थी और प्रोफसर शिमिड स उनका परिचय छात्र जीवन स ही था जो धीरे धीरे प्रेम म बदलता हुआ दापत्य बधन मे बदल गया था। प्रारभ के दिन वड अच्छे थे और जीवन ठीक चल रहा था। पिछले दो वर्षों तक। फिर श्रीo (श्रीमती) शिमिड की मृत्यु आपरेशन के समय हो गई। तब एकाकी प्रो० शिमिड न अपनी सेक्रेटरी से विवाह कर लिया।'

मैंने कहा, "इसम तो सब सामान्य दीखता है और अगर तुम्हारी रिपोर्टिंग यही है तो खूब है।'

इस पर सोफिया हसी और कहने लगी, 'नही, यह बात सीधी नही है।'

"वह कस ?'

"भई, बात इस प्रकार है—प्रो० शिमिड सुदर और स्वस्थ दोनो हैं। उन्हें कोई 45 वष से अधिक नहा कह सकता। यो ता उनकी अनेक महिला मित्र थी और कुछ का पता उनकी पत्नी को भी था, पर उनक कोई सतान न थी। यह उनकी पत्नी की डिबग्रथियों मे खराबी के कारण था। इसीलिए वह चुप रहती थी।

"एक दिन जब उन्हें अपने पति के प्रेमालाप के विषय म पता चला तो श्रीमती शिमिड ने तलाक के लिए बात की। इस पर प्रोफेसर शिमिड ने कुछ कहा तो नही पर वह सावधान हो गए। फिर भी उनकी मित्रता अपनी सेक्रेटरी से चलती रही। कुछ समय बाद उन्होंने श्रीमती शिमिड

को डिंब नलियों के ऑपरेशन कराने के लिए कहा। कुछ दिनों तक विचार विमर्श के बाद श्रीमती शिमिड तैयार हुईं, क्योंकि उन्हें आशा थी कि इस आपरेशन के बाद उन्हें संतान मिल जाएगी। अभी पिछले वर्ष की बात है, फ्राऊ शिमिड का सर्जन ने ऑपरेशन तो ठीक किया, पर श्रीमती शिमिड को ऑक्सीजन पूरी तरह न मिल पाने के कारण उनकी मृत्यु बेहोशी की हालत में ऑपरेशन कक्ष में ही हो गई।

"चूंकि इस केस में सर्जन की कोई गलती नहीं थी, वह तो केस में छूट गया और एनेस्थेसिया देनेवाले विशेषज्ञ का कहना था कि उसने ऑपरेशन के पूर्व आक्सीजन और नाइट्रस ऑक्साइड ले जानेवाले पाइपों के वाल्वों को मास्क में ठीक से जोड़कर सभी गैसों के मिश्रण को देना प्रारंभ किया था। ऑपरेशन के दौरान तो फ्राउ शिमिड की सभी शारीरिक क्रियाएं ठीक चल रही थीं, पर उनकी मृत्यु के बाद आक्सीजन देनेवाली नली का वाल्व टूटा पाया गया। आटाप्सी की रिपोर्ट स्पष्ट बताती है कि मृत्यु नाइट्रस ऑक्साइड की मात्रा बढ़ जाने के कारण हुई है। अतः ऐनेस्थेसिया देनेवाला डॉक्टर भी निर्दोष पाया गया।

"अब मुख्य प्रश्न आता है कि ऑक्सीजन ले जानेवाली नली का वाल्व टूटा कैसे? क्या सर्जन अथवा ऐनेस्थेसिया विशेषज्ञ या नर्स ने तोड़ा अथवा वह शुरू से ही ढीला था और गैस के दबाव के कारण टूट गया यह एक पक्ष है।

"दूसरा पक्ष यह है कि क्या प्रो० शिमिड ने यह जान-बूझकर करवा दिया जिससे श्रीमती शिमिड रास्ते से हट जाएं और किसी को पता भी न लगे? कोर्ट ने तो सबूत न होने के कारण किसी को भी सजा नहीं दी और इसे दुर्घटना कहकर फाइल बंद कर दी। पर मैं कुछ सबूत लाई हूं जो इसका संकेत देते हैं कि इसमें सर्जन का (जो प्रो० शिमिड का मित्र था) हाथ है और यह सब उन्हीं के संकेत पर हुआ है।"

'तुम्हारी बात और खोज बड़ी विचित्र सी है,' मैंने कहा 'तुम्हारी चाय समाप्त हो गई है। क्या एक कप चाय और लोगी?"

सोफिया ने स्वीकृतिसूचक ढंग से सिर हिलाया तो मैं पुनः दो प्याले चाय लेकर आया और दोनों सोफिया की ओर बढ़ाते हुए बोला, "हां, तो

हैं जिन पर शक केंद्रीभूत होता है।'

"डॉ० आफरकूख ने बताया कि वह इन सब बेकार की बातों को महत्त्व नहीं देते।"

सोफिया ने मुझे मुसकराते हुए बताया कि उसने गुप्त रूप से सर्जन की बात भी टेप कर ली है। सर्जन ओफरकूख की पत्नी और फ्राऊ शिमिड में कभी पटी नहीं। कारण था कि प्रोफेसर शिमिड की सेक्रेटरी और फ्राऊ ओफरकूख मित्र थीं।

"अतः अब मामला साफ है कि फ्राऊ शिमिड की हत्या हुई है और इसमें सर्जन ओफरकूख का हाथ है। यह सभी प्रोफेसर शिमिड के संकेत पर हुआ है। पर यह साबित करना अब कठिन है, क्योंकि यदि मैं इसको प्रकाशित करती हूं तो जिस एजेंसी ने मुझे यहां भेजा है उसके लिए समस्या होगी ही और पेंटागान का प्रोजेक्ट, जो प्रोफेसर शिमिड के सहयोग से चल रहा है, वह बंद हो जाएगा।

"तुम तो जानते ही हो कि प्रोफेसर शिमिड फफूंदियों में कैंसर रोधी पदार्थों की खोज के लिए विख्यात हैं। पर अभी हाल में उन्होंने कुछ ऐसी फफूंदियां की खोज की है जो अंतरिक्ष की यात्रा के दौरान अकालिक अथराइटिस से बचाने में सहायक होंगी, क्योंकि यात्रा के दौरान अंतरिक्ष में गतिविधियों में कमी के कारण मनुष्य की गांठों और जोड़ों में जकड़न होने लगती है। यह मुख्यतः सफेद रक्त कोशिकाओं के प्रभावित होने से होता है। यह तो सभी जानते हैं कि सफेद रक्त कोशिकाओं में इंटरल्यूकिन 1 नामक पदार्थ मानव की हड्डियों की संधियों को प्रभावित कर उनमें सूजन और अकड़न पैदा कर देता है।

"इतना ही नहीं, यह इंटरल्यूकिन 1 हड्डियों के जोड़ में कोलेजन पैदा करनेवाली कोशिकाओं को प्रभावित कर इस महत्त्वपूर्ण अस्थिवर्धक पदार्थ के संश्लेषण को रोक देता है। फलस्वरूप हड्डियां कमजोर पड़ने लगती हैं और हड्डियों के जोड़ों में सामान्य गति नहीं रह जाती।

"प्रोफेसर शिमिड ने फफूंदियों से एक ऐसा रासायनिक पदार्थ निकाल लिया है जिसकी संरचना अभी पूरी तरह से रसायनज्ञों को स्पष्ट नहीं हो सकी है। यह पदार्थ इंटरल्यूकिन को कोलेजन से संयुक्त होने से रोक देता

है। चूहा को कैप्सूल मे रखकर यह गुरुत्वाकर्पणहीनता की स्थिति मे सिद्ध किया जा चुका है कि उन्ह जयराइटिसेस प्रभावित करन मे यह रसायन, जिसका कोड नाम एम० एम० है, सक्षम है। अब इसको पूणरूपण शुद्ध अवस्था मे लाकर मानवा पर प्रयोग किया जाएगा। आशा है, यह अतरिक्ष-यात्रा मे गाठो के दद आदि से अतरिक्ष-यात्रिया को सुरक्षा देगा। प्रो० शिमिड का इसी काय का पूरा करने के लिए पेंटागान न काट्रैक्ट दिया है।

"अब समस्या यह है कि क्या किया जाए?" कहकर सोफिया चुप हो गई। थोड़ी देर सोचने के बाद कहने लगी, "मैंन अपनी रिपोट तैयार कर ली है। मार टप भी तयार ह। कल मैं उन्ह अपनी एजेंसी का भेज दूगी। साथ ही साथ यह भी लिख दूगी कि बात सही है, प्रो० शिमिड के सकत पर उनकी पत्नी की हत्या हुई है। चूकि पूर्वी जरमनी के समाचार पत्रो न इस घटना को काफी उछाला है अत मरे विचार स उनका प्रोजेक्ट चलते रहन दना चाहिए क्योकि यह अति महत्त्वपूण है। रही उनकी पत्नी का मत्यु अथवा हत्या की बात ता वह तो हा चुकी है। वह जीवित तो हो नहीं सकती अत क्या मामले को पुनर्जीवित किया जाए।"

यह कहकर साफिया चुप हो गई जसे उस मर उत्तर की प्रतीक्षा थी। अत मैंन भी न चाहते हुए उसी की बात का समथन किया, क्योकि मैं भी तो प्रोफेसर शिमिड की ही प्रयोगशाला मे काय करता था।

दिन क 12 बज गए थे। हम लाग लच करन चल गए। सोफिया अगले दिन बर्लिन चली गई थी। आज भी जब मै इस घटना के विषय म सोचता हू तो लगता है मैंन सोफिया का समथन दकर ठोक नहा किया। पर विकल्प ही क्या था। जीवन मे कभी कभी सब जानत हुए भी चुप रहना पड़ता है। तभी ता कहा जाता है कि सत्य कड़वा होता है।

विमान

उस दिन हर चीज की शुरुआत अजीब ढग से हुई थी। घर से बाहर निकलकर कार स्टार्ट की तो ब्रेक मे कुछ खराबी लगी। उसे किसी तरह से गरेज मे पहुचाया तो लैबोरेटरी तक पहुचने म एक घटे की देर हो चुकी थी। जब पहुचा तो पता चला कि दस मिनट बाद विभाग की एक मीटिंग होनेवाली है। मेज पर पडी डाक को बिना देखे मीटिंग म पहुचा। वह भी समाप्त हुई ठीक 12 बजे।

जब प्रयोगशाला मे पहुचा तो पता चला कि लच के बाद प्रोफेसर ने मिलने की इच्छा प्रकट की है। अत मैंने भी विश्वविद्यालय म लच लेने का निश्चय किया। जब मैं प्रोफेसर के पास पहुचा तो वह मेरी प्रतीक्षा कर रहे थे।

उनकी बातो स पता चला कि प्रोफेसर के मित्र डॉ० जईद, जो काहिरा (मिस्र) म प्रोफेसर थे, के एक परिचित मित्र डॉ० नगीब, जो विख्यात इजिप्टिऑलोजिस्ट है, हाइडलबर्ग विश्वविद्यालय मे कुछ सस्कृत पांडुलिपियो का लेकर एक-दो दिन के भीतर काहिरा म आ रहे हैं। उन्ह डॉ० नगीब के इन काय के लिए सस्कृत के प्रकाड विद्वान् डॉ० अहिताग्नि, जो मेरे परिचित थे और दक्षिण एशिया सस्थान हाइडिल्बर्ग विश्वविद्यालय मे कायरत थे, का इन पांडुलिपियो के अनुवाद मे सहयोग चाहिए।

इस तरह अनावश्यक कार्यों स प्रारभ होकर वह दिन भी बीत गया। शाम को जब मैं एपार्टमट पहुचा तो फोन से डॉ० अहिताग्नि ने बात की, वह प्रसन्नता स सहयोग देन क लिए तयार थे।

करीब तीन दिन बाद प्रोफेसर ने फोन किया और बोले, शाम को 9 बजे भोजन पर आ जाओ।'

मैंने उन्हें बताया मैं बड़ी प्रसन्नता से आपका निमंत्रण स्वीकार करता हूं, पर यह जानना चाहता हूं कि क्या यह कोई विशिष्ट आयोजन है?"

इस पर प्रोफेसर बोले, 'हां, एक तरह से विशिष्ट ही समझो क्योंकि डॉ० नगीब शाम को यहां आएंगे।"

मैं उनका निमंत्रण सहर्ष स्वीकार करके बचे कामों को निबटाने में लग गया।

मैं ठीक समय से जब प्रोफेसर के घर गया तो पता चला कि वह अपनी प्रिय शेरी[1] की चुस्कियां लेते हुए अतिथियों के आने की प्रतीक्षा कर रहे थे। मेरे आने के थोड़ी ही देर बाद डॉ० नगीब भी आ गए। फिर प्रोफेसर ने 'राइनगाऊ'[2] की 10 वर्ष पुरानी वाइन खोली। हम लोग मद्य चषक लेकर बैठ गए। प्रोफेसर और डॉ० नगीब एक सोफे पर तथा मैं ठीक उन दोनों के सामने।

डा० नगीब ने वाइन की सराहना की और मेरा परिचय जानकर प्रसन्नता से मिले, वह भी 'नमस्ते' बोलकर। मैंने भी उनके अभिवादन का उत्तर दिया। थोड़ी देर तक मौन रहा। उसके बाद प्रोफेसर ने पूछा, "डा० नगीब हम लोगों को अपनी पांडुलिपियों के विषय में बताएं।"

डॉ० नगीब कुछ रुककर अपने चश्मे को पोंछकर कहने लगे, "आप तो शायद जानते हो कि मैं इजिप्टिआलोजी का विद्यार्थी हूं। इन अध्ययनों के दौरान मुझे सिक्कारा पिरामिड से प्राप्त सोने की एक अद्भुत चिड़िया[3] देखने का मौका मिला। यह चिड़िया अजीब है। यह करीब 7.9" चौड़ी और 9.2" लंबी है। इसकी चोंच की लंबाई 2.3" है। इसकी पूंछ ऊपर उठी है और पंख थोड़ा नीचे झुके हैं। पर यह मुझे चिड़िया कम वायुयान या विमान अधिक लगी। मेरी इस धारणा को कई उड्डयन विशेषज्ञों का समर्थन मिला। मेरी राय है कि यह आधुनिक विमान कानकार्ड[4] का प्रतिरूप है। इसकी भी नाक कोन्कार्ड की भांति मुड़ी हुई है, पंख थोड़े झुके हैं तथा शारीरिक संरचना भी इस सुपरसानिक जेट कोंकार्ड की तरह ही है। यह चिड़िया भी

2 2 अथवा 3 1 के अनुपात म बनाई गई है। इस तथ्य पर अब अमेरिकन वैज्ञानिक भी सहमत हैं कि यह वास्तव मे प्राचीन मिस्र म प्रयाग किए जानेवाले विमान का प्रतिरूप है। कारण यह है कि इतना वज्ञानिक मॉडल तब तक नही बन सकता जब तक कि इसका प्रतिरूप प्रयोग म न आता रहा हो। यह धारणा अन्य तथ्यो स भी सही लगती है।" इतना बनाकर डॉ० नगीब रुके और साथ लाए लिफाफे म से एक चित्र निकाला और प्रोफेसर का देकर कहने लगे, "इसे देखिए, यह क्या लगता है ?"

प्रोफेसर ने चित्र का बडे ध्यान से देखा। वह बोले कुछ नही। उन्हान उसे मेरी ओर बढा दिया। जो फोटो मेरे हाथ मे था वह एक विशेष कोण मे देखन पर हवाई जहाज जरूर लगता था। अत मैंने डॉ० नगीब को फोटो वापस देते हुए कहा, लगता तो यह एक हवाई जहाज है। या यो कहिए कि एक जेट प्लेन लगता है। पर जब तक आप स्पष्ट न करें हम लोग कुछ कह नही सकते।"

मेरी बात सुनकर डॉ० नगीब बताने लगे, "वास्तव मे यह उसी प्लेन का चित्र है जो मिस्र के सिक्कारा पिरामिड मे मिला था। अब देखिए इसे," कहकर डॉ० नगीब ने फोटो मेरी ओर बढा दिया। यह दूसरा फोटो भी हवाई जहाज सा लगता था। पर सिक्कारावाले प्लेन से थोडा भिन्न था। अत उस प्रोफेसर का देते हुए मैंने डॉ० नगीब से पूछा, "यह क्या है ?"

डॉ० नगीब इस बार मुसकराए और बताने लगे, "यह कोलम्बिया (दक्षिण अमेरिका) से प्राप्त एक सोने के पेंडेंट का चित्र है—चूकि कोलबिया की सरकार इसे 'जूओफेरिका' कहती है, अत हम इसे इसी नाम से सबोधित करेंगे।

"वास्तव मे यह इकाइडियन[5] के द्वारा निर्मित करीब 2 हजार वष पुराने वायुयान का मॉडल है। इसके विषय मे अमरिका के विमान निर्माता वैज्ञानिकों का कहना है कि यह आधुनिक जेट का प्रतिरूप है और सबसे विचित्र बात यह है कि उस समय यह जेट किस ईंधन से चलता था ? यह जेट फ्यूल क्या हो सकता था, कल्पना का विषय है। पर यदि हम यह मान लें कि वह पेट्रोल था तो निश्चय ही इन प्राचीन इका लोगो का उसका पता था और निश्चय ही उन्हें पेट्रोल के शोधन की कला आती थी।"

उनकी बात सुनकर अभी तक शांत बैठे प्रोफेसर भी कहने लगे, "बात आपकी तथ्यपूर्ण और चकित करनेवाली है। क्योंकि यदि पट्रोल शोधन की कला वे लोग जानते थे तो वे निश्चय ही रसायनशास्त्र से भी पूर्ण परिचित रहे होंगे।"

"इसमें शक नहीं है," कहकर डा० नगीव ने पुनः अपनी वाइन ली। ऐसा लगा कि वह प्रोफेसर की अगली बात का इंतजार कर रहे थे पर जब वह कुछ नहीं बोले तो डॉ० नगीव ने मेरी ओर देखकर कहना प्रारंभ किया, "इस प्रकार के प्लेन या मिनी[6] प्लेन शिकागो (अमेरिका) के फील्ड म्यूजियम आफ नेचुरल हिस्ट्री में रखे हैं। करीब-करीब सभी वैज्ञानिक अब बिना संशय के यह मानते हैं कि ये उस युग में प्रयोग हो रहे वायुयानों के मॉडल हैं।

'पर मेरी समस्या यह नहीं है। मेरी समस्या तो उन पांडुलिपियों की है जो अरबी में लिखी गई हैं, पर उनका मूल संस्कृत में है। या यों कहूं कि इन पांडुलिपियों में संस्कृत श्लोक अरबी लिपि में लिखे हैं तो गलत न होगा। एक पांडुलिपि का नाम है 'समरांगण सूत्रधार' तथा दूसरी है 'वैमानिकशास्त्रम्'। इनके कथ्य को मैंने अंग्रेजी में लिखा है और मुझे आपके मित्र डॉ० अहिताग्नि की सहायता की आवश्यकता है। मुझे लगता है कि संस्कृत भाषा पर अरबी लिपि में लिखे हुए ये श्लोक डॉ० अहिताग्नि बड़ी आसानी से समझ लेंगे। मेरे लिए यह सब उच्चारण करने में बहुत ही कठिन है।

मैंने कहा "डॉ० नगीव, मैंने डा० अहिताग्नि से बात कर ली है। वह आपकी पूरी सहायता करेंगे, चिंता न करें।"

इस पर डॉ० नगीव ने धन्यवाद दिया और हम लोग प्रोफेसर के साथ भोजन करने में लग गए। वाइन के साथ स्टफ्ड टर्की बड़ी स्वादिष्ट लग रही थी। भोजन समाप्त कर हम लोगों ने कॉफी पी और प्रोफेसर को धन्यवाद देकर विदा ली। मैंने डॉ० नगीव को अपनी कार से विश्वविद्यालय के अतिथि भवन में पहुंचाया। जब मैं एपार्टमेंट पहुंचा तो रात्रि के 11 बज चुके थे।

दूसरे दिन डॉ० नगीव करीब 10 बजे प्रयोगशाला में आ गए और

हम लोग पैदल टहलते हुए सुड आजियन इस्टीट्यूट चले गए। परिचय के बाद डॉ० अहिताग्नि ने डॉ० नगीब से कहा, "मैं आपकी पूरी सहायता करूंगा। जब भी आपकी इच्छा हो, कृपया मुझसे सपर्क करने म सकोच न करें।"

"अरे नही, मैं आवश्यकता पडने पर ही सपर्क करूंगा। इसके लिए आप आश्वस्त रहे" कहकर डॉ० नगीब हस पडे।

उन लोगो से विदा लेकर मैं पुन अपनी प्रयोगशाला म आ गया।

करीब दस दिन बाद डॉ० नगीब का फोन आया कि उनका सारा काय डॉ० अहिताग्नि ने सपन्न कर दिया है। मैंने उनसे कहा, "आप कल मेरे यहा भोजन करेंगे। मैं आपके साथ डॉ० अहिताग्नि को भी बुलाऊगा। तब आपके अनुवाद और उसमे छिपे ज्ञान के विषय म जानना चाहूगा।"

"मुझे प्रसन्नता होगी आपसे मिलकर। मैं कल 8 बजे रात्रि मे आऊगा," कहकर डॉ० नगीब ने फोन रख दिया।

मैंने लोगो को निमन्त्रित तो कर लिया था, पर पाक कला म शून्य होने के कारण अपने मित्र डॉ० सिद्दीकी को फोन किया और उन्हे पूरी बात बताई। उन्होने यह जिम्मेदारी अपनी पत्नी को सौंपी कि वह मेरे अतिथियो के लिए शुद्ध शाकाहारी भोजन बनाकर मेरे यहा पहुचा देंगी। लगे हाथ मैंने डॉ० सिद्दीकी और उनकी श्रीमतीजी को भी निमन्त्रित कर दिया। डॉ० सिद्दीकी गणितज्ञ थे और मेरे अच्छे मित्रो मे से थे।

दूसरे दिन सभी निश्चित समय पर आ गए। मैंने डॉ० अहिताग्नि के लिए सतरे का रस और बाकी लोगो के लिए वाइन की कई बोतलें मगा रखी थी। मुझे यह भी पता था कि डॉ० नगीब को वाइन मेरी ही तरह प्रिय थी।

मैंने डॉ० सिद्दीकी एव उनकी पत्नी का परिचय डॉ० नगीब से कराया तो डॉ० नगीब कह उठे 'वाह, क्या इत्तेफाक है। एक गणितज्ञ के साथ विमान के विषय म बातें करने म आनद आएगा।"

इस पर डॉ० सिद्दीकी बोले, "यह मेरे लिए प्रसन्नता का विषय होगा। पर मैं ऐयरोडायनमिक्स और वैमानिकी के विषय में विशेष ज्ञान

नहीं रखता।"

मेरे पूछने पर कि पकौड़ी कैसी है, डॉ० नगीव कहने लगे, 'बहुत अच्छी है, पर लगता है इसमें अंडा मिला है।"

मैंने कहा, "कैसे ?" तो बोले, 'इतनी लज्जत बिना अंडे के नहीं आ सकती।"

इस पर डॉ० अहिताग्नि ने बताया, "ये पकौड़िया बिना अंडे के बनी है, खूब प्याज डालकर, बेसन का फेंटकर, और इसका श्रेय श्रीमती सिद्दीकी को है, क्योंकि सारा शाकाहारी भोजन बनाना उनके ही परिश्रम का परिणाम है।"

चकित से डा० नगीव ने श्रीमती सिद्दीकी की पकौड़िया की प्रशंसा की और बोले, "आज मैं जीवन में पहली बार शाकाहारी भोजन करूंगा।'

इस पर श्रीमती सिद्दीकी ने कहा, डॉ० नगीव, एक घंटे बाद ही भोजन मिल पाएगा आपको अभी तो मैं कुछ अन्य व्यंजना का बनाने में लगी हूं।"

'मैं प्रतीक्षा करता हूं," डॉ० नगीव बोले।

जब मैंने डॉ० नगीव को याद दिलाया कि वे लोग आपसे विमान के विषय में हुए अनुवाद जो डा० अहिताग्नि ने आपको दिया है जानना चाहते थे तो डॉ० नगीव ने डा० अहिताग्नि को धन्यवाद देते हुए बताया, 'जिस पाडुलिपि का अनुवाद हुआ है उसका नाम संस्कृत में 'यंत्र-रहस्यम' है और यही नाम अरबी में भी लिखा है। इस ज्ञान को प्रारंभ में महर्षि भारद्वाज ने बताया था। इसके अनुसार इस वैज्ञानिक ज्ञान को जानने के बाद ही मनुष्य विमानों को उड़ा सकता है। सफल चालक वही होता है जो इन रहस्यों को पूर्णरूपेण आत्मसात कर ले। ये कई रहस्य हैं और कुछ तो इतने आधुनिक हैं कि इनको पढ़कर लगता है कि हम लोग आधुनिक युग की बात कर रहे हैं न कि प्राचीन काल के विमान बनाने और उनकी विभिन्न तकनीकों को जानने की।

मैं आपको डॉ० अहिताग्नि द्वारा अनुवाद किया गया तीसरा रहस्य बताना चाहता हूं। इसे 'कृतक रहस्य' कहा गया है। इसमें पूरी तरह से

धातु-विज्ञान और कौन-सी धातुएं विमान में लगानी चाहिए, इसका वर्णन है। इसी प्रकार 9वां रहस्य 'परोक्ष रहस्य' कहा जाता है। इसको प्रयोग करने से रोहणी विद्युत के फैलन के कारण विमान के सामने आनेवाली वस्तुओं को देखा जा सकता है। 25वें रहस्य का नाम 'पर शब्द ग्राह्य रहस्य' है। इसके द्वारा दूसरे विमान पर हुई बातों को सुना जा सकता है तथा 26वें रहस्य 'रूपाकर्षणरहस्यम्' के अनुसार दूरस्थ विमान पर स्थित सारी वस्तुएं और व्यक्ति इस यन्त्र द्वारा देखे जा सकते हैं। इसी प्रकार विशेष अन्य रहस्यों द्वारा दूसरे विमान को मारकर गिराने की, उसे रोक देने आदि की कलाओं का वर्णन है।"

इतना बताकर जब डॉ० नगीव रुके तो डॉ० अहिताग्नि कहने लगे, "डा० नगीव, यह तो उन तथ्यों का संक्षिप्त वर्णन है जिनका उपयोग प्राचीन काल में विमानों की उड़ान के लिए किया जाता था। एक बात स्पष्ट है कि जो विद्या इस पाण्डुलिपि में वर्णित है आज से 200 वर्ष पहले कोई इसे समझने का प्रयास भी न करता। पर आज हम 'पर शब्द ग्राह्य रहस्य' का नाम लेते हैं तो क्या टेलीफोन और 'रूपाकर्षण रहस्य', टेलीविजन या राडार के पर्दे के अस्तित्व और उपयोग की ओर इशारा नहीं करते? आज हम बातों को हंसकर नहीं उड़ा सकते, क्योंकि यदि भारत से अरबी लिपि में लिखी, संस्कृत भाषा की 'यन्त्र रहस्यम' उपलब्ध है तो कालंबिया और मिस्र से प्राप्त विमानों के मॉडल भी उपलब्ध हैं। वे बताते हैं कि वैमानिकी कोई नई विद्या नहीं है। हाल में ही एक यूनानी वैज्ञानिक ने एक पैडिल प्लेन बनाया है जिसे उसने ऐजियन सागर के ऊपर तीन घंटे से अधिक समय पैडिल चलाकर, बिना पट्रोल के उड़ाया है। यह देखकर अब ऐसा लगता है कि हम लोग जिस दिशा में अब प्रगति कर रहे हैं हो सकता है वह हमारे पूर्वजों के ज्ञान की तुलना में अधिक परिष्कृत हो पर यह तो निश्चितरूपेण एक सर्वमान्य तथ्य है कि कोई ज्ञान नया नहीं है। उसका स्वरूप बदल जाता है चाहे वह वैमानिकी हो अथवा परमाणु विज्ञान।"

डॉ० अहिताग्नि ने डॉ० नगीव का समर्थन किया और तभी श्रीमती सिद्दीकी ने भोजन तैयार होने की सूचना दे दी।

1 शेरी एक प्रकार की मीठी शराब।
2 राइनगाऊ पश्चिमी जरमनी म राइन नदी के पास का क्षेत्र जो विशिष्ट अगूरो के लिए विख्यात है। इन अगूरो की शराब विख्यात है।
3 चिडिया यह सोने के बने वायुयान का प्रतिरूप था। इसे प्रारभिक इतिहासकारा तथा वैज्ञानिको ने पक्षी समझा था।
4 काकाड ध्वनि की गति स तेज चलनेवाला विमान सुपरसानिक।
5 इकाइडियन अमरीका के मूल आदिवासियो की एक जाति का नाम।
6 मिनी छोटा स्वरूप।
7 स्टफ्ड-टर्की पूरा भरा, टर्की, जो भाजन के लिए प्रयोग होता है।

पशु-मानव

"वायुयान से अजर बाईजान प्रदेश की राजधानी तबरीज (ईरान) से ब्यूनैसएयरस, अर्जेंटीना (दक्षिण अमेरिका) की यात्रा बिना रुके करीब 18 घटे लेती है, पर आप इसे 20 घटे समझें।" यह कहकर ईरान एयर के कार्यालय मे जिस लडकी से मैं बातें कर रहा था, वह दूसर यात्री को सूचना देने को उन्मुख हुई और मैं भी अपनी सीट से उठकर उस शैली मुतशक्किरम (अनेक धन्यवाद) कहकर बाहर चला आया।

कार से करीब 10 मिनट बाद फैकल्टी आ पहुचा और सीधे विभाग के डीन के कार्यालय म जाकर डॉ० हुसनी के आने की प्रतीक्षा करता रहा। ईरानी परपरा के अनुसार छोटे प्याले म चाय आ गई। तब तक डॉ० हुसैनी क्लास से आ गए। बात उनकी ओर से ही शुरू हुई।

डॉ० हुसैनी ने पूछा "आ गए डॉक्टर ! तो आपका कानफ्रेंस म जान का कार्यक्रम तय हो गया या नही ?"

मैंने उत्तर दिया, "तय है, और यदि मैं परसो यहा से चलू तो 18 घटे बाद मैं ब्यूनेसएयरस पहुचूगा। यात्रा लबी है, पर यदि आप मेरी छुट्टी मजूर कर लें तो मैं कॉनफ्रेंस म भाग ले आऊ।"

डॉ० हुसैनी ने सेक्रेटरी को बुलाया, मेरी छुट्टी, यात्रा की सुविधाए और अन्य आवश्यक व्यवस्था करने का निर्देश दिया और सेक्रेटरी स बोले, "यह सब तथा एयर टिकट शाम चार बजे तक मुझे दे दिया जाए।"

मैंने डॉ० हुसैनी को धन्यवाद दिया और प्रयोगशाला मे आ गया।

मेरा टिकट बुक हो गया। सारी आवश्यक सुविधाओ का प्रबध हो

गया था, मात्र मुझे अपनी स्लाइड्स और पेपर्स तैयार करके चल देना था। तबरीज से तेहरान की यात्रा 1 घंटे की थी और मेहराबाद एयरपोर्ट में मुझे पान० एम० की फ्लाइट लेनी थी, वह भी रात्रि में 12 बजे। अतः समय था। मैंने भी अपने मित्रों से फोन द्वारा संपर्क किया। तेहरान घूमता, उनसे मिलता जब पुनः मेहराबाद अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर आया तो विमान तैयार खड़ा था। यात्रियों के लिए लाउडस्पीकर पर निर्देश दिया जा रहा था। मैं भी तेजी से औपचारिकताएं पूरी करके प्लेन में आ गया। नान स्मोकरवाली सीट थी मेरी। तमाम दुनिया के ऊपर से उड़ते हुए हम लोग जब ब्यूनेसएयरस में हवाई अड्डे पर उतरे तो थकान, अनिद्रा और जेट लग से बुरा हाल था। रिसेप्शनिस्ट उपस्थित थी। उसके साथ सीधे होटल गया जहां पर मेरा आरक्षण था। थकान इतनी कि बिस्तर पर पड़ते ही सो गया।

कानफ्रेंस में जाना, पेपर्स को सुनना, लोगों से मिलना, भोजन और अन्य कार्यक्रम चलते रहे। सबसे ज्यादा आनंद आया—घोड़ों के विभिन्न करतबों को देखने में। अर्जेंटीना अपने घोड़ों और उनके करतबों के लिए यदि विश्वविख्यात है तो उतनी ही ख्याति है उसकी राजधानी ब्यूनसएयरस की। यह दक्षिण अमेरिका का पेरिस कहा जाता है। सारा का सारा अर्जेंटीना श्वेत है। एक प्रकार से यह नस्लवाद की झलक देता है। पर इसकी राजधानी ब्यूनसएयरस तो जरमनी के बर्लिन और परिस का मिश्रण सी लगती है। यहां आने पर जो सबसे आश्चर्यजनक घटना हुई वह थी मार्टीन गोदाय का पता चलना।

मैं कॉनफ्रेंस के दौरान ब्यूनेसएयरस विश्वविद्यालय में अपने जरमन मित्र डा० जुगनश्वाइजर से मिलने गया था। उसी ने गोमाय की बात आने पर बताया था, वह आजकल रिओ डिजनरिओ विश्वविद्यालय, ब्राजील में रेडियो एस्ट्रानामी का प्रोफेसर हो गया है और उससे भेंट करने में तुम्हें पुराना आनंद तो आएगा ही तथा ब्राजील की यात्रा भी हो जाएगी।

मैंने अपने मित्र डॉ० श्वाइजर को इस सूचना के लिए धन्यवाद दिया और पुनः कॉनफ्रेंस में कुछ विशेष कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए चला

आया। मन ही मन निश्चय कर लिया था कि डॉ० गादाय से भेंट करनी है। अत रात्रि मे होटल मे आते ही उन्हे टेलीफोन किया। परम आश्चय कि टेलीफान मिला और उसे उठानेवाले स्वत डॉ० गोदाय थे। करीब 18 वष बाद उनसे बात हुई। वह बडे प्रसन्न थे और मेरे लिए वह रिओ डिजनेरिओ विश्वविद्यालय म कुछ भाषणा का प्रबध भी करने के लिए कह रहे थे।

4 अक्तूबर को जब मैं तबरीज से चला था ता वहा बफ पड रही थी और अर्जेंटीना म उस समय वसत था, पर मुझे ता अपने मित्र डॉ० गोदाय स भेंट करने का उत्साह था। अन्य लागा म वसत की मादकता देखने मे आती थी। सवप्रथम भारत की खाज पर निकले स्पेन-यात्रियो को अर्जेंटीना का तट इसी मास मे देखने का मिला था। तभी तो उन्हाने इसकी राजधानी का नाम ब्यूनेस एयरस—अच्छी जलवायु-वाला स्थान रखा था।

11 अक्तूबर को मैं ब्राजील की एयरलाइस वरिग स रिओ-डिजनेरिओ (जिसे सभी रिओ कहते है) पहुचा। वहा पर अर्जेंटीना की मादक हवा और कुछ ही घटो मे बदल गया भारत के माच का सा मौसम। हवाई अड्डे पर डॉ० गोदाय आए थे। बडे प्रेम स गले लगकर भेंट की और कार से मुझे अपने यहा ले गए। उनका 5 कमरा का मकान ऊची पहाडी पर घने छायादार वृक्षो से घिरा था। चूकि ब्राजील मे बफ नही पडती, इस कारण वहा का मौसम सुहावना था।

मैंने अपना सामान डॉ० गोदाय के अतिथि कक्ष म रखा और स्नान आदि से निवृत्त हुा के बाद जब मैं तैयार हो गया तो डॉ० गोदाय ने दो प्याले कॉफी, कछुए के अडे, ब्रेड, पनीर और करीब 3 किलो का पपीता नाश्ते के लिए तयार कर रखा था। कॉफी पीते समय डॉ० गोदाय ने बताया कि वह आज मुझे अपनी रेडियो एस्ट्रोनॉमी की प्रयोगशाला दिखाने ले चलेंगे, साथ ही रिओ भी दिखाएगे।

इस पर मैंने जब प्रसन्नता प्रकट की तो वह कहने लगे "तुम्हारा भाषण तीन दिना के बाद है। अत इस बीच तुम्हे पूरा मौका है ब्राजील के विषय मे जानने और देखने का।' हम लोग कॉफी पीकर तयार थे।

डॉ० गोदाय की प्रयोगशाला देखकर जब हम लोग उनकी प्रयोग शाला से बाहर आए तब मैंने डा० गोदाय से पूछा, "तुम्हारे एस्ट्रानॉमी की प्रगति के विषय में तो जानकर मैं चकित हूं पर क्या तुम्हारा दूसरा प्रिय विषय, जिस पर तुम नारवे में घंटों मुझसे बातचीत करते थे, के विषय में कुछ और प्रगति की या नहीं ?'

मेरी बात सुनकर डा० गोदाय कहने लगे, "मैंने उस विषय पर भी अन्वेषण किए हैं। सारे परिणामों का, वस्तुओं के चित्रों को एकत्र कर लिया है। वह सब तुम्हें मैं रात्रि में बताऊंगा और सबूत के तौर पर उन फोटोग्राफ्स को भी दिखाऊंगा जो मैंने ब्राजील की विभिन्न इंडियन जन जातियों से, पेरू, बोलीविया, इक्वाडोर, मैक्सिको के इंडियनों से एकत्र किए हैं। यद्यपि इसके लिए मुझे काफी भाग-दौड़ करनी पड़ी थी, पर परिणाम यदि तुम्हें संतुष्ट और चकित कर दें तो मैं अपने परिश्रम को सफल समझूंगा।"

डा० गोदाय को अपनी क्लास में जाना था, इस कारण वह चले गए और मैं भी उनकी प्रयोगशाला से बाहर आकर लंबे, घने छायादार वृक्षों की शोभा निहारता उनकी प्रतीक्षा करता रहा।

करीब दो घंटे बाद डा० गोदाय आए। हम लोग उन्हीं के घर गए, जहां उन्होंने मुझसे भोजन बनाने के लिए कहा। मैंने भेड़ के गोश्त का कबाब बनाया, और फिर हम लोगों ने ब्रेड और सलाद के साथ दोपहर का भोजन किया। डॉ० गोदाय फिर प्रयोगशाला चले गए और मैं सो गया।

मेरी नींद डा० गोदाय की कॉलबेल ने तोड़ी। मैंने दरवाजा खोला तो देखा, डॉ० गोदाय के हाथ में कई वाइन की बोतलें थीं। उन्होंने कहा, 'तुम यदि तैयार हो तो दस मिनट बाद मैं तुम्हारे प्रश्न का उत्तर देने की स्थिति में आ जाऊंगा। जरा कपड़े बदल लूं और स्नान कर लूं।" ब्राजील के मौसम को देखते हुए यह सर्वथा उचित था।

करीब बीस मिनट बाद डॉ० गोदाय आए। हम लोगों ने कॉफी बनाई और उठकर उनके अध्ययन कक्ष में चले गए।

डॉ० गोदाय अपनी कुरसी पर बैठ गए। सिगार निकाला और बातें शुरू कीं। वह कहने लगे, "बाइबिल तो तुमने पढ़ी ही होगी। उसके ओल्ड

टेस्टामेंट मे प्रोफेट इजक्लि बताते हैं कि जब वह चेंबर नदी के किनारे पर थे तो एक दिन उन्हे ऐसा लगा कि आकाश फट गया। उन्होने देखा कि एक धूल का चक्रवात चला और उसमे से चमकती बिजली और निकलती आग सूय के प्रकाश मे भी स्पष्ट दिखाई देती थी। इसके बाद उस उलटे घड़े की शक्ल की वस्तु से चार व्यक्ति, जो मनुष्यो की भाति थे निकले। उनके कपडे विचित्र थे। उनके पर गाय के पैरो की तरह थे। वे चारो पीतल की भाति चमकीले वस्त्रो से ढके थे। उनके सिर के ऊपर शिरस्त्राण (हेलमेट) था। इसके बाद प्रोफेट इजकिल बताते हैं कि वह चारा दिशाओ मे गए, पर इतना ही नही है," कहकर डॉ० गोदाय उठे और एक पुरानी पाडुलिपि की जिरॉक्स कॉपी मेरे हाथ मे देते हुए बोले, "इसे देखो, यह भी वास्तव मे बाइबिल का ही एक भाग है, पर चूकि धर्माचार्यों को रुचा नही, इस कारण बाइबिल मे छापा नही गया। इसे 'बुक-ऑफ-एनोक' कहते हैं। यह पाडुलिपि 1900 ई० मे पश्चिमी जरमनी के टुबिगेन नामक नगर से प्रथम बार प्रकाशित हुई थी। इसके पहले पाच अध्यायो मे यह स्पष्ट लिखा है कि ईश्वर ने स्वग का त्याग कर अपने अनुचरा के साथ धरती पर निवास करने का निश्चय किया और उसके अनुचरा ने मनुष्य कन्याओ से सबध स्थापित कर सतानोत्पत्ति की। इस पर ईश्वर अप्रसन्न हुआ। उसने अपने पाच अनुचरो को पथ्वी पर छोड दिया और पैगबर एनोक को अपने रथ पर बैठाकर बडी तेजी मे चमक, तेज हवा और गडगडाहट के साथ ऊपर उठता चला गया। जाने से पहले एनोक ने अपने पुत्र मैथ्यूलसन को बताया कि ईश्वर ने अपने पाँच अनुचरा को पृथ्वी पर इसलिए छोडा था कि वे पृथ्वीवासियो को विज्ञान और अन्य प्रगतिशील बातो की शिक्षा दे सकें। एनोक ने अपने पुत्र को बताया कि एक देवदूत ने मनुष्यो को स्याही और कागज बनाना तथा लिखना बताया। दूसरे ने मनुष्य-कन्याओ को कामातुर बनाकर पथ-भ्रष्ट किया, तो तीसरे ने अपने अन्य साथियो को मनुष्य-कन्याओ के साथ सभोग के आनद का वणन कर उन्हें इस कार्य के लिए प्रेरित किया था। चौथे देव ने गभवती स्त्रियो को गर्भपात करने की विधि सिखाई और पाचवें ने मानव को विज्ञान की विभिन्न शाखाओं की शिक्षा दी।"

इतना बताकर डॉ० गोदाय ने सिगार की राख झाडी और फिर कहने लगे, "प्रोफेट एनोक जारड के पुत्र थे और जल-प्लावन के पूव उनका ज म हुआ था। उनके पुत्र मैथ्यूलसन ने अपने जीवन के 969वें वप मे पिता की आज्ञा मान करके इन घटनाओ को लिखा था। मैं तुम्हें बताना चाहूगा कि ये सारी घटनाए इजराइल के आसपास के क्षेत्र म हुई थी। अब यदि तुम यह मानो कि इस घटना का मैथ्यूलसन ने लिखा तो जल प्लावन करीब 6,000 वप पूव हुआ था। यदि इसमे हम लोग 2,000 वप का अतराल और जोड दें तो यह घटना जिसका वणन प्रोफट एनाक ने किया है, वह आज से करीब 8,000 वप या इसके पूव हुई होगी।"

डॉ० गोदाय न थाडा दम लिया और फ्रिज म से बढिया वाइन निकाली, पनीर लिया और दो गिलासो मे इस वाइन को डालकर 'सलूतो' कहकर पीना प्रारभ कर दिया। थोडी देर बाद वाइन की गरमी से आए पसीने को पाछकर, सामने की शीशे की खिडकी पूरी खोलने के बाद जब डा० गोदाय पुन आराम से बैठ गए तो कहा, "बाइबिल के ओल्ड टेस्टामट म इजरा (458 ई० पूव) का वणन आता है। उ होंने यहूदियों को बेबीलोन से जेरूशलम लाकर उ ह दासता स मुक्ति दी थी। उनकी पुस्तक जो यहूदी विधि या कानून पर है उसे 'तोरा' कहा जाता है। यह 5 भागा मे है। पर इजरा के दो और ग्रथो को क्रिश्चियन चच ने स्वीकार नही किया। सभवत कारण यही रहा हो कि ये भाग अपनी विलक्षणता के कारण ईसाई धमाचार्यों को ग्राह्य न रहे हो। अत य आल्ड टेस्टामेंट मे नही मिलत हैं, क्योंकि इ ह अलग रखा जाता है।

'इसमें एक विचित्र घटना का वणन है। वह है इजरा की सर्वोच्च से भेंट। उसने इजरा को पुस्तक दिखाई। सर्वोच्च ने इजरा से लिखने के लिए कहा और बताया कि मारे लोगो को इकट्ठा करें। सारा ज्ञान 40 दिन के भीतर लिख लें। साराया, दाब्रीया, ऐलमिया, ईयान और ऐसिल ने 40 दिना के भीतर विभि न ज्ञान के विषया पर 94 पुस्तकें लिखी। सर्वोच्च न ज्ञानी लोगा को ही पढने देने के लिए कहा और यह भी बताया कि वह सर्वोच्च पुन धरती पर अतरिक्ष स आएगा।" यह कहने के बाद डॉ० गोदाय पुन उठे और अपनी शेल्फ मे से एक पतली-सी पुस्तक

निकाली, "अब तुम इस जिरोक्स को देखो। यह आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के प्राचीन मिस्र विभाग के पुस्तकालय मे रखी पाडुलिपि की कॉपी है। इसमे सम्राट सूरिद का वणन है, जिसन जल प्लावन के पूव दा पिरामिड बनवाए थे। उनम उसने सारे नक्षत्रो और उनकी दूरिया के विषय म, ज्यामिति और गणित के विषय मे तथा इनसे सबधित यत्रो को रखन का निर्देश दिया था। इस पिरामिड का निर्माण मिस्रकारा के पास हुआ है और इसका वणन ग्रीम विचारक हिरोदोस और सिसेरो ने किया है। उनके अनुसार इस पिरामिड का पुजारी पिछले 22,400 वर्षो मे इस पैतक परपरा को निभा रहा है। उसकी 341 पीढिया इस सेवा म बीत चुकी हैं। वह पुजारी बताता है कि प्रारभ म देवता मनुष्य के साथ रहते थे पर अब नही रहते। चूकि वे पुन आएगे, अत इस पिरामिड का देवताओ की इच्छानुसार निर्माण हुआ है।"

डॉ० गोदाय के एक क्षण चुप रहने पर मैन कहा, "बात तो बडी विचित्र है पर इसे झुठला पाना भी कठिन है। हम लोगा के लिए तो यह सोच पाना भी कठिन है कि बिना विज्ञान का सहारा लिए जिसम इजीनियरिंग भी शामिल है, यह पिरामिड जिनके एक एक पत्थर कई सौ टन के वजन के हैं, कैसे खिसकाए गए, कैस कैसे लाए गए और कैसे इतनी ऊचाई तक उठाकर जोडे गए। निश्चित है उस समय मिस्रवासिया के पास आज की क्रेना से शक्तिशाली मशीनें रही होगी क्योंकि आज की कोई भी क्रेन 600 टन का भार 200 फट ऊपर नहीं उठा सकती।"

मेरी बात सुनकर डॉ० गोदाय मुसकराए और कहने लगे, "इतना ही नही, आप यह बताइए कि बाइबिल और तत्कालीन ग्रथो मे अतरिक्ष म आए हुए देवताआ ने मानवा को सवविधि ज्ञान दिया। परिणाम था कि मानव ने धरातल पर विकास किया, पर यह वणन सिफ बाइबिल की विरासत नही रहो। इसका वणन हम एशिया, अमेरिका, अफ्रीका, आस्ट्रेलिया तथा अन्य द्वीपा मे मिलता है। अब मैं तुम्ह इस विवरण की पुष्टि के लिए कुछ स्लाइड्स दिखाऊगा जो मैंन विभिन्न सग्रहालया म प्राप्त मूर्तियो ठप्पा, रेखाचित्रा की फोटो खीचकर रख छाडी हैं।

"यह स्लाइड एक अज्ञात पुरुष की है। इसका चेहरा दूर से कीडे

की भाति तो लगता है पर इसकी नाक और सिर पर लगी हेलमेट ध्यान से देखो ? क्या बता रही है यह मूर्ति । यह बगदाद म्यूजियम मे रखी है और 4,000 ई० पूव की है ।

"इस स्लाइड मे मैंने सुमेरिया म मिली प्रतिमा की फोटो ली है । इसमे पुरुष का मुख है, शरीर घोडा है और वह भी पख लगा। इसको देखा, यह स्लाइड 1000 ई० पूव की सिलेंडर सील है जो बेबीलान (सीरिया) की खुदाई मे मिली है, इसमे आदमी और घोडे दोना पख युक्त हैं, उड रहे हैं। इस विषय की एक और स्लाइड है जो सोने के पेंडेंट को दिखाती है। देखो, इस मानव की शक्ल पख-युक्त है, पर इसके सिर पर हेलमेट लगी है, जैसीकि अतरिक्ष यात्री आज पहनते है। यह मूर्ति मिस्र की एक ममी से प्राप्त हुई है।

"मैं तुमको कुछ और स्लाइडें दिखा रहा हू । यह असीरियन राजा असहडान (681 669 ई० पूव) की है। राजा खडा है पर उसके पास एक व्यक्ति उडता हुआ दिखाया गया है। और यह स्लाइड ब्रिटिश म्यूजियम मे रखी एक प्रतिमा की है जो असीरिया-बेबीलान स मिली थी। इसमे देख रहे हो एक मनुष्य अपने सिर पर हेलमट लगाए है पर हाथा की जगह पख हैं तथा बगल मे खडे राजा अशूरबाणीपाल को पख-युक्त दिखाया गया है।

"अब प्रश्न यह है कि असीरियन राजाओ, उनकी मुद्राओ बेबीलोन से खुदाई मे मिली मुद्राओ और मूर्तियो मे हेलमेट क्या लगी है। क्योकि य अधिकाशत उडती हुई पख युक्त दिखाई गई है। प्रश्न यह भी उठता है कि ये सभी तथा मिस्र से प्राप्त प्रतिमाए क्या इस बात की ओर सकेत करती नही प्रतीत होती कि मानव उडता था या उड़ा था या उडाया जाता था ? उसके अतरिक्ष यात्रियो स सबध थे विशषकर बाईबिल और पूववर्ती ग्रथो मे वर्णित तथ्यो (जो कल्पनाए नही हैं) के आधार पर।

"यह देखो, यह स्लाइड है असीरिया के राजा नारामसिन की यह 2300 ई० मे हुआ था। पर यह देख रहा है दो सूर्यों का। एक बडा सूय है जो दूरी पर है तथा दूसरा उससे नीचे है, कुछ गोल है और कम प्रकाशमान है। राजा अपने अनुयायियो के साथ पहाड पर चढकर इस दृश्य को देख

रहा है। मिस्र की ही एक और पारदर्शी देखो। इसमे होरूस, जो मिस्र-वासी था, एक बार अतरिक्ष म उड गया और वापस नही आया। पर उसकी आख धरती की सारी क्रियाओ को देख रही है। इस चित्र मे आख को उठाए मिस्र का पुजारी है पर उसके बगल मे दो राकेट की भाति यत्र क्यो दिखाए गए है ? यह चित्र सम्राट तुतनखामन की समाधि से मिला है।"

डॉ० गोदाय की वाइन समाप्त हो गई थी। वह कुछ देर के लिए रुके। हम दोना भूखे थे। किचन मे जाकर लोबो ग्रिल किया, चिकन रोस्ट किया, दो-दो अडो का आमलेट बनाकर, वाइन के चषक भरकर फिर हम लाग बैठ गए। थोडी देर बाद मैंने डॉ० गोदाय से पूछा, "आपकी इन पारदर्शियो से तो यह लगता है कि मानव को अतरिक्ष-यात्रा का ज्ञान था। तभी तो उसने इस घटना को बार बार दिखाया है। लेकिन यदि हम प्रोफेट एनोक की बात को सही मान लें तो क्या अतरिक्ष-यात्री मानव इजराइल म ही या बेबीलानिया या मिस्र अथवा मध्य एशिया मे ही आते थे, और यदि नही तो इनका विवरण अन्य स्थानो पर भी मिलना चाहिए।"

"बिलकुल सही कह रहे हैं आप," डॉ० गोदाय बोले, "देखिए मैं अब आपको दक्षिण अमेरिका के विभिन्न रेड इडियनो की बातें और उनके चित्र तथा पुस्तको मे वणन दिखाऊगा, जो मेरी धारणा के सबूत हो सकते हैं।"

इतना कहकर डॉ० गोदाय उठे और एक सुदर एलबम ले आए। यह एलबम उनकी अलमारी म बद थी। न्यूजीलैंड के एक भित्ति चित्र म दो एस्ट्रोनाट की भाति वस्त्र पहने मानव दिखाए गए थे। उनमे स हर एक के सिर पर 4 एटीना की भाति एरियल लगे थे। ये दोनो एक पाइप हाथो मे पकडे थे। इन्हे पुरातत्ववेत्ताओं ने देखकर अति प्राचीन आदिवासी कृति कहा है।

'एलबम के प्रथम पृष्ठ पर सहारा से प्राप्त चित्र मे जो टासेली पहाड की गुफा म बने थे, आदिवासिया ने जो चित्र बनाए थे उनके सिर से पैर तक ढके होने मे तो सदेह था ही नहीं, पर जो सबसे विलक्षण बात थी वह थी

उनके सिर पर अंग्रेजी के 'वी' नुमा लाइनें जो गोनाई में जुड़ी थी। स्पष्ट लगता था कि अंतरिक्ष-यात्रियों की पोशाक में एंटीना लगा है। इसी प्रकार के चित्र आस्ट्रेलिया के आदिवासियों के बनाए और वाल कामोनिका इटली में भी प्राप्त हुए हैं। इटलीवाले चित्र में तो उड़ता हुआ मानव हाथ में कुछ लिए हुए है। अब तुम्हीं देखो कि सहारा अफ्रीका में, आस्ट्रेलिया और यूरोप के आदिवासियों ने ये चित्र क्यों बनाए? यदि उनके पूर्वजों ने इस प्रकार की विचित्र घटना देखी नहीं तो उसे सुरक्षित करने की जरूरत उनके वंशजों को क्यों पड़ी?"

मैंने उत्तर दिया, "डॉ० गोदाय, आपके एलबम में सुरक्षित ये चित्र आपके कथन की पुष्टि करते हैं, पर अभी तक अमेरिका ही बचा है जहां से आपने जो सामग्री एकत्र की है इस संदर्भ में वह देखने में नहीं आई।"

डॉ० गोदाय बोले, "मैं आपको अब अमरिका विशेषकर दक्षिणी अमेरिका और मक्सिको से प्राप्त फोटोग्राफ दिखाऊंगा और कथाएं सुनाऊंगा।

"उत्तरी अमेरिका के 'होपी इंडियन' जाति में एक कथा प्रचलित है कि उनके पूर्वज अनंत ब्रह्मांड से अनेकानेक नक्षत्रों पर निवास करने के बाद धरती पर आए। इस जनजाति ने जितने भी भित्ति चित्र बनाए थे, उन सभी में मानव को स्पेस-सूट पहने दिखाया गया है।

"इसी प्रकार कायापो इंडियन जो अमेजन ब्राजील के घने जंगलों में रहते हैं, की मान्यता है कि अनेक पीढ़ी पहले एक बार धरती कांप उठी थी, सारे पहाड़ धूल से ढक गए थे और आसपास के पहाड़ों पर पेड़ वनस्पतियां जलने लगी थीं। उस दिन ग्रामवासी घर छोड़कर भागे थे। पर कुछ दिनों बाद जब वातावरण शांत हुआ तो योद्धा लोग विष बुझे बाणों और अन्य अस्त्रों को लेकर उस भूकंप पैदा करनेवाली वस्तु से निकले और सिर से पांव तक सफेद वस्त्र में ढके मानव की आकृति के समान लोगों से लड़ने गए। पर हम लोगों के योद्धाओं के बाण उनके शरीर पर से इस प्रकार गिर पड़ते थे जैसे शरीर से धूल गिरती है। तब उनमें से एक ने कुछ कहा जिसे हम लोगों के पूर्वज समझ नहीं सके।

"ये भूकंप पैदा करनेवाले लोग हम लोगों के पूर्वजों के गांव में बहुत

पडती हैं जो ऑक्सीजन के लिए होगी। जहा पर एक डब्बे की आकृति दिखाई देती है। यह व्यक्ति अपने दाहिन हाथ मे एक बटन को दबा रहा है। दूसरे हाथ से वह किसी यत्र को घुमा रहा है तथा उसका बाया पैर एक ब्रेक या पैडिल पर रुका है। इसके कपडे विचित्र है। यह पुलओवर पहन है। इसकी पट शरीर पर चिपकी है और कमर पर चौडी पट्टी है जिससे इसका शरीर एक कील मे बधा है। इसके सिर के ऊपर दो बडे चुबक साफ दिखाई देते है तथा इसकी पीठ के पीछे एक एटामिक रिऐक्टर दिखाई देता है जो सभवत इस बात को बताता है कि यान एटॉमिक पावर से चल रहा था। यह चित्र एक समाधि पर बना है। चित्र 14 फुट लबा है और 9 फुट चौडा है तथा यह ब्राजील म पैलेंक्यू नामक स्थान पर मिला है।

"अब तुम बताओ कि इस रॉकेट या स्पस मॉडल मे बैठे आदमी का चित्र इन आदिवासियो ने क्यो बनाया ? उसी तरह के चित्र मय इडियन की पवित्र पुस्तको मे मिलत हैं। क्या कह रहे है य तथ्य ? कुछ कहने की जरूरत है मुझे अब ?" कहकर डॉ० गोदाय रुक, ठडी हुई कॉफी पी और आराम म सिगार सुलगाया और अपन एलबम म स एक दूसरी फोटो मुझे दिखात हुए कहन लगे, 'यह चित्र अमेरिका के चिली नामक देश की वायु-सेना के एक जनरल ने (धरती से ऊपर) प्लेन मे बठकर चिली की पहाडी पर बने दूर से दिखनेवाले चित्रो का लिया है। बस तो य अनेक हैं, जिन्ह पुरातत्त्ववक्ताओ न 'इनका' (लागो की सडक) नाम दिया है।

"पर एक यह चित्र विचित्र है। दखो, यह चित्र एक रोबोट का लगता है। इसके सिर के ऊपर 4 एटीना, दाहिन और बाए कोना की तरफ हाथा म दोनो उगलियो, घुटना पर धन के निशान के जोड तथा बाहो म झूलती एक बदर की आकृति दिखाई पड रही है। यह चित्र 365 फुट ऊची पहाडी पर बना है। प्रश्न फिर वही सामन खडा हो जाता है कि आदिवासी इडियन लोगो न यह आधुनिक रोबोट का चित्र क्या बनाया, इसका अर्थ क्या है ?"

यह चित्र एक रोबोट का-सा दिखाई दता था, पर मेरे पूछने पर यह बनाया क्या गया" डॉ० गोदाय मात्र मुसकराए और एक दूसरे चित्र की ओर सकेत करते हुए कहन लगे, 'यह चित्र एक मिट्टी की प्लेट

का है जिसे मैंने मैक्सिको में राष्ट्रीय म्यूजियम मे फोटोग्राफ किया था। देखा, इस चित्र में केंद्र मे एक इंडियन का टोपी युक्त सिर है और उसके बाहर गोल रेखाओ से घिरे वृत्त के बाहर 4 प्लेटें दिखाई गई है। इनमे स दो के मुख भीतर की ओर हैं और उनमे ब्रुश लगे है तथा दो उलटी तरफ, इंडियन के चेहरे को देखती हैं। उनका ब्रुश भीतर की ओर है। इनके बाहर फिर वृत्त बना है। तुमने तो डाइनमो देखा है, यह प्लेट क्या दिखा रही है? इसका काल 'टोलेक' युग का है जो मैक्सिको के इंडियन उत्कर्ष का युग था।"

इसके पहले कि मैं कुछ कह पाता डॉ० गोदाय अंतिम चित्र की ओर इशारा करते कहने लगे, "इसे देखते हो, है न यह विचित्र! यह वास्तव में सोने की बनी साढे चार इंच की प्रतिमा है 'मिक्ससटेक इंडियंस' के आराध्य मृत्यु देवता की। इसका नाम है 'मिक्टलटेक्यूटली' और यह मूर्ति मैक्सिको के म्यूजियम मे सुरक्षित है। मैं तुम्हारा ध्यान इसके सिर पर लगे सीगनुमा ऐंटीना की ओर खीचना चाहता हू जो दो गोल प्रकाशपुजो को छूते हुए दिखाए गए है। इसके सिर पर हेलमेट कितनी विचित्र है! इसके चौडे सीने पर जो चौकोर गोल डाट युक्त आकृतियां बनी है, क्या वे इंटिग्रेटेड विद्युत सरकिट की याद नही दिलाती? आज हम ऐसे ही सरकिट बनाते हैं कि नहीं? इसको इन इंडियन लोगो ने क्या बनाया?'

मैंने कहा, "यह संभव है कि इसका संबंध मृत्यु से इसलिए हो कि अंतरिक्ष यात्रियो ने कुछ विशेष कारणो से प्राचीन लोगो को मार दिया हो या फिर इसी तरह की कोई घटना जुडी हो।"

डॉ० गोदाय मेरी बात सुनकर चौंक पडे और कहने लगे, "वाह, तो तुम्हारा भी विचार है कि अंतरिक्ष के देवताओ ने प्राचीन मानवो को नष्ट कर दिया था। यही तो मेरी भी धारणा है।"

मैंने डॉ० गोदाय को जब घडी दिखाई तो रात्रि के 2 बज रहे थे, अत यह तय हुआ कि कल शाम को पुन इस कथा के सार-तत्त्वो का विवेचन किया जाएगा।

प्रात काल डॉ० गोदाय विश्वविद्यालय चले गए और मैं भी नाश्ता कर रिओ डिजनेरिओ घूमने निकला। ब्राजील बडा विचित्र देश है और

उसकी सारी विचित्रता रिओ डिजनेरिओ अपने में समेटे दिखता है। यह दक्षिण अमेरिका का मात्र एक ऐसा देश है जो स्पेनिया का उपनिवेश न होकर पुर्तगालियों का उपनिवेश रहा है। अत भाषा पुर्तगाली है और अर्जेंटीना के ठीक विपरीत यहा पर बड़ा विचित्र मिश्रण है लोगों का—कोई भारतीयों सा है, तो कोई शुद्ध नीग्रो, कोई 'इनका' मिश्रित तो कोई जापानी और श्वेत का। कुछ लोगों का रंग तो साब की भांति मिल जाएगा। ब्राज़ील सम्मिश्रण है जातियों का। मैंने 'कोपाकवाना' बीच देखने का निश्चय किया।

टैक्सी लेकर मैं समुद्र के किनारे पहुचा। दूर दूर तक समुद्र और मीलों फैली बालू उस पर लेटे नर-नारी, खेलते बच्चे और समुद्र की उत्ताल तरंगें जो किनार पर टकराकर फेन मे बदल जाती थी, मन को मोह रही थी।

उस दिन हवा तेज थी, अत स्नान करनेवालो की सख्या कम थी पर इससे बीच की मोहकता पर कोई प्रभाव नही पड़ता था। देर तक घूमने की तबीयत थी पर समय का ध्यान रखकर मैंने टैक्सी ड्राइवर का क्राइस्ट रिड्रीमर की प्रतिमा की ओर ले चलने के लिए कहा। यह प्रतिमा एक पहाड़ की चोटी पर है। ऊंचाई करीब 2,000 फुट होगी। वहा पर केबिलकार मे ऊपर जाकर जब मैंने रिओ को देखा तो सचमुच बहुत ही नयनाभिराम दृश्य था। पुर्तगाली लोग जनवरी के मास मे ब्राज़ील आए थे। अत जिस नदी के मुहाने पर प्रथम बार उनका जहाज रुका था उसे जनवरी की नदी (रिओ नदी जनेरिओ जनवरी) कहा और वास्तव में जो शहर बसा वही रिओ-ओ हो गया।

ब्राज़ील प्राकृतिक सपदा का भडार है और मणि माणिक्य का केंद्र है। मैक्सिम नामक गुफा म स्थित दुकानें। यहा पर आप पन्ना, पुखराज, नीलम, हीरे आदि सभी खरीद सकते है। बस पैसा चाहिए।

टैक्सीवाले का विदा देकर जब मैं पुराने रिओ का देखन गया तो मुझे भारत के दर्शन हुए। वही गदी सड़कें, फटे कपड़ो म बच्चे, टूटे मकान। एक क्षण मुझे लगा कि मैं भारत म आ गया, पर जब भाषा का ध्यान आया तो देश-मोह भग हुआ।

घूमता टहलता हुआ जब मैं 6 बजे शाम को डॉ० गोदाय के मकान पर पहुचा तो डॉ० गोदाय मेरी प्रतीक्षा कर रहे थे। मुझे देखते ही कहने लगे, 'घूमे रिओ मे, पर यह क्या, अकेले लौट आए? मैं तो सोचता था कि तुम किसी 'सिमरिता' सुदरी को लेकर आओगे। नीरस विषय से हटकर हम लोग रसमय हो जाते।"

इस पर मैंने कहा, "डॉ० गोदाय, यह भार आप पर है। मैं तो आपका अतिथि हू।"

मेरी बात सुनकर डॉ० गोदाय खिलखिलाकर हस पडे।

मैंने स्नान किया और डॉ० गोदाय ने भोजन का प्रबध अपने हाथ मे लिया। परिणाम था, ठीक 9 बजे हम लोग भोजन करने बैठे। उसी समय मैंने डॉ० गोदाय से पूछा, 'यदि तुम बुरा न मानो तो एक बात पूछू। तुम अब तक एकाकी हो?"

"हा, इसमे बुरा मानने की क्या बात है? मैं एकाकी हू और रहूगा। मेरी बीवी रेडियो एस्ट्रोनामी है और मेरी सतान मेरे छात्र।"

'तुम भी अजीब हो।" मैंने मुस्कराकर कहा।

डॉ० गोदाय ने मछली बढिया बनाई थी। खूब जमकर भोजन किया। कॉफी पी और फिर ठडी वाइन की बोतलें खोलकर हम लोग कल की कथा का तारतम्य जोडने बैठ गए।

डॉ० गोदाय ने अपना प्रिय हवाना सिगार सुलगाया और कहने लगे, "यह तो तुम जानते ही हो कि हमारी 'आकाशगगा' मे करीब दस लाख स्थिर तारे हैं। पर इसके बाद भी करीब बीस इसी प्रकार की गैलेक्सियाया आकाशगगाए है। यह हम लोग जानते हैं। ये सारी आकाश गगाए करीब ▮ मील (6×10^{14} मील) के घेरे मे अतरिक्ष मे फली हैं। पर हमारी इस आकाशगगा के बाद भी करीब 1 खरब 50 अरब आकाशगगाए हैं जो हमारी आकाशगगा से बहुत दूर स्थित है। अतरिक्ष अतरो की इस गणना को सरलता की दृष्टि से प्रकाश वर्षों मे मापा जाता है। (एक प्रकाश वर्ष वह दूरी है जितना प्रकाश एक वर्ष मे चल सकता है।) अब तुम सोचो कि ये ज्योति पिंड, जो अनत-कोटि ब्रह्मांड में दूरी पर स्थित हैं, उत्पन्न कैसे हुए?

"इनकी उत्पत्ति के विषय में अभी तक जो सर्वमान्य धारणा है उसे बिग बैंग (थियरी) धारणा कहते हैं। अनादिकाल में सारा तत्त्व एक परमाणु के पिंड में निहित था और एक प्रक्रिया के फलस्वरूप इसमें विस्फोट हुआ। ये आकाशगंगाएं इसी पिंड के दबाव के फलस्वरूप हुए विघटन का परिणाम हैं। ये आकाशगंगाएं और उनके तारे अब भी नष्ट होते हैं और यह क्रिया यदि एक ज्योति पिंड का जन्म देती है तो दूसरे की शक्ति को ब्रह्मांड में फैलाकर उसे दूसरा स्वरूप दे देती है। यह अनादि काल से चल रही प्रक्रिया ही ज्योतिर्मय पिंडों की और हमारे ग्रह नक्षत्रों एवं पृथ्वी की जननी है।"

सिगार की राख को ऐश-ट्रे में झाड़कर डॉ० गोदाम फिर कहने लगे, "इन अनंत अंतरिक्ष पिंडों में कहीं तो जीव का अस्तित्व है। इसी कारण जब अमेरिका ने 1972 में पाइनियर एफ नामक उपग्रह अंतरिक्ष में छोड़ा था तो उन्होंने एल्यूमीनियम के ऊपर सोने की पत्ती पर हमारा सौरमंडल, उसके ग्रह, ब्रह्मांड में सर्वत्र व्याप्त तत्त्व हाइड्रोजन और अंकों के बाइनरी सिस्टम को एक पुरुष और महिला के साथ चित्रित कर रॉकेट के कैपस्यूल में सुरक्षित रख दिया था, ताकि जब भी कोई प्रज्ञावान सभ्यता रॉकेट के उपग्रह को रोकने पर देखे तो वह जान ले कि यह किस आकाशगंगा के किस सौरमंडल से आया है। हम आज भी इस कल्पना से इनकार नहीं कर सकते कि ब्रह्मांड में हम अकेले बुद्धिमान जीव नहीं हैं। इसका सबूत मिलता है हमें आदि जनजातियों से जुड़ी कथाओं में, उनकी रचनाओं में और चित्रों में।

"अब तुम ही देखो, यह कथा जिसे कि असुर-बाणीपाल ने (जो असीरिया—सीरिया का राजा था, 669 626 ई० पूर्व) अपनी मिट्टी की मुहरों में अमर कर दिया है। ये सारी मुहरें बेबीलोन की खुदाई के समय मिली थीं। इनमें वर्णित है कि ईश्वर अपने साथ अंतरिक्ष में उड़नेवाले ऐटाना से कहते हैं, तुम धरती को देखो, किस तरह से उस पर बने मकान, नदियां, पहाड़, समुद्र अपना स्वरूप बदलकर छोटे होते जा रहे हैं।'

"अंत में ऐटाना ईश्वर के साथ अंतरिक्ष में अदृश्य हो जाता है।

"तमाम कथाओं से यह स्पष्ट होता है कि अति प्राचीन काल में अंतरिक्ष से कुछ लोग धरती पर आए थे। वे किस ग्रह के निवासी थे यह पता नहीं। उनका यान गोल था। उसमें 4 से 6 तक पैर लगे थे जो पूर्णरूपेण स्वचालित थे। इन लोगों ने धरती पर आने के बाद यहां के आदिवासियों से संपर्क करने की कोशिश की। कुछ युद्ध भी हुए होंगे, कुछ आदिवासी मरे भी होंगे। चूंकि अंतरिक्ष-यात्रियों का विज्ञान आदिवासियों के ज्ञान विज्ञान से श्रेष्ठ था, अतः इन लोगों ने हार मान ली। फलस्वरूप कुछ अंतरिक्षवासी धरती पर रहे और कुछ चले गए।

"धरावासी अंतरिक्ष-यात्रियों ने आदि मानवों में से कुछ को छांटा। यह चयन बुद्धिमत्ता की दृष्टि से हुआ होगा। मानव की बुद्धिमान स्त्रियों ने अंतरिक्ष-यात्रियों से समागम कर गर्भधारण किया। फलस्वरूप जो संतानें उत्पन्न हुईं वे अपने पूर्वज मानवों से शरीर और बुद्धि में श्रेष्ठ थीं। इस प्रकार यदि हम मान लें कि अंतरिक्ष-यात्रियों के समागम से जो संतति विकसित हुई वह उन्हीं की भांति बुद्धिमान और दीर्घजीवी थी तो इन आदिवासियों की, बाइबिल की, सीरिया, ईरान, भारत की कथाओं का सार समझा जा सकता है। यह भी संभव है कि मानव की स्त्रियों को किसी और प्रकार से संतानों के लिए प्रेरित किया गया हो। खैर, चाहे जो भी रहा हो, इस क्रिया में 25 से 35 वर्ष तो अवश्य लगे होंगे। इस काल के बाद अंतरिक्ष मानवों ने अपनी संतानों को निर्देश दिया हो कि वे आपस में संबंध स्थापित न करें। यह कहकर कुछ चुने हुए प्रतिनिधि मानवों को (जो अंतरिक्ष-यात्रियों के पुत्र थे) लेकर ये लोग पुनः अंतरिक्ष में चले गए होंगे। साथ ही साथ उन्होंने पुनः आने का आश्वासन भी दिया होगा।

"इसके बाद मानव ने इस कथा को सुरक्षित कर रखा होगा पर उन्होंने आपस में वैवाहिक संबंध स्थापित कर संतानोत्पत्ति की होगी, तो निश्चय ही ये संतानें अपने पूर्वजों की भांति न तो बुद्धिमान ही रही होंगी और न शारीरिक शक्ति ही उतनी रही होगी। आदम और हव्वा की कथा इसको बताते हैं।"

इतना बताने के बाद डॉ० गोदाय ने वाइन की बोतल खोली। हम

लोगो ने अपने चषक भरे, चुसकियां ली और डॉ० गादाय सिगार का कश खीचकर पुन बताने लगे, "तुम्हे टाइम डाइलेशम थ्योरी के विषय मे तो पता ही होगा ?"

"थोडी सी जानकारी है मुझे ।" मैंने कहा।

इस पर डॉ० गोदाय कहने लगे, "अब यदि हम मान लें कि अतरिक्ष-यात्रियो ने अर्ध विकसित मानव को वैज्ञानिक, तकनीकी और अन्य ज्ञान देकर पुन 35 वर्ष बाद आने का वादा किया हो और व अतरिक्ष-यात्रा मे चले गए हो तो टाइम-डाइलेशम थ्योरी के अनुसार अतरिक्ष यात्रियो के 35 वर्ष पृथ्वीवासी मानवो के 3,000 वर्षों के बराबर होंगे।"

'वाह ! किस बात की ओर तुमने ध्यान दिलाया ! मेरे देश के पुराणो म ब्रह्मा का कल्प और मानवो का वर्ष भी तो करीब-करीब यही बात और अतर बताता है।"

"मैं इस तथ्य से परिचित हू । तुम्हारे कुछ पुराणो को मैंने भी पढा है।" डॉ० गोदाय बोले, "हा, तो मैं बता रहा था कि जब वे अतरिक्ष-यात्री पुन अपने पुत्रो के साथ मानवो के 3,000 वर्ष बाद धरती पर आए होंगे तो उस समय मानव की चार पीढिया बीत चुकी होगी। पर ये लोग अपने पूर्वजो की अपेक्षा दुर्बल और अतरविवाह के कारण कम बुद्धिमान रह गए होंगे। यद्यपि धरती पर उनका एकछत्र राज्य था। वे धरा की सपदा का उपभोग कर रहे थे। जो ज्ञान उनके पूर्वजो ने उन्हें दिया था, उसके परिणामस्वरूप उन्होने मिस्र मे पिरामिड, दक्षिण अमेरिका म अनेक मदिर—चाहे वे ब्राजील के पिआयूई नगर के सीटे-सिडाडेस्प और उसके खडहर हो या पेरू के 'इनका रेड इडियस का 'एकसा यी हुआमान' का किला हो अथवा बोलीविया म भाताकुज के पास का पिरामिड, जिस पर इडियन कथाओ के अनुसार ईश्वर ने अपने चमकीले रथो पर चढ यहीं स अतरिक्ष की यात्रा की थी।

'कथाओ के अनुसार, मक्सिको के 'मय' लोगो के 'कियाहुवाको' अथवा 'टीओटी' के खडहर देवताओ की क्रीडास्थली रहे हैं। प्राचीन सुमेरिया, जो आधुनिक काल की सीरिया है, स्थित बबीलोन के बाग और बावेल का स्तभ तथा इजराइल म हाजेम और गुमेरा स्थान

को देखें तो स्पष्ट लगता है कि वे स्थान अंतरिक्ष से आए लोगों के क्रीड़ा-स्थल रहे हैं।

इसी प्रकार दक्षिण अमेरिका में 'मय' जाति के लोगों की राजधानी 'चीचेन इत्जा' जो अनेक विचित्र चिह्नों से युक्त है और ये रहस्यात्मक चिह्न वहां की पहाड़ियों पर फैले हुए हैं, यह स्पष्ट करते हैं कि इनका उपयोग अंतरिक्ष यात्रियों के यान के उतरने के लिए होता था। संभव है कि अंतरिक्ष-यात्रियों से मानवों की न पटी हो और अंतरिक्ष-यात्रियों ने क्रुद्ध होकर उन स्थानों का विनाश कर दिया हो। इसका आभास 'मय' नामक रेड इंडियन लोगों की कथाओं से पता चलता है। इनकी एक विशिष्ट पुस्तक 'पोपल-वहु' में एक स्थान पर वर्णन है कि 400 अंतरिक्ष यात्रियों ने मानवों से युद्ध कर उनका नाश कर दिया और फिर वे प्लीडेस्ट नामक ग्रह पर चले गए। इन स्थानों पर जब रेडियो एक्टिविटी का मापन किया जाता है तो वह सामान्य से अधिक मिलती है। इसका एक और उदाहरण ब्राजील में अति प्राचीन सभ्यता केंद्र (जिसे अब 'सेपट-सीटे' कहा जाता है) में मिलता है।

"संभव है कि किसी विचार वैषम्य के फलस्वरूप अंतरिक्ष यात्री देवताओं ने विशेष प्रकार के यंत्रों से चाहे वे लेसर किरणों के प्रभाव से अथवा जहां-जहां उनके पुत्र वंशज रहे हों, परमाणविक विस्फोट किए हों। आज जहां पर ध्रुव प्रदेश है उसी स्थान पर यदि यह विस्फोट हुआ हो और बर्फ के पिघलने के फलस्वरूप जल प्लावन हो गया हो मानव जाति एक बार पुनः नष्ट हो गई हो और जो लोग बचे चाहे वे मनु रहे हों, या नोहा अथवा नू, किसी प्रकार अपनी जान, पशु और वृक्षों को नौका पर सुरक्षित रखकर बचा पाए हों। पर यह घटना वे भूल न पाए। फल-स्वरूप आज भी उस जल प्लावन और उसके पूर्व के कुछ विवरण पुस्तकों में और टूटे नष्टप्राय खण्डहरों में पाए जाते हैं। यह विनाश कर धरती से वे अंतरिक्ष यात्री फिर चले गए हों, क्योंकि धरा उनके रहने और कार्य करने लायक या उनके अनुचरों के नाश के बाद उनके रहने योग्य न रह गई हो। संभवतः यह जल प्लावन 10 000 वर्ष पूर्व हुआ होगा।"

डॉ० गोदाय की बात समाप्त सी लगी तो मैंने पूछा कि इस बात का

उनके पास कुछ सबूत है कि अतरिक्ष यात्री जब अतिम बार पृथ्वी पर आए तो वह घटना कितन वष पूव हुई होगी ?

इस पर डॉ० गोदाय न गहरी सास खींचत हुए जवाब दिया, "तुम्ह यह जानकर आश्चय होगा कि एक अज्ञात उपग्रह हमार चद्रमा की कक्षा मे पिछले 13,000 वर्षो स घूम रहा है। इस ग्रह के विषय म डा० लूनान न अमेरिका के स्पेस फ्लाइट' जनरल के 1973 के अक म विस्तार स वणन किया है। उनके अनुसार इसम एक पूण विकसित कम्प्यूटर है जो पृथ्वी पर रह रहे मानवो को विज्ञान की समस्त शाखाओ के विषय मे सूचनाए देता था। इसका पता पहली बार वैज्ञानिको का 16 अगस्त, 1929 का लगा था और यह सूचना प्रो० स्ट्रोमर ने विनान की विख्यात पत्रिका 'नचर वाइजेन शाफ्टन' के 19वें अक म 1929 म दी थी। इसके बाद इस तथ्य को अनेक वज्ञानिका ने सही पाया था।'

इस पर मैंन पूछा कि यह उपग्रह कहा से आया ? तो डॉ० गोदाय न बताया, "वैज्ञानिका की यह धारणा है कि यह उपग्रह करीब 103 प्रकाश वप दूर एक ज्योतिग्रह स आया था। यह सभवत एक अतरिक्ष स्टेशन था जिस पर अतरिक्ष से यात्री आत थे, रुकते थे और फिर गतव्य स्थान पर चले जाते थे। हमारी पृथ्वी भी उन्ही एक गतव्य स्थानो म से थी। इस प्रकार यह तथ्य तुम्हारे सामने है। क्या विचार है तुम्हारा ?"

मैंने थोडी देर चुप रहन के बाद उत्तर दिया, "डॉ० गोदाय, तुम्हारी थ्योरी का सबस दमदार तथ्य है मानव की बुद्धि का 'म्यूटेशन' या अतरिक्ष यात्रियो के प्रजनन क फलस्वरूप विकास। चूकि अय जीवधारियो म, जिनम गुरिल्ला, चिपजी और बदर आदि स्तनपायी थ, मानव सर्वाधिक विकसित था। अत अतरिक्ष-यात्री वैज्ञानिको न उसी को शीघ्र बौद्धिक विकास के योग्य समझकर 'म्यूटशन'-ससग किया और फल था कि धरती पर मानव सवश्रेष्ठ हो गया।

'यही कारण है कि मनुष्य, चाहे वह किसी भी समुदाय का हो, सदव कहता है कि वह ईश्वर का रूप है, परमपिता का पुत्र है। तुम्हारी बाइबिल तो यह उदघोष करती है कि मानव को ईश्वर न अपना प्रतिरूप बनाया है।'

इस पर डॉ० गोदाय ने कहा, "हिंदुओ मे यह धारणा कि वे ईश्वर के अश स हैं, 'म्यूटेशन' का स्पष्ट सकेत करती है। इस म्यूटेशन मे भी तो एक व्यक्ति का कुछ अश ही दूसरे मे आता है। इस प्रकार एक प्राचीन सभ्यता करीब दस हजार वप पहले ईश्वर और मानवो के युद्ध के बाद जल प्लावन म समाप्त हुई। इसी क सबूत हैं जो नष्ट होने से वच गए ये विवरण, भित्ति-चित्र, पहाडा पर रेखाकन और विभिन्न मुहरें, जिनके बारे मे मैंने तुम्ह बताया। आज जा हम कर रहे है वह नवीन नही है वरन् उसी प्रक्रिया का मात्र हम दोहरा रहे है जो 'ईश्वर पुत्रो' न जल-प्लावन क पूव प्राप्त कर ली थी। हो सकता है लोग इस बात से आज सहमत न हा पर उनके पास इस मान्यता का क्या उत्तर है कि हर मानव अपने को 'अपने ईश्वर' से जुडा आज भी पाता है और ईश्वर को सदैव आकाश या ब्रह्माड की ही ओर इगित कर बातें करता है। वह आज भी ईश्वर को आकाशवासी समझता है। वास्तव मे हम भारतीय भी अपन का ब्रह्माड के एक कण से भी सूक्ष्म मानते हैं। कदाचित हम पृथ्वी पर बस आकाशवासी परा मानवा के पुत्र ही हो, क्योकि हम आज भी अपने को अतरिक्षचारी दवताओ से जोडत हैं जो आदियुग से ही ज्ञान विज्ञान के स्वामी थे।"



मुद्रक सुभाष प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-32